सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 153, नई दिल्ली, सोमवार 11 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 भारत के शीर्ष शोधकर्ताओं को सम्मानित किया गया

06 स्वतंत्रता के बाद से खेल में देश की उल्लेखनीय यात्रा

08 स्वास्थ्य कार्यकर्ता परीक्षा सर्वाधिक कुपोषित जिला पश्चिम सिंहभूम में

# भारी बारिश और त्यौहार के बीच कैब-ऑटो वालों ने वसूला तीन गुना किराया, सोशल मीडिया पर फूटा लोगों का गुस्सा

दिल्ली-एनसीआर में बारिश और त्योहारों के दौरान कैब और ऑटो चालकों ने मनमाना किराया वसूला जिससे यात्रियों को काफी परेशानी हुई। कैब एग्रीगेटर ऐप पर कैब की उपलब्धता कम थी और किराया तीन गुना तक बढ़ गया। ऑटो चालकों ने भी अधिक किराया वसूला जिससे यात्रियों को आर्थिक बोझ उठाना पड़ा।

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** वर्षा व त्यौहार के बीच कैब और ऑटो वालों ने मनमाना किराया वसूला। कैब एग्रीगेटर कंपनियों के एप में पहले तो कैब की उपलब्धता काफी कम थी दूसरे जो कैब मिल रहे थे उनका किराया आम दिनों के मुकाबले तीन गुना तक अधिक था।

यही स्थिति ऑटो और बाइक सेवा की रही। जिसके चलते बहनों और भाईयों को परेशानी के साथ महंगी यात्रा का बोझ उठाना पड़ा। इसको ऐसे समझा जा सकता है कि मंडी हाउस से लक्ष्मी नगर तक का आम दिनों तक में कैब 100 रुपये लगता था वह शनिवार को वर्षा और उसके बाद शाम तक 300 रुपये हो गए थे।

इसी तरह, बदरपुर, ओखला, आईजीआई एयरपोर्ट के साथ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से दिल्ली के किसी हिस्से का शुल्क था। यहां तक तो गनीमत था, लेकिन कई मामलों में लंबे इंतजार के बाद कैब चालकों द्वारा यात्रा निरस्त कर दी जा रही थी।

एक्स पोस्ट में कई यूजर ने यात्रा निरस्त करने से उनकी निर्धारित ट्रेन छूटने की भी जानकारी दी। ईस्ट आफ कैलाश की प्रियंका को करोलबाग रखी बांधने आना था।

उन्होंने बताया कि लव यू इंतजार तक कप की सेवा नहीं मिली थी साथ में ऑटो वाले जाने से मना कर रहे थे जाने की गुजारिश पर वह तीन से चार गुना तक महंगा भाड़ा मांग रहे थे। आखिरकार उन्हें उसे मांगों को स्वीकार करते हुए जाना पड़ा।

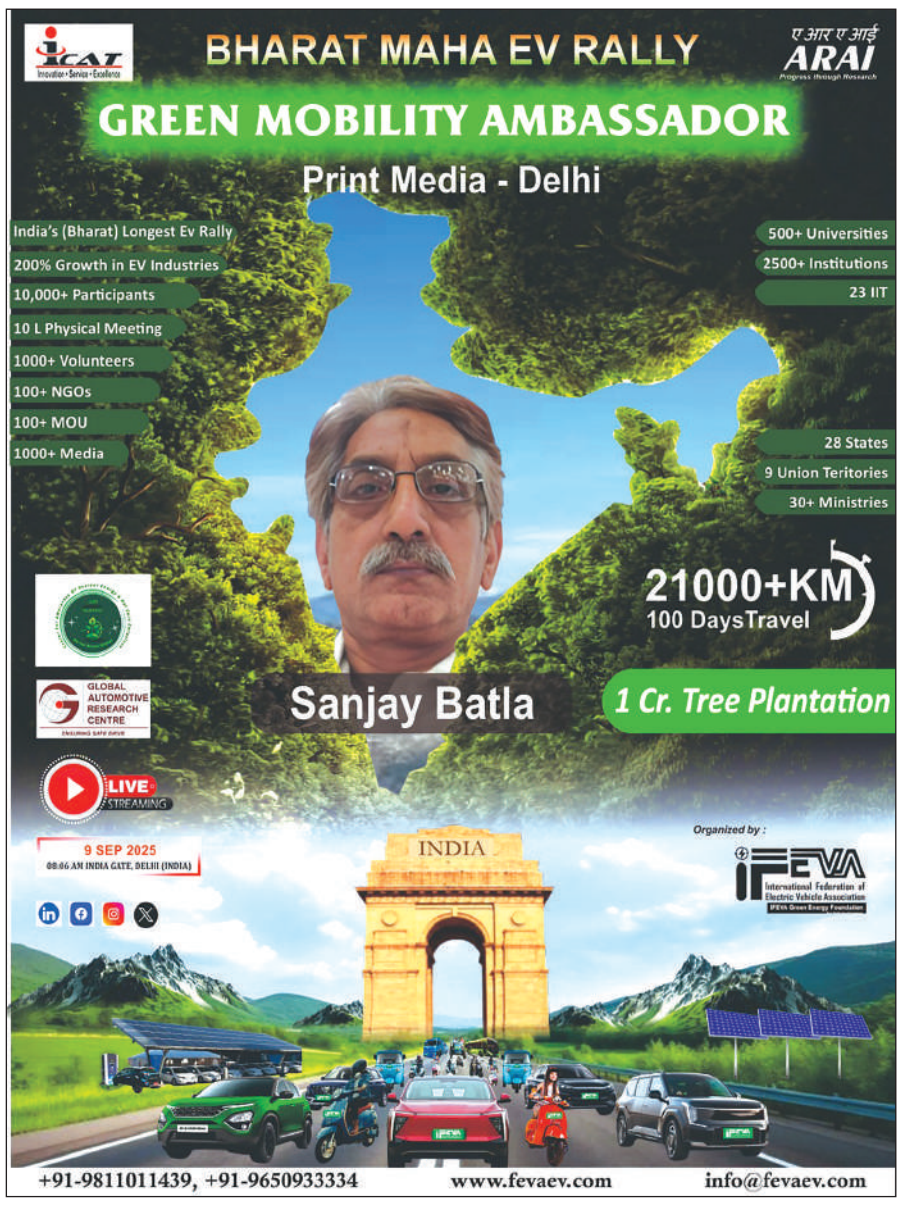


# क्योनझर / सुंदरगढ़ जिले के लौह अयस्क क्षेत्रों में परिवहन व्यवसाय की खस्ताहाल स्थितिः ट्रक मालिकों और चालकों की दुरावस्था पर ध्यानाकर्षण

परिवहन विशेष न्यूज

**क्योनझर, ओडिशा।** क्योनझर/सुंदरगढ़-जिले के प्रमुख लौह अयस्क खनन क्षेत्रों – कोइड़ा, टेनसा, जोड़ा, रुगड़ी और भद्राशाही – में परिवहन व्यवसाय दिन-प्रतिदिन बदतर होता जा रहा है। यहां ट्रक-आधारित लौह अयस्क ढुलाई पर निर्भर हजारों ट्रक मालिक और चालक आर्थिक संकट, स्वास्थ्य जोखिमों और बेरोजगारी से जूझ रहे हैं। वैकल्पिक परिवहन साधनों जैसे स्लरी पाइपलाइन, कॉरपोरेट लोजिस्टिक्स कम्पनीयों के प्रवेश, इक्के दुक्के लोगों का परिवहन ठेकों पर कब्जा और रेलवे परियोजनाओं के बढ़ते उपयोग से स्थानीय ट्रकों की मांग घट रही है,जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो रही है।

ट्रक मालिकों की दुरावस्था का मुख्य कारण खराब सड़कें, संघों के बीच आपसी विवाद, उत्पादन कैपिंग और पिछली सरकार की वसुली आधारित नीतियां हैं। अप्रैल 2025 में ट्रक मालिक संघों ने पाइपलाइन बिछाने के काम को रोक दिया, क्योंकि इससे हजारों ट्रकों की रोजगारी खतरे में पड़ गई है। इसी तरह, मार्च 2024 में रेलवे परियोजना के खिलाफ 24 घंटे का बंद आयोजित किया गया था व अन्य स्थानीय संगठनों ने भी विरोध दर्ज कराया था। सड़कों की अतिजर्जर स्थिति, निजी कॉरपोरेट लोजिस्टिक्स कम्पनीयों के बिना उचित दस्तावेज के परिवहन में लिप्त हजारों ट्रक, माइंस पट्टाधारियों के द्वारा माइंस स्वयं चलाने और परिवहन को रोका जाये (सरकारी राजस्व को सीधे नुकसान का माध्यम एंव आई बी एम गाइडलाइंस के विपरीत) और धूल प्रदूषण से दुर्घटनाएं एंव स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ रही हैं। मार्च अप्रैल 2024 में सरकारी अधिकारीयों की यात्राओं से प्रत्यक्ष रूप से ढुलाई बाधित हुआ व आर्थिक नुकसान हुआ।

ट्रक चालकों की स्थिति और भी दयनीय है। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) ₹उफ्तत्सा₹ ने दिसंबर 2023 में अनिश्चितकालीन राष्ट्रव्यापी हड़ताल का सम्मिलित नेतृत्व किया, जिसमें अन्य राज्यों की तरह क्योनझर/सुंदरगढ़ के खनन क्षेत्रों में ढुलाई लगभग ठप सी हो गई। यह संघर्ष तत्कालीन पुलिस उत्पीड़न, सुविधाओं की कमी और रोजगार असुरक्षा से जुड़े हैं। पुलिस द्वारा वाहन जांच से गाड़ी मालिकों को नुकसान व चालकों को परेशानी हैं, जबकि राजमार्गों पर विश्राम गृह और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं किन्तु ₹उफ्तत्सा₹ राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के शुरुआती पहल से ओड़िशा के कई भागों में सड़क परिवहन मंत्रालय के अधीन ₹एन एच एल एम ₹ द्वारा टेंडर जारी किये

जा चुके हैं जिसके लिए संस्था पहले ही धन्यवाद ज्ञापित कर चुकी है।

"उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी की प्रमुख मांगें निम्नलिखित हैं:

1. ऑनलाइन चालान तत्काल प्रभाव से बंद किये जाने की अनुसंसा हो एंव पुलिस वीभाग को बिना विशेष कारण के वाहन जांच का अधिकार रद्द करना।
2. 60 वर्ष से ऊपर ट्रक मालिकों व चालकों को 25000 पेंशन प्रदान करना।
3. दुर्घटना में मौत पर गाड़ी मालिकों व चालकों को एक करोड़ रुपये का बीमा कवरेज सरकार द्वारा
4. खदानों में 80% नौकरियां स्थानीय चालकों के लिए केंद्रीय मानकों पर आरक्षित करना।
5. राजमार्गों पर प्रत्येक 100 किमी पर विश्राम गृह, शौचालय और मुफ्त पार्किंग सुविधाएं।
6. 1 सितंबर को राष्ट्रीय चालक दिवस घोषित करना।
7. चालकों पर हमलों से सुरक्षा के अप्रत्याशीत कानून।
8. टोल बूथों पर समुचित सुविधा सह 70% दरें कम किया जाये।
9. वित्तीय कम्पनीयों द्वारा एन सी एल टी के तर्ज पर वित्त किस्त बाधित होने पर ऋण मुक्ति का प्रावधान एंव किसी भी स्थिति में बिना अदालती आदेश के गाड़ियां खींचने पर अविलम्ब रोक लगे।
10. सभी निर्माणाधीन टोलवेज पर टोल वसुली बंद हों।
11. मोटर मालिक सरकार की तिजोरियां गाड़ी खरीदने से लेकर सक्रेप होने के पश्चात भी भरते हैं इसलिए सब्सिडी के तहत 4% ब्याज पर वित्त प्रदत्त करें।
12. शीघ्रताशीघ्र ₹परिवहन आयोग₹ का गठन करें।

स्थानीय ट्रक मालिक संघों ने फ्रेट रेट बढ़ाने, पाइपलाइन/रेल, बड़ी कॉरपोरेट लोजिस्टिक्स कम्पनीयों को रोकने और सड़क सुधार की मांग की है। यदि इन मुद्दों का त्वरित निराकरण नहीं हुआ, तो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और लाखों परिवार प्रभावित होंगे।

"उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा, "हमारी मांगें पूर्णतः संवैधानिक व न्यायसंगत हैं। सरकार को ट्रक मालिकों, चालकों और ट्रांसपोर्टरों की दुरावस्था पर ध्यान देना चाहिए, अन्यथा संघर्ष जारी रहेगा।"

सरकार से अपील है कि वैकल्पिक रोजगार, सब्सिडी और सुदृढ़ नीतियां अपनाकर इस संकट का समाधान किया जाए।

**"उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) [डॉ राजकुमार यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष]**

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# औधौगिक शहर जमशेदपुर में अत्याधुनिक बस टर्मिनल निर्माण शीघ्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

**जमशेदपुर।** जिस जमशेदपुर कभी गांव हुआ करता था साकची एवं काली माटी। जहां धालभूम (धोलभूम) राजा से जमीन, मयूरभंज राजा से लौह अयस्क तथा सरायकेला (सढैईकला) राजा से मैनपावर लेने हेतु बातचीत कर 1907 मे टाटा ने एक लोहा गलाने वाली कारखाने की आधारशिला रखी।

कारण यहां हावड़ा नागपुर रेल भी धालभूम, सरायकेला तथा खरसावां राजाओं से जमीन मांगकर रेल पटरी बिछाया था अपने सुगम कार्य निष्पादन हेतु। फिर अंग्रेजों ने नामित किया इलाके को उनके नाम टाटानगर /जमशेदपुर। मयूरभंज की लौह अयस्क से बना लोहा उनको कामी काम आया तो उनके नाम नामित टाटा के निकट परिवहन दृष्टिकोण से सरायकेला, खरसावां को वह मुकाम आज तक नसीब नहीं हो पाया जिसके वे वास्तविक हकदार रहे neहैं।अब उसी जमशेदपुर को आधुनिक परिवहन सुविधा देने की दिशा में राज्य सरकार ने अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के सुगम और आरामदायक परिवहन के

संकल्प के तहत मानगो डिमना चौक के पास 13 एकड़ जमीन पर यह डिपो बनने जा रहा है।

इस विषयक नगर विकास मंत्री सुदिव्य कुमार ने परियोजना को हेम (हाइब्रिड एन्युइटी मोड) पर बनाने की सैद्धांतिक स्वीकृति दे दी है और प्रस्ताव को प्रशासनिक स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। इस बाबत नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार को उच्च गुणवत्ता युक्त आईएसबीटी निर्माण का निर्देश दिया गया है। इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी जुडको को दी गई है। कर्नाटक की आइडेक एजेंसी ने 145.24 करोड रूपये पर परियोजना का खाका तैयार किया है।

टर्मिनल भवन पांच मंजिला (दो बेसमेंट, ग्राउंड प्लस तीन मंजिल) होगा, जबकि वाणिज्यिक भवन एक बेसमेंट, ग्राउंड और तीन मंजिल का होगा। परिसर में 50 आदर्श पार्किंग, 23 एलिगेटिंग बस वे, 300 कार और 350 बाइक पार्किंग, जल संसाधन विभाग का कार्यालय एवं गोदाम, एसटीपी, डब्ल्यूटीपी, ईटीपी और आंतरिक-सड़क व्यवस्था होगी।

फर्स्ट फ्लोर पर 80 सीटों वाला एसी वेटिंग हॉल, 120 बेड का यात्री डोरमेट्री, 60 बेड का चालक डोरमेट्री, फूड कोर्ट, शॉप्स, सुरक्षा कार्यालय, ट्रेवल एडमिन ऑफिस और शौचालय होंगे। ग्राउंड फ्लोर पर 23 बस वे, 18 टिकट काउंटर, क्लॉक रूम, लॉजिस्टिक सेंटर, रेस्टोरेंट, पब्लिक शौचालय और फूड कोर्ट की सुविधा रहेगी। परिसर को झारखंडी कला और पेंटिंग्स से भी सजाया जाएगा।

# कटक रेलवे स्टेशन पर एयर-कॉनकोर्स ग्रिड स्थापित किया जाएगा

मनोरंजन सासमल, वरिष्ठ पत्रकार

**भूबनेश्वर :** कटक रेलवे स्टेशन पर एयर कॉनकोर्स ग्रिड का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही, प्लेटफ़ॉर्म की सतह का ग्रेनाइट फ़्लोरिंग और प्रीकास्ट कोपिंग ब्लॉक्स से नवीनीकरण किया जाएगा। प्लेटफ़ॉर्म शेल्टर, पाइल फ़ाउंडेशन और एयर कॉनकोर्स के लिए स्टील कॉलम और अन्य सुरक्षा संबंधी आधुनिकीकरण कार्य भी किए जाएँगे।इसे देखते हुए, तीन लंबी दूरी की ट्रेनें 11 नवंबर से 21 नवंबर तक 40 दिनों के लिए परिवर्तित मार्गों पर चलेंगी। बारंग-कटक-कपिलास रोड के निर्धारित मार्ग के बजाय, तीन लंबी दूरी की ट्रेनें बारंग-नराज मार्थापुर-कपिलास रोड के रास्ते चलेंगी। कटक स्टेशन पर इन ट्रेनों की बर्थिंग बंद कर दी जाएगी। 11 सितंबर से 21 सितंबर तक नराज मार्थापुर रेलवे स्टेशन पर अस्थायी बर्थिंग प्रदान की जाएगी। कोयंबटूर-सिलचर साप्ताहिक सुपर-फास्ट एक्सप्रेस, एर्नाकुलम-पटना द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस और बेंगलुरु-गुवाहाटी त्रि-साप्ताहिक एक्सप्रेस 11 सितंबर से 21 सितंबर तक कटक रेलवे स्टेशन के बजाय नराज मार्थापुर रेलवे स्टेशन पर रहेंगी।

# रक्षाबंधन के बाद राखी कब और कैसे उतारनी चाहिए राखी ? जानें सही नियम

रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते, प्रेम और भरोसे का प्रतीक है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसकी लंबी उम्र, खुशहाली और सुरक्षा की प्रार्थना करती है, जबकि भाई अपनी बहन की रक्षा का संकल्प लेता है। अक्सर राखी बांधने के बाद यह सवाल मन में आता है कि त्योहार के बाद राखी को कितने समय तक कलाई पर रखना उचित है। क्या इसे तुरंत उतार देना चाहिए या इसके लिए कोई विशेष धार्मिक परंपरा है? आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

**धार्मिक मान्यता**

सनातन परंपरा में किसी भी शुभ वस्तु को तुरंत हटाना अशुभ माना जाता है। राखी को रक्षा सूत्र के रूप में देखा जाता है, जो भाई को नकारात्मक शक्तियों और विपत्तियों से बचाता है। मान्यता है कि इसे पूर्णिमा से लेकर अगले पंद्रह दिनों तक बांधे रखना अत्यंत शुभ होता है। इस अवधि को भाई-बहन के संबंध को और मजबूत बनाने वाला समय माना जाता है।

**जन्माष्टमी तक बांधने की प्रथा**

कुछ मान्यताओं के अनुसार राखी को जन्माष्टमी तक कलाई पर बांधे रखना चाहिए। इस साल रक्षाबंधन 9 अगस्त को और जन्माष्टमी 16 अगस्त को है। इस अवधि में राखी बांधे रखना सौभाग्यशाली माना जाता है। जन्माष्टमी के बाद राखी को उतारकर किसी पवित्र स्थान, जैसे बहते जल में प्रवाहित करना या किसी वृक्ष के नीचे रखना श्रेष्ठ माना जाता है।

**16 दिनों का नियम**

पंचांग और ज्योतिष के अनुसार राखी को 16 दिनों तक बांधे रखना अत्यंत फलदायी होता है। पूर्णिमा से अगले 15 दिन और 16वें दिन राखी को बहते जल में विसर्जित करने से भाई की आयु, सफलता और समृद्धि में वृद्धि होती है।

**दशहरे तक पहनने की परंपरा**

देश के कुछ क्षेत्रों में यह परंपरा भी है कि राखी को दशहरे तक बांधे रखा जाता है। दशहरा अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। माना जाता है कि इस दिन तक कलाई पर बंधी राखी भाई के लिए सुरक्षा कवच का काम करती है और उसे हर प्रकार के संकट से बचाती है।

**राखी उतारने का उचित तरीका**

राखी को कभी भी अनदेखा करके फेंकना उचित नहीं है। यह एक पवित्र धागा है, इसे उतारने के बाद इसे नदी, तालाब आदि में प्रवाहित करना श्रेष्ठ है, क्योंकि मान्यता है कि यह भाई की सभी परेशानियां और नकारात्मक ऊर्जा अपने साथ ले जाती है। यदि जल स्रोत उपलब्ध न हो, तो इसे किसी पेड़ के नीचे या तुलसी के पौधे के पास श्रद्धा से रखा जा सकता है।

# 8 मुखी रुद्राक्ष पहनने के लाभ ? शनि ग्रह के दोष निवारण हेतु

सरकारी नौकरियां कामों और बीमारियों में ब्लड प्रेशर और इसका जल नियमित सेवन रोगों में विशेष लाभदायक हे

यह पहनने वाले को व्यवसाय और लॉटरी से संबंधित अवसरों और स्टॉक एक्सचेंज आदि क्षेत्र में मदद करता है

यह जीवन में अप्रत्याशित हो रही देरी को दूर करने में मदद करता है

।यह विफलताओं और बाधाओं से निपटने में मदद करता है

यह मानसिकता को बदलने में मदद करता है और आपको प्रतिकूलताओं से निपटने में सक्रिय बनाता है ।

यह मूलाधार चक्र को विनियमित करने का काम करता है

यह केतु के ग्रह प्रभाव को दूर करने में मदद करता है

यह काल सर्प दोष के प्रतिकूल प्रभाव को नियंत्रित करता हैयह फेफड़े, लीवर और पेट संबंधी समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है ।

यह पहनने वाले में ज्ञान और जागरूकता बढ़ाता है यह रुद्राक्षधारी को मजबूत बनाता है और उसे जीवन में चुनौतियों का सामना करने और उनसे निपटने में सक्षम बनाता है ।

यह पहनने वाले के जीवन में सफलता लाने में मदद करता हैयह पहनने वाले को ऊर्जावान बनाता है और जीवन से नीरसता को दूर करता है यह व्यक्ति में सकारात्मकता, संतुष्टि और प्रसन्नता का संचार करता है

यह पैर या हड्डी से संबंधित समस्याओं का इलाज करने में मदद करता हैयह पहनने वाले को इच्छा शक्ति और स्थिरता प्रदान करता है

यह मानसिक सुस्ती को दूर करने में मदद करता है

यह पहनने वाले को किसी भी तरह के नकारात्मक गतिविधि से बचाए रखता है। यह धारक से वासना और लालच को दूर करता है।

# साल में केवल एक दिन खुलने वाला मन्दिर

उत्तराखंड राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता और खूबसूरती के लिए दुनिया में मशहूर है इस राज्य को देवभूमि भी कहा जाता है क्योंकि यहां पहाड़ों में साक्षात भगवान के दर्शन होना आम बात है क्योंकि यहां हर पहाड़ पर कोई ना कोई मंदिर आपको जरूर मिल जाएगा और खास बात यह है की हर एक मंदिर की अपनी एक सुंदर ही गाथा होगी जिसे सुनकर या देखकर आपको इस बात का अंदाजा जरूर हो जाएगा की यहां के लोगों की आस्था अपने देवी देवताओं के लिए प्रसिद्ध क्यों है?

उत्तराखंड के पहाड़ों में बसा हर एक मंदिर अपने आप में एक रहस्य को समेटे हुए हैं यूं तो रोज ही हम अपने घरों में और मंदिरों में भगवान की पूजा पाठ करते हैं. मगर क्या आप जानते हैं कि उत्तराखंड राज्य में एक ऐसा मंदिर भी है जहां साल में सिर्फ एक बार पूजा होती है जहां बसे भगवान की पूजा 364 दिन नहीं बल्कि सिर्फ एक दिन की जाती है।

उत्तराखंड के चमोली जिले के उर्गम घाटी से लगभग 12 किलोमीटर की यात्रा तय करके आप पहुंचेंगे एक ऐसे रहस्यमय मंदिर के पास जो साल में सिर्फ एक बार ही खुलता है। मंदिर का नाम है वंसीनारायण मंदिर नाम सुनकर आपको यह प्रतीत हो सकता है कि यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित होगा मगर ऐसा नहीं है बल्कि यहां चतुर्भुज के रूप में विराजमान है भगवान विष्णु और उनके साथ भगवान शिव के लाल गणेश की सुंदर प्रतिमा तथा वन की रक्षा करने वाले वन देवियों की मूर्ति इस मंदिर में स्थापित है।

**कैसे पड़ा वंसीनारायण नाम**

पौराणिक कथाओं के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि वन देवियों शिव व विष्णु की संयुक्त रूप से मूर्तियां स्थापित होने के कारण इस मंदिर का नाम वंसीनारायण पड़ा है। लोक कथाओं के अनुसार यह भी कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध के बाद जब पांडव पश्चाताप कर रहे थे तो उस दौरान वह इस मंदिर को इतना बड़ा बनना चाहते थे कि जहां से बद्री और केदार की एक साथ पूजा की जा सके मगर किसी कारण इस मंदिर का निर्माण सिर्फ रात को ही संपन्न हो सकता था लेकिन यह पूरा नहीं हो पाया आप जब मंदिर के पास जाएंगे तो वहां पर आज भी उस युग में भीम द्वारा लाए गए विशाल शिला खंड यहां देखने को मिलेंगे जो अपने आप में इस बात को बयां करते हैं कि इस मंदिर की आस्था पौराणिक काल से है।

**साल में किस दिन खुलता है मंदिर ?**

भाई बहन के पावन त्यौहार रक्षाबंधन के दिन इस मंदिर के कपाट साल में सिर्फ एक दिन खुलते हैं, इस दिन महिलाओं और कुंवारी लड़कियों का हुजूम वंसीनारायण भगवान के दर्शन के लिए उमड़ पड़ता है हालांकि भगवान की पूजा के लिए कोई लिंग भेद तो नहीं लेकिन ऐसा कहा जाता है की मंदिर के कपाट खुलते ही बड़ी मात्रा में महिलाएं भगवान बंसी नारायण के दर्शन के लिए पहुंचती है और राखी बांधकर उनसे अपने परिवार और अपने घर की सुख शांति की मनोकामना करती है।

**रक्षाबंधनके दिन मंदिर खुलने की क्या है वजह ?**

लोक कथाओं के अनुसार ऐसी मान्यता है कि राजा बलि का अहंकार चूर करने के लिए भगवान विष्णु ने जब वामन अवतार लिया कब तीन पग की जमीन मांग कर भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक भेज दिया लेकिन इसके बदले राजा बलि ने उन्हें अपने साथ वचन में बांध लिया और दिन-रात अपने साथ रहने का वचन भगवान विष्णु के वामन अवतार से लिया।

भगवान विष्णु ने राजा बलि को वचन दिया और पाताल लोक में जाकर उनके द्वारपाल बन गए. इधर अपने पति से दूर होने की वजह से माता लक्ष्मी परेशान हो गई इस समस्या का हल निकालने के लिए उन्होंने नारद मुनि की सहायता ली जिस पर नारद मुनि ने मां लक्ष्मी को बताया कि अगर आप पाताल लोक जाकर राजा बलि को रक्षा सूत्र बांध दें तो भगवान विष्णु वापस आ जाएंगे।

दूसरी और माँ लक्ष्मी को पाताल लोक का रास्ता मालूम नहीं था इसलिए उन्होंने नारद मुनि को साथ चलने के लिए कहा इसके बाद पाताल लोग पहुंच कर मां लक्ष्मी ने राजा बलि को रक्षा सूत्र बांधा। रक्षा सूत्र बांधने के बाद जब राजा बलि ने माँ लक्ष्मी से वचन मांगने को कहा तो उन्होंने वचन के बदले अपने पति की स्वतंत्रता मांगी इसके बाद राजा बलि ने देवी लक्ष्मी के पति को मुक्त कर दिया और इसी दिन वंसीनारायण की पूजा अर्चना मनुष्य द्वारा की गई यही वजह है कि सिर्फ 365 दिनों में से एक दिन रक्षाबंधन वाले दिन ही बंसी नारायण मंदिर के कपाट खुलते हैं।

एक मान्यता यह भी है कि इस मंदिर की पूजा 364 दिन स्वयं नारद मुनि करते हैं उनकी अनुपस्थिति में कलगोठ गांव के पुजारी ने एक दिन भगवान विष्णु की पूजा कर ली इसके बाद ऐसा कहा जाता है कि इसलिए वंशी नारायण मंदिर में हमेशा कलगोठ गांव के जाख ही देवता के पुजारी होते हैं।

**कैसे पहुंचे इस अद्भुत मंदिर तक ?**

वंसीनारायण मंदिर पहुंचने के लिए आपको ऋषिकेश से जोशीमठ की करीब 255 किलोमीटर की दूरी तय करनी होगी, जोशीमठ से 10 किलोमीटर की दूरी पर मौजूद हेलंग घाटी से उर्गम घाटी तक के लिए जीप मिलती है और उर्गम घाटी पहुंचकर आप पैदल ट्रैकिंग करके बंसी नारायण मंदिर पहुंच सकते हैं।

# शिवलिंग के सामने तीन बार ताली बजाने का कारण..

भारत के शिव मंदिरों में आपने अक्सर भक्तों को शिवलिंग के सामने तीन बार ताली बजाते हुए देखा होगा। यह एक सामान्य प्रथा है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इसके पीछे क्या रहस्य है और हर ताली का क्या अर्थ होता है? यह केवल एक रिवाज नहीं, बल्कि इसके पीछे गहरी पौराणिक मान्यताएं, आध्यात्मिक अर्थ और यहां तक कि कुछ वैज्ञानिक तर्क भी छिपे हैं। इस अनूठी परंपरा के पीछे के अर्थ को विस्तार से समझते हैं।

**शिवलिंग के सामने ताली बजाने की प्रथा.....**

शिवलिंग, भगवान शिव का निराकार स्वरूप है, जो सृष्टि के निर्माण, पालन और संहार का प्रतीक है। मंदिरों में भक्त अपनी श्रद्धा और भक्ति व्यक्त करने के लिए विभिन्न प्रकार से पूजा-अर्चना करते हैं। ताली बजाना भी इसी भक्ति प्रदर्शन का एक हिस्सा है, जो भक्तों और भगवान के बीच एक संवाद स्थापित करने का माध्यम माना जाता है।

**तीन तालियों के अर्थ.....**

पौराणिक कथाओं और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, शिवलिंग के सामने तीन बार ताली बजाने के कई गहरे अर्थ हैं.....

**पहली ताली.....**

अपनी उपस्थिति दर्ज कराना (भगवान को जगाना) पहली ताली का अर्थ है भगवान शिव को अपनी उपस्थिति का एहसास कराना। यह एक तरह से भगवान को यह बताने का तरीका है कि ₹हे महादेव, मैं आपकी शरण में आया हूँ।₹ यह ताली भक्त के आगमन और उसकी भक्ति की शुरुआत का प्रतीक है।

**दूसरी ताली.....**

मनोकामना व्यक्त करना और कष्टों का निवारण (अपनी बात कहना) दूसरी ताली का संबंध अपनी मनोकामनाओं, कष्टों और दुखों को भगवान शिव के सामने व्यक्त करने से है। यह ताली बजाकर भक्त महादेव से अपने दुखों को दूर करने और अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने की प्रार्थना करता है। यह एक याचना का भाव है, जहां भक्त अपनी सारी परेशानियां भगवान के चरणों में अर्पित कर देता है।

**तीसरी ताली.....**

पूर्ण समर्पण और आशीर्वाद की याचना (शरण में आना) तीसरी और अंतिम ताली पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। इस ताली के माध्यम से भक्त यह स्वीकार करता है कि वह अब पूरी तरह से भगवान शिव की शरण में है और उनसे आशीर्वाद तथा कृपा बनाए रखने की प्रार्थना करता है। यह दर्शाता है कि भक्त अपने सभी निर्णय, इच्छाएं और जीवन की दिशा शिवजी के हाथ में सौंप रहा है। यह ताली भगवान शिव के साथ गहरे संबंध को दर्शाती है और उनके चरणों में स्थान पाने की प्रार्थना है।

क्या है प्रथा के पीछे पौराणिक संदर्भ.....

इस प्रथा से जुड़ी कुछ पौराणिक कथाएं भी हैं.....

**रावण का उदाहरण.....**

माना जाता है कि लंकापति रावण, जो भगवान शिव के परम भक्त थे, अपनी पूजा के बाद तीन बार ताली बजाते थे। कहते हैं कि भोलेनाथ की कृपा से ही उन्हें लंका का राजपाट प्राप्त हुआ था।

**प्रभु श्रीराम का उदाहरण.....**

रामायण के अनुसार, भगवान श्रीराम ने भी रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना कर पूजा के बाद तीन बार ताली बजाई थी, जिसके बाद उनका रामसेतु निर्माण का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ था।

.वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण.....

धार्मिक मान्यताओं के अलावा, ताली बजाने के कुछ वैज्ञानिक और आध्यात्मिक लाभ भी बताए जाते हैं.....

**ध्वनि और कंपन.....**

ताली बजाने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरंगें वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती हैं। यह कंपन मानसिक शांति प्रदान करता है।

**एकाग्रता और जागृति.....**

पूजा के दौरान कई बार मन भटक सकता है। ताली की आवाज ध्यान को केंद्रित करती है और मानसिक रूप से जागृत करती है।

**एक्यूप्रेशर प्रभाव.....**

हथेलियों में कई एक्यूप्रेशर बिंदु होते हैं। ताली बजाने से इन बिंदुओं पर दबाव पड़ता है, जिससे रक्त संचार सही होता है और शरीर में ऊर्जा का प्रवाह सुचारू होता है, जिससे ताजगी का अनुभव होता है।

# सूर्य का आकार इतना बड़ा, फिर हनुमान जी ने कैसे निगला? — हिन्दू विरोधी पूछ रहे सवाल, जान लीजिए सनातन धर्म-दर्शन में छिपा जवाब

अनुपम कुमार सिंह

हनुमान जी ने निगल लिया था सूर्य, क्या है इस कथा का निहितार्थ? (प्रतीकात्मक चित्र साभार: ChatGPT/OpenAI)

कुछ दिनों से सोशल मीडिया में सूर्य की तस्वीर वायरल की जा रही है और पूछा जा रहा है कि सूर्य का तो आकार फलाँ-फलाँ है तो हनुमान जी ने इसे कैसे निगल लिया? ऐसे प्रपंचियों को समझाना इस लेख का लक्ष्य नहीं, लेकिन कम से कम हिन्दुओं को तो चीजें पता होनी चाहिए। ख़ास बात ये है कि ये फ़ैलाने वाले कोई इस्लामी कट्टरपंथी नहीं हैं, बल्कि कई हिन्दू नाम वाले हैंडल भी हैं। इनका दलित हितों से कोई लेना-देना नहीं, लेकिन ये स्वयं को दलितों का ठेकेदार बताते हैं।

दिमागी स्तर मापने के जो भी मापदंड हों, इनका स्तर शून्य से भी नीचे जाता है। अब समय आ गया है जब हनुमान जी वाली कथा को क्रमवार देखें और समझें कि ऐसा क्या है जो सनातन धर्म पर हमला करने वालों को समझ नहीं आ रहा है। कथा संक्षेप में यूँ है कि हनुमान जी भूखे थे तो उन्होंने उगते हुए सूर्य को फल समझकर उसे निगल लिया। वो धरती से कूदकर सीधे सूर्य के पास गए। इससे दुनिया में अँधेरा हो गया और इंद्र ने उनपर वज्रप्रहार किया। बाद में वायुदेव के रुष्ट होने के बाद सब देवताओं ने उन्हें वरदान दिया।

**हनुमान जी सूर्य को देखकर उसे निगलने के लिए उद्यत होते हैं**

सनातन धर्म में सूर्य केवल ऊपर जो दिखता है वही सूर्य नहीं है। वेदों में सूर्य ब्रह्माण्ड का नेत्र है, जो ब्रह्म के चक्षु हैं उन्हें भी सूर्य ही कहा गया है। हनुमान जी उस समय बालक थे, लेकिन ज्ञानप्राप्ति को लेकर वो इतने व्यग्र थे कि एक ही झटके में सारा ज्ञान पा लेना चाहते थे। कथा कुछ यूँ है कि हनुमान जी ने उदित होते सूर्य को देखा और उसे निगलने के लिए उद्यत हो उठे। अर्थात, उन्हें आत्मज्योति की हल्की झलक दिखाई दी और वो तुरंत ही उसे पूरा पाने के लिए निकल पड़े।

वेदांत में ब्रह्म को 'चक्षुः सूर्य इवोदितः' कहकर संबोधित किया गया है, अर्थात वो ब्रह्म को ज्ञान का स्रोत बताकर कहा गया है कि वो कुछ उस तरह उदित होते हैं जैसे सूर्य। सूर्योदय का दृश्य काफ़ी सुंदर होता है, लेकिन उस सुंदरता और मद्धिम किरणों के पीछे सूर्य भयंकर ज्वाला का स्रोत है। ठीक वैसे ही, ज्ञान का प्रकाश बहुत अच्छा लगता है लेकिन उसे पाने निकलने पर पता चलता है कि ये अथाह है। कोई सीधे ब्रह्मज्ञानी नहीं बन सकता, उसके लिए प्रक्रिया से गुजरनी होती है।

**वायु हनुमान जी की रक्षा करते हैं**

वायु का तात्पर्य यहाँ अदृश्य जीवनरक्षक से है, जो ज्ञानप्राप्ति के लिए यात्रा करने वालों की सुरक्षा करता है। इसके पीछे ये सन्देश है कि अगर आप ज्ञानप्राप्ति के लिए बड़ी से बड़ी कूद भी लगाएँगे, तो इस ब्रह्माण्ड की प्राणवायु आपका साथ देगी। आपकी साँसें सार्थक लक्ष्य के लिए उपयोग में लाई जा रही हैं, इसीलिए वो आपका साथ नहीं छोड़ेंगी। योगी श्री M कहते हैं कि ये श्वास ही है जो आपकी आत्मा और आपके शरीर के बीच की सेतु है, अगर इसपर आपका नियंत्रण है तो आपके मस्तिष्क पर भी आपका नियंत्रण है।

अतः, हनुमान जहाँ भी जाते हैं वायुदेव उनका साथ देते हैं, उनकी रक्षा करते हैं। हनुमान वायुपुत्र भी हैं। यही कारण है कि वो लंका से उड़कर हिमालय पर पहुँच जाते हैं और वहाँ से पूरे पर्वत को उठाकर वापस लौटते हैं। लंका में आग लगाकर भी वो जलते नहीं, 'मरुत उनचास' पूरी लंका जला देते हैं, लेकिन हनुमान जी नहीं जलते। ये वायु संपूर्ण ब्रह्माण्ड में है, पृथ्वी के वातावरण में ये हवा के रूप में है। हनुमान को पवन-पुत्र कहा गया है।

**हनुमान सूर्य के प्रकाश से जलते नहीं**

इसका अर्थ है कि सच्चा ज्ञान कभी भी आपको हानि नहीं पहुँचाता है, ये आपको शुद्ध करता है। हनुमान एक निर्दोष बालक हैं, भले ही वो ज्ञान रूपी प्रकाश के परम स्रोत के पास पहुँच जाते हैं, लेकिन वो जलते नहीं। भगवद्गीता (4.38) में भी श्रीकृष्ण कहते हैं – 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते', दूसरी कोई भी ऐसी चीज नहीं है जो ज्ञान की तरह आपको निर्मल कर सके। हनुमान जी द्वारा सूर्य के समीप जाकर भी न जलने के पीछे का अर्थ यही है कि आप तैयार नहीं हैं फिर भी सत्य या परमज्ञान आपको कोई नुक़सान नहीं पहुँचाएगा।

**राहु सूर्य को निगलने के लिए लपकता है**

कथा कुछ यूँ है कि उसी समय सूर्य को खाने के लिए राहु भी आया था, लेकिन हनुमान के भय से वो भाग जाता है। राहु, यानी – माया, शंका, भय। जब

हनुमान यहाँ पवित्रता और साहस के प्रतीक हैं, तो राहु यहाँ माया है। माया से अध्यात्म के माध्यम से ही निपटा जा सकता है। माया को 'महाठगिनी' भी कहा गया है, जैसे-जैसे ज्ञान की प्राप्ति होती है वैसे-वैसे माया के बादल छँटते चले जाते हैं। हनुमान जी की तरह ही अपने डर का सामना कीजिए, मस्तिष्क में 'सत्व' होगा तब राहु नाम का

**तमस भागता फिरेगा।**

योग वशिष्ठ में श्रीराम को उपदेश देते हुए वशिष्ठ मुनि समस्त संसार को माया बताते हुए कहते हैं कि इसमें जो कुछ भी है सब माया है। राहु उसी माया का प्रतीक है यहाँ। राहु ने ग्रहण लगा दिया, मतलब आपका चित्त आपके वश में नहीं है और ज्ञानप्राप्ति नहीं हो पाएगी। हनुमान जी इससे बच गए।

**इंद्र द्वारा हनुमान को ख़तरा समझकर उनपर वज्र प्रहार करना**

हनुमान जी को भूख लगी, उन्होंने उदित होते सूर्य का सुंदर रूप देखा, उसे निगलने के लिए उड़ लिए, पास पहुँचकर भी जले नहीं, राहु भाग निकला – अब कथा आगे बढ़ती है। इंद्र ने हनुमान जी को ख़तरा मानकर उनपर वज्र प्रहार किया। ज्ञानप्राप्ति के मार्ग में भी सज़ा? इंद्र यहाँ दैवीय कर्म, व्यवस्था और अनुशासन के प्रतीक हैं। ज्ञान तो आपको नहीं जलाएगा, लेकिन दैवीय शक्तियाँ आपकी परीक्षा अवश्य लेंगी। दुःख ज़रूर आएँगे, लेकिन अगर आप सही रास्ते पर हैं तो ये सज़ा नहीं, बल्कि बदलाव की प्रक्रिया का माध्यम बनेंगे।

दुःख कभी-कभी सुधार के लिए ही आते हैं, ये दैवीय सज़ा ही नहीं होते। इसके बाद कथा है कि हनुमान जी को नुक़सान पहुँचता है तो वायुदेव पूरे ब्रह्माण्ड को तड़पता हुआ छोड़कर निकल लेते हैं। इस ब्रह्माण्ड में सबकुछ एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, भौतिकी के नियम भी यही कहते हैं। कई नियम हमें पता नहीं, लेकिन फिर भी वो अस्तित्व में हैं और अपना कार्य कर रहे हैं। न्यूटन से पहले भी गुरुत्वाकर्षण था। अंत में देवताओं को भी झुकना पड़ता है और हनुमान परमज्ञानी बनकर निकलते हैं।

इसके बाद जो रामायण में होता है, वो हम सबको पता है। मान लीजिए, हमें इतिहास की किसी घटना के बारे में जानना है। जो पुरातत्वविद होंगे, वो सीधे उपलब्ध साक्ष्यों का अध्ययन करेंगे। जो इतिहासकार होंगे, वो समकालीन साहित्य देखेंगे। जो छात्र होंगे, वो उन इतिहासकारों को पढ़ेंगे। जो आम लोग होंगे, वो उस घटना पर आधारित उपन्यास पढ़ेंगे। जो बच्चे होंगे, उन्हें चित्रकथा के रूप में वो घटना पढ़ाई जाएगी। जिसका ज्ञान का जो स्तर, कंटेंट उसके लिए उसी रूप में दिमाइज किया जाता है। सनातन धर्म में भी ऐसा ही है।

जिन्हें शंका है, वो हनुमान जी पर लिखे गए इस लेख को पढ़ सकते हैं। श्रीराम ने हनुमान जी की बातों से ही अंदाज़ा लगा लिया कि वो तीनों प्रमुख वेदों के ज्ञाता हैं। जब पहली बार श्रीराम उनसे मिले, उस प्रसंग में हनुमान जी काफी देर तक बोलते हैं। श्रीराम ने पाया कि इसके बावजूद उनके मुँह से एक भी अशुद्धि नहीं निकली। हनुमान जी की भौहें, ललाट, मुख और नेत्र के अलावा सभी अंग उनकी बातों के हिसाब से उनका साथ देते थे। यानी, सभी अंगों में और उनकी बातों में तालमेल दिखता था।

# फिर वे बंगालियों के लिए आए! (आलेख : राजेन्द्र शर्मा)

एक यूट्यूब के खबरिया चैनल के शो में अचानक 'लाकडॉउन' का जिक्र आया, तो झटका-सा लगा।

डर और हताशा में, हमारे शहरों को छोड़कर, अपनी पूरी गृहस्थी समेटकर, जैसे भी हो सके बस गांव-देहात के अपने घरों की ओर पलायन करते मेहनत-मजदूरी करने वालों के ठट्ठ के ठट्ठ आंखों के सामने घूम गए। अब एक बार फिर, वैसी ही मजबूरी में, उतने बड़े न सही, फिर भी लोगों के ठट्ठ के ठट्ठ राजधानी क्षेत्र के शहर गुड़गांव (अब गुरुग्राम) से बंगाल-असम में अपने घरों की ओर भाग रहे हैं। उनके बीच से ही लाकडॉउन के साथ आज के हालात की यह तुलना उभर कर आयी है। मुद्दा यह नहीं है कि हालात की यह तुलना कितनी उपयुक्त है या कितनी अतिरंजित है। मुद्दा यह है कि यह तुलना उस डर और हताशा को दिखाती है, जिससे हजारों की संख्या में मेहनत-मजदूरी करने वाले, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को छोड़कर भागने पर मजबूर हो रहे हैं।

मुख्यधारा के मीडिया के मुंह फेरे रहने के बावजूद, जितनी भी जानकारियां सामने आयी हैं, उनसे तीन बातें एकदम स्पष्ट हैं। पहली, यह कि ये सब के सब बंगाली हैं, बंगाली भाषा बोलने वाले, जिनमें बड़ी संख्या मुसलमानों की है। दूसरी यह कि ये सब के सब मेहनत-मजदूरी के काम कर के रोटी कमाने के लिए, हजारों किलोमीटर का फासला तय कर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पहुंचे लोग हैं। इनमें खासी बड़ी संख्या मध्यवर्गीय तथा उच्च मध्यवर्गीय परिवारों तथा उनकी सोसाइटियों में, घरेलू कामवालियों का काम करने वाली मजदूरिनों और साफ-सफाई के कामों से लेकर हाउस कीपिंग तक के कामों का बोझ संभाल रहे मजदूरों और ड्राइवरी से लेकर चौकीदारी व छोटे-मोटे दफ्तरी काम तक संभालने वाले, निचले पायदान के अस्थायी कर्मचारियों की है। तीसरी यह कि यह पलायन, कथित रूप से बंगलादेशी अवैध प्रवासी होने के शक के नाम पर, सभी बंगालियों तथा खासतौर पर बंगाली मुसलमानों की हरियाणा पुलिस द्वारा की जा रही पकड़-धकड़, मारपीट तथा खासकर पुरुषों को पकड़-पकड़ कर डिटेंशन सेंटरों में बंद किए जाने से फैली दहशत का परिणाम है। ज्यादातर लोगों ने बताया कि आधार, वोटर कार्ड, राशन कार्ड आदि से लेकर, बंगाल के देहात से अपने संबंध के तमाम साक्ष्य अपने पास होने और पुलिस को दिखाने के बावजूद, उन्हें पुलिस के उत्पीड़न के डर से भागना पड़ रहा है। हालांकि, ज्यादातर के लिए यह पलायन एक तरह की तात्कालिक प्रतिक्रिया ही है और कई ने माना भी कि हालात में सुधार आने पर वे लौट आएंगे, क्योंकि पीछे गांव-देहात में, रोजी-रोटी का साधन तो होगा नहीं, जिसकी वजह से ही वे अपने गांव-घर से निकलकर, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आए थे।

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि इस सामूहिक पलायन से, गुड़गांव के मध्यवर्गीय परिवारों में खासे संकट की स्थिति पैदा हो गयी है। घरेलू कामवालियां गायब हैं। सोसाइटियों से लेकर, आम तौर पर उपनगर तक की सफाई की व्यवस्था, अचानक मजदूरों के पलायन से चरमरा गयी है। एक गुड़गांववासी से कहा भी कि गुड़गांव में रहने वाला मध्यवर्ग तो 'अनाथ' हो गया है! इसी का नतीजा है कि आम तौर पर इस तरह के 'बंगलादेशी घुसपैठिया'-विरोधी अभियानों को वैचारिक-नैतिक समर्थन देने वाले, गेटेड कम्युनिटी-वासियों ने भी, 'सेवक-समुदाय' के इस पलायन पर चिंता जतायी है और इसके दबाव में हरियाणा पुलिस ने भी इस मुहिम को कुछ धीमा करने के संकेत दिए हैं। इसी का एक संकेत है कि गुड़गांव में कम्युनिटी सेंटरों आदि में पुलिस द्वारा बंगलादेशी-संदिग्धों को बंद कर के रखने के लिए कायम किए गए चार डिटेंशन सेंटरों में से ज्यादातर खाली ही हो गए हैं। जाहिर है कि इन सेंटरों की यातनाओं से निकले लोग ही, गांव-घर के लिए इस पलायन में सबसे आगे हैं।

कहने की जरूरत नहीं है कि यह सिर्फ गुड़गांव तक ही सीमित मामला नहीं है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्य हिस्सों और खासतौर पर राजधानी दिल्ली में भी, बाकायदा पकड़-धकड़ तथा डिटेंशन सेंटरों के साथ ऐसी ही मुहिम छेड़ी गयी थी। वास्तव में इस मुहिम की शुरूआत, इस साल की शुरूआत में विधानसभाई चुनाव से भी पहले हो गयी थी, जब केंद्रीय गृहमंत्रालय के निर्देश पर, उपराज्यपाल ने और दिल्ली पुलिस ने, बंगलादेशियों की तलाश शुरू की थी।

सभी जानते हैं कि बंगलादेशी घुसपैठ का शोर, दिल्ली में हरेक चुनाव में ही संघ-भाजपा के विभाजनकारी प्रचार का एक मुद्दा बना रहा है। फिर भी, दिल्ली में बंगलादेशी घुसपैठ को उस तरह से चुनाव प्रचार में केंद्रीय मुद्दा नहीं बनाया जा सकता था, जिस तरह खुद प्रधानमंत्री ने झारखंड के विधानसभाई चुनाव में इसे अपने प्रचार का केंद्रीय मुद्दा बनाया था। दिल्ली में भाजपा सरकार बनने के बाद, बेशक कथित बंगलादेशी विरोधी मुहिम को और तेज भी किया गया। बाद में गुड़गांव में पुलिस ने, दिल्ली पुलिस द्वारा कायम किए गए इस मॉडल का ही अनुसरण किया है। फिर भी, गुडगांव में हरियाणा पुलिस ने धर-पकड़ के पैमाने से लेकर, यातनाओं के पैमाने तक के मामले में इस अभियान को और इससे पैदा हुई आम दहशत को कहीं बहुत बढ़ा दिया और प्रवासी बंगाली मजदूरों के पलट-पलायन के जरिए, लॉकडाउन की याद दिला दी।

जाहिर है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के बंगलादेशियों की पहचान संबंधी निर्देश का, अपने-अपने राजनीतिक तकाजों के हिसाब से, अन्य भाजपा-शासित राज्यों में भी परिपालन किया गया है। राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, जहां बंगाली आबादी बहुत थोड़ी ही है, बंगलादेशी घुसपैठ के डर का चूंकि ज्यादा राजनीतिक दोहन नहीं किया जा सकता था, पकड़-धकड़ के बदनामी ही ज्यादा देने वाले इक्का-दुक्का मामलों के बाद ही, जिनमें दिल्ली की ही तरह बंगलादेशी होने के शक में पकड़े गए लोगों के बंगाल का निवासी होने के प्रमाण जल्द ही सामने आ गए थे, यह मुहिम ठंडी पड़ गयी। इसके विपरीत छत्तीसगढ़, ओडिशा, त्रिपुरा और असम में, संघ-भाजपा शासनों के स्थानीय राजनीतिक एजेंडों के साथ जुड़कर, इस मुहिम ने विकराल रूप ले लिया है। मुद्दा यह नहीं है कि मिसाल के तौर पर ओडिशा में बंगलादेशी होने के संदेह में नजरबंद किए गए सैकड़ों लोगों में से अधिकांश बाद में वैध बंगाल निवासी पाए गए हैं और उन्हें पुलिस को छोड़ना ही पड़ा है। मुद्दा यह है कि इन राज्यों में और सबसे बढ़कर असम में, बहुसंख्यकवादी सांप्रदायिकता के पाले में हिंदुओं के बड़े हिस्से को उग्र तरीके से खींचने के लिए, कथित बंगलादेशी-विरोधी मुहिम का इस्तेमाल संभव नजर आता है।

हैरानी की बात नहीं होगी कि इस मुहिम के सांप्रदायिक आशयों का सबसे पहले तो बिहार के चुनाव में और फिर उसके बाद मुख्य रूप से बंगाल और असम के चुनाव में किंतु विपरीत प्रभाव के लिए इस्तेमाल हो। अगर गुड़गांव में इस मुहिम ने लॉकडाउन की याद दिला दी है, तो असम में इसी के सिलसिले में, और पीछे अस्सी के दशक के उग्र 'असम आंदोलन' का याद किया जाना शुरू हो गया है। दूसरी ओर बंगाल में, पिछले विधानसभाई चुनाव की तरह इस बार भी 'बंगाली अस्मिता' की रक्षा की चिंता के, सत्ताधारी पार्टी के लिए ही मददगार होने के अनुमान लगाए जाने लगे हैं। जब तक उसे इस मुद्दे से असम में काफी लाभ की उम्मीद है, संघ-भाजपा जोड़ी को इसी मुद्दे के बंगाल और असम के बीच ऐसे विभाजित राजनीतिक परिणाम से भी ज्यादा शिकायत नहीं होगी। उनके लिए इतना ही काफी होगा कि असम हाथ में बना रहे।

भारत जैसे देश में, जहां आम लोगों के पास नागरिकता का कोई प्रामाणिक साक्ष्य है ही नहीं, संदेह के आधार पर पुलिस को नागरिकता की पहचान करने का और इस क्रम में आधार, मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड जैसे आमतौर पर लोगों के पास पाए जाने वाले पहचान पत्रों को अमान्य करने का अधिकार दे दिया जाता है, तो उसके वही नतीजे होंगे, जो गुड़गांव से बंगाली प्रवासियों के पलायन के रूप में और उससे भी बड़े पैमाने पर मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण या सर में बिहार में, देखने को मिल रहे है। हाशियावर्ती, कमजोर तबकों का बहिष्करण, इसका स्वाभाविक परिणाम है। और चूंकि इस बहिष्करण का संदर्भ राष्ट्रीयता का है, इसके नतीजों की भयानकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इस मुहिम के क्रम में हजारों की संख्या में न सही, फिर भी सैकड़ों की संख्या में तो जरूर कथित बंगलादेशियों को, बंगलादेश द्वारा उन्हें नागरिकता की जांच के बाद स्वीकार किए जाने का इंतजार किए बिना, बंगलादेश की सीमा में जबरन धकेलने की कोशिशें की गयी हैं। ये कोशिशें थल सीमा से ही नहीं, जल सीमा में धकेलने की भी गयी हैं। और भारत की शर्मिंदगी का बाइस बनते हुए, इस तरह बंगलादेश में धकेले गए लोगों में से कई बाद में भारतीय साबित हुए हैं और उन्हें देश में वापस लाना पड़ा है।

फिर भी अगर बंगाली के बंगलादेशी के साथ गड्डमड्ड किए जाने में संघ-भाजपा को कोई दुविधा महसूस नहीं होती है, तो ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं है कि बंगाली ही विशेष रूप से उनके निशाने पर हैं। ऐसा इसलिए है कि एक ओर हाशियावर्ती, कमजोर तबके और दूसरी ओर हिंदी-संस्कृत-इतर सभी भाषायी संस्कृतियां, दबाए जाने के लिए उनके निशाने पर हैं। यह संयोग ही नहीं है कि अभी पिछले ही दिनों वे महाराष्ट्र में प्राइमरी स्कूलों में हिंदी थोपे जाने के विरोध से निपटने के लिए, मराठी को निशाने पर लिए हुए थे। उससे पहले त्रिभाषा फार्मूले के नाम पर ही तमिल, कन्नड़ तथा मलयाली भाषायी संस्कृतियां उनके निशाने पर थीं। उर्दू भाषायी संस्कृति तो खैर हमेशा से ही उनके निशाने पर रही है। उसी के हिस्से के तौर पर कश्मीरी भाषा-संस्कृति निशाने पर रही है और छः वर्ष से तो खासतौर पर निशाने पर है। दो वर्ष से ज्यादा से मणिपुरी भाषा-इथनिक संस्कृति उनके निशाने पर है। अब बाकायदा बंगाली भाषायी संस्कृति का नंबर लग गया है। नाम है राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का और काम है, राष्ट्रीय एकता को खंड-खंड कर के तोड़ने का।

*(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक हैं।)*

# स्वतंत्रता दिवस के दिन गड़बड़ रहेगा मौसम, IMD ने बताया कब-कब होगी बारिश

**दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस पर बादल छाए रहने और हल्की बारिश की संभावना है जिससे समारोहों में बाधा आ सकती है। तापमान सामान्य से कम रहने के आसार हैं। मौसम विभाग के अनुसार पूरे सप्ताह रुक-रुक कर बारिश जारी रहेगी। रविवार को उमस भरी गर्मी रही लेकिन वायु गुणवत्ता संतोषजनक बनी हुई है। स्वतंत्रता दिवस से पहले दिल्ली के सभी तिरंगे बदले जाएंगे।**

**नई दिल्ली।** मौसमी उतार चढ़ाव के बीच स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त, शुक्रवार) को दिल्ली का मौसम थोड़ा गड़बड़ रह सकता है। मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि इस दिन बादल छाए रहेंगे। गर्जन वाले बादल बनने के साथ हल्की वर्षा के दो दौर होने की संभावना है। इसमें एक सुबह से दोपहर के बीच जबकि दूसरा दौर शाम से रात के बीच हो सकता है। इससे आजादी के जश्न व पतंगबाजी में भी थोड़ी दिक्कत हो सकती है।

तापमान सामान्य से कम ही रहने के आसार हैं। अधिकतम 32 और न्यूनतम 23 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। वैसे मौसम विभाग का कहना है कि इस पूरे सप्ताह ही दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में रुक-रुक कर हल्की वर्षा का दौर जारी रहेगा।

इस बीच रविवार को बादलों की लुकाछिपी के बीच दिन भर धूप निकली रही। इसके चलते उमस भरी गर्मी का एहसास भी किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से 0.6 डिग्री कम 33.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। न्यूनतम तापमान सामान्य से 3.2 डिग्री कम 23.8 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं हवा में नमी का स्तर 100 से 67 प्रतिशत रिकार्ड किया गया। दिन भर में वर्षा कहीं नहीं हुई।

मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि सोमवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। गरज वाले बादल बनने और हल्की वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 34 डिग्री और 25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का पूर्वानुमान है।

दूसरी तरफ मौसम की मेहरबानी से दिल्ली की वायु गुणवत्ता लगातार साफ ही चल रही है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक रविवार को दिल्ली का एक्यूआइ 76 दर्ज किया गया। इसे संतोषजनक श्रेणी में रखा जाता है। एनसीआर के शहरों का एक्यूआइ भी कहीं संतोषजनक तो कहीं मध्यम श्रेणी में ही बना हुआ है। हाल फिलहाल इसमें वृद्धि होने की संभावना भी नहीं लग रही।

# धारा 341 पर धार्मिक प्रतिबंध संवैधानिक समानता के खिलाफ

## मोर्चा ने प्रधानमंत्री को सौंपा ज्ञापन, सुप्रीम कोर्ट से जल्द फैसला सुनाने की अपील

**नई दिल्ली:** ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय कार्यालय, दिल्ली में एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसमें मोर्चा के राष्ट्रीय, राज्य और क्षेत्रीय नेताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज़ गुलाम सरवर ने कहा कि 10 अगस्त का दिन हम 'यौम-ए-अनसाफी' (अन्याय दिवस) के रूप में इसलिए मनाते हैं क्योंकि इसी दिन भारत के संविधान की धारा 341 पर धार्मिक प्रतिबंध लगाकर मुसलमानों, विशेष रूप से दलित मुसलमानों के संवैधानिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों पर रोक लगा दी गई थी। उन्होंने कहा कि इस कदम ने भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में सांप्रदायिक राजनीति की नींव रख दी, जिसके नकारात्मक प्रभाव आज भी अल्पसंख्यकों और पिछड़े वर्गों पर साफ़ दिखाई दे रहे हैं। शिक्षा, व्यापार, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में दलित मुसलमानों को लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है, और केवल सुरक्षा के नाम पर उनका शोषण होता रहा है।

हाफिज़ गुलाम सरवर ने बताया कि मोर्चा की ओर से वर्ष 2004 में सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका (PIL संख्या 180/2004) दायर की गई थी ताकि दलित मुसलमानों को संवैधानिक संरक्षण और समान अधिकार मिल सकें। लेकिन अब दो दशक बीत जाने के बावजूद उच्चतम न्यायालय की ओर से कोई अंतिम फैसला सामने नहीं आया है। उन्होंने भारत के मुख्य न्यायाधीश से अपील की कि इस मामले पर जल्द से जल्द फैसला सुनाया जाए ताकि गरीब और वंचित मुसलमानों को उनका संवैधानिक और कानूनी अधिकार मिल सके।

मोर्चा के उपाध्यक्ष अब्दुल हकीम हवारी ने कहा कि संविधान की धारा 341 पर धार्मिक प्रतिबंध ने देश में सांप्रदायिक राजनीति को बढ़ावा दिया है जिससे देश को भारी नुकसान हुआ है। एक ओर जहां बाबरी मस्जिद मुद्दे को राजनेताओं ने एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर अपना लाभ उठाया, वहीं दूसरी ओर दलित मुस्लिम आरक्षण पर चुप्पी साध ली गई। इसलिए हमारा मांग है कि इस पर भी जल्द से जल्द निर्णय सुनाया जाए।

हाजी शरीफ इदरीसी ने इस अवसर पर कहा कि भारत का संविधान सभी नागरिकों को समानता का अधिकार देता है, लेकिन जब धर्म के आधार पर आरक्षण से वंचित किया जाता है, तो यह सीधे तौर पर संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन है। हम सरकार से मांग करते हैं कि दलित मुसलमानों को भी वही अधिकार दिए जाएं जो अन्य पिछड़े वर्गों को प्राप्त हैं। हम केवल मांग नहीं कर रहे, हम संवैधानिक और कानूनी आधार पर अपना अधिकार मांग रहे हैं।

# ब्लैकबक मेडिकल रिसर्च अवार्ड्स 2025 में भारत के शीर्ष शोधकर्ताओं को सम्मानित किया गया

मुख्य संवाददाता

15 राज्यों के 20 शहरों के 44 वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और संस्थानों को स्वास्थ्य सेवा नवाचार और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए मान्यता दी गई




मेडिकल डायलॉग्स द्वारा नेशनल मेडिकल फ़ोरम के सहयोग से आयोजित ब्लैकबक मेडिकल रिसर्च अवार्ड्स 2025 का आयोजन रविवार, 10 अगस्त को होटल द ललित, नई दिल्ली में किया गया। इस प्रतिष्ठित समारोह में 44 शोधकर्ताओं और संस्थानों को उनके मौलिक शोध और नवाचार के माध्यम से भारतीय चिकित्सा विज्ञान में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

दुर्लभ और सुंदर भारतीय मृग के नाम पर, ब्लैकबक पुरस्कार भारतीय चिकित्सा शोधकर्ताओं की दृढ़ता, अनुकूलनशीलता और लचीलेपन का प्रतीक है - जिनमें से कई वित्त पोषण की कमी, नियामक बाधाओं और संस्थागत चुनौतियों के बावजूद सफल होते हैं।

अब अपने दूसरे संस्करण में, इन पुरस्कारों को देश भर से 100 से ज़्यादा उच्च-गुणवत्ता वाले नामांकन प्राप्त हुए हैं। एक स्वतंत्र निर्णायक मंडल द्वारा गहन मूल्यांकन के बाद, पायनियर रिसर्चर अवार्ड, राइजिंग रिसर्चर अवार्ड, स्टेलर रिसर्च रिकॉग्निशन और ट्रेलब्लेज़र अवार्ड्स सहित विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं का चयन किया गया। पुरस्कार विजेताओं में एम्स, पीजीआईएमईआर, आईसीएमआर, अपोलो हॉस्पिटल्स, मेदांता आदि जैसे अग्रणी संस्थानों का प्रतिनिधित्व था।

ये पुरस्कार प्रोफेसर (डॉ.) महेश वर्मा (कुलपति, जीजीएसआईपीयू), डॉ. बी. श्रीनिवास (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक), प्रोफेसर डॉ. अशोक पुराणिक (कार्यकारी निदेशक, एम्स गुवाहाटी), डॉ. अनिल गोयल (कार्यकारी सदस्य, दिल्ली मेडिकल काउंसिल) सहित गणमान्य व्यक्तियों और चिकित्सा नेताओं की सम्मानित उपस्थिति में प्रदान किए गए।

शाम के सत्र में एनबीईएमएस के अध्यक्ष और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अभिजात शेठ ने मुख्य भाषण दिया, उनके साथ हर्ष मल्होत्रा (राज्य मंत्री, कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय), भी मौजूद थे। पुरस्कारों के साथ-साथ मेडिकल रिसर्च समिट 2025 भी आयोजित किया गया, जिसमें नैदानिक परीक्षणों को व्यवहार में लाने, अनुसंधान में एआई का उपयोग करने और चिकित्सा प्रकाशन के परिदृश्य को नया रूप देने पर गतिशील सत्र आयोजित किए गए। वक्ताओं में भारत भर के डीन, विभाग प्रमुख, जर्नल संपादक और अनुसंधान प्रमुख शामिल थे। मेडिकल डायलॉग्स के अध्यक्ष डॉ. प्रेम अग्रवाल ने कहा, "ब्लैकबक अवार्ड्स के साथ, हमने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान को उस सुर्खियों में ला दिया है जिसका वह सही मायने में हकदार है। हमें स्वास्थ्य सेवा के भविष्य को आकार देने वाली स्थापित और उभरती हुई, दोनों तरह की शोध आवाज़ों को सम्मानित करने पर गर्व है।"

# बिना मैदा वाले चोको और उसके साथ एक मज़ेदार "स्कैन एंड विन" प्रोमो और पहली बार निकेलोडियन के शो में पेशकश

मुख्य संवाददाता

टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स का ब्रांड टाटा सोलफुल 'आपके लिए बेहतर' पैकेज्ड फूड स्पेस में सबसे पहले नंबर पर है, उसने बच्चों के स्नैकिंग कैटेगरी में अपना लेटेस्ट इनोवेशन पेश किया, यह है - बिल्कुल नए और बेहतर रागी बाइट्स, बिना मैदा वाले चोको। अब मौजूद है ज़्यादा चॉकलेटी, क्रंची और बिना पाम ऑयल के बने, यह मिलेट से भरपूर स्नैक, स्वाद और पोषण का एक बेहतरीन मेल है, इन सभी खूबियों के साथ-साथ ब्रांड का वादा है कि इसमें कोई मैदा नहीं है और न ही यह जंक है। इससे ब्रांड द्वारा किए गए वादे सबसे पहले स्वाद और फिर पोषण को और मज़बूती मिलती है। यह लॉन्च टाटा सोलफुल की बच्चों के स्नैक को साफ़, स्वादिष्ट और दिलचस्प रूप में बदलने की यात्रा में एक खास कदम है। 25% क्रंची मिलेट्स के साथ, यह गिल्ट-फ्री स्नैक को बच्चे बहुत पसंद करते हैं और माता-पिता इस पर भरोसा करते हैं, यह मज़ेदार तरीके से ब्रेकफ़ास्ट और स्नैक के बीच के अंतर को मिटा देता है।

स्नैक टाइम को एक मज़ेदार एडवेंचर में बदलने के लिए, अब हर पैक में एक QR कोड आता है जिसमें एक रोमांचक नया डिजिटल गेम निकलता है, ₹रागी रैली₹ जिसमें टाटा सोलफुल के मैस्कट, क्रंचा मुंचा ने अभिनय किया है। बच्चे शोरगुल, हंसी-मजाक और करतब से भरे मज़ेदार गेम्स के लिए उसके साथ शामिल हो सकते हैं।

₹स्कैन एंड विन₹ कंज्यूमर प्रोमो के भाग के रूप में, बच्चे सिंगापुर का शानदार ट्रिप जीतने के लिए भाग ले सकते हैं, जो परिवार के हिसाब से दिलकश, रोमांचकारी सवारी और कभी न भूली जाने वाली यादों से भरा एक ड्रीम डेस्टिनेशन है। ग्रैंड प्राइज़ के साथ-साथ, साप्ताहिक विजेता भी गेमिंग कंसोल और साइकिल घर ले जा सकते हैं, जिससे रागी बाइट्स की हर बाइट को बड़ी जीत हासिल करने और क्रंचा मुंचा के साथ जुड़ने का मौका मिलेगा।

यह टाटा सोलफुल का कैरेक्टर-आधारित कहानी कहने में यह एक जोरदार कदम है, जो क्रंचा मुंचा को महज एक मैस्कट से अधिक बनाता है, वह अब एक स्नैक-टाइम हीरो और भारत भर के बच्चों के लिए एक विश्वसनीय दोस्त है।

अपग्रेडेट प्रोडक्ट बिल्कुल नयी वाइब्रेंट पैकेजिंग के साथ आता है, जिसे सबसे अलग दिखने तथा बच्चों को एकदम लुभाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। क्रंचा मुंचा हर पैक के बीच में है, इससे प्रोडक्ट दिलचस्प और तुरंत पहचान में आने वाला बन जाता है। हर जगह अपनी पहचान और भागीदारी बढ़ाने के लिए, एक पूरा 360-डिग्री मार्केटिंग कैंपेन चल रहा है, जिसमें टीवी विज्ञापन, डिजिटल फ़िल्में, प्रभावशाली लोगों की सहभागिता और इन-स्टोर गतिविधियां शामिल हैं - ये सभी नेशनल प्रमोशन और देश भर में प्रोमो विज़िबिल्टी की ओर ले जाते हैं।

टाटा सोलफुल स्वाद, इनोवेशन और उपभोक्ता की पसंद की कहानियों के ज़रिए मॉर्डन परिवारों के लिए पारंपरिक भारतीय मिलेट्स को नया रूप देने में सबसे आगे है।

# दिल्ली के चाणक्यपुरी में बेकाबू थार ने फुटपाथ पर बैठे दो युवकों को रौंदा, दोनों की मौत

**दिल्ली के चाणक्यपुरी में रविवार सुबह एक थार गाड़ी ने फुटपाथ पर सो रहे दो बेघर युवकों को कुचल दिया जिससे उनकी मौत हो गई। पुलिस ने नशे में गाड़ी चला रहे आरोपी आशीष को गिरफ्तार कर लिया है। गाड़ी से शराब की बोतलें बरामद हुई हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है जिसमें पता चला है कि गाड़ी का पहले भी ओवर स्पीडिंग का चालान कट चुका है।**

**नई दिल्ली।** अति सुरक्षित चाणक्यपुरी इलाके में रविवार सुबह तेज रफ्तार थार चालक ने फुटपाथ पर बैठे दो युवक को कुचल दिया। हादसे में दोनों युवक की मौत हो गई। दोनों बेघर हैं, उनकी अभी पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने घटना के तुरंत बाद आरोपित थार चालक को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया।

उसकी पहचान शकरपुर के आशीष के रूप में हुई है। चालक नशे में था। थार से शराब की बोतलें बरामद हुई हैं। वह अपने दोस्त की कार लेकर गुरुग्राम से शकरपुर आ रहा था, तभी यह हादसा हुआ। चाणक्यपुरी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज से घाटना के बारे में जानकारी प्राप्त कर रही है। नई दिल्ली जिला उपायुक्त के मुताबिक, सुबह करीब साढ़े छह पेट्रोलिंग गाड़ी ने देखा कि 11 मूर्ति के पास एक हादसा हुआ है, जहां थार चालक ने फुटपाथ पर बैठे दो युवकों को कुचल दिया। पुलिस टीम ने चालक आशीष को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया। उसकी मेडिकल जांच कराई गई जिसमें उसके नशे में गाड़ी चलाने की पुष्टि हुई। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। फोरेंसिक व क्राइम टीम से थार की जांच कराई गई। हादसा इतना भयानक था कि थार का आगे का पहिया तक निकल गया। जांच में कार गाजियाबाद के रहने वाले अंकित के नाम पर पंजीकृत है। अंकित ने गाड़ी अपने दोस्त आशीष को दी थी।

**गाड़ी का दस दिन पहले कटा था चालान**

जांच में पता चला है कि थार का एक अगस्त को ओवर स्पीडिंग का चालान कटा था। गाड़ी पर दो हजार रुपये का चालान है, जिसे अभी भरा भी नहीं गया है। हादसे के समय थार में केवल आशीष ही मौजूद था। मामले में आगे की कार्रवाई जारी है, पुलिस साक्ष्य जुटाने के साथ गवाहों के बयान दर्ज कर रही है और घटना के हर पहलू की गहन जांच की जा रही है।

**एसयूवी चालकों की लापरवाही से बढ़ रहे हादसे**

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, बड़े वाहनों के चालक छोटे वाहनों (हैचबैक, सेडान) के चालकों की तुलना में अधिक ट्रैफिक नियम तोड़ते हैं। इनमें सीटबेल्ट न पहनना, मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी चलाना और लाल बत्ती तोड़ना जैसी आदतें आम हैं, जिससे हादसे का खतरा बढ़ता है।

इसकी एक वजह यह भी है कि एसयूवी में बैठते समय आगे वाली कार छोटी नजर आती है, जिससे स्पीड और दूरी का अंदाजा सही नहीं लग पाता, और 'एसयूवी इफेक्ट' और भी बढ़ जाता है। इसके अलावा सड़क पर तेज हार्न, दाएं-बाएं से ओवरटेक करने की जल्दी, हेडलाइट्स की चकाचौंध और गलत साइड से ड्राइविंग अक्सर इन हरकतों को देखकर लोग एसयूवी चालकों को लापरवाह मान लेते हैं।

हालांकि सभी एसयूवी चालक ऐसे नहीं होते, लेकिन कुछ मामलों में बड़े, भारी वाहनों के चालक आक्रामक और नियम तोड़ने वाले पाए गए हैं।

# पीडब्ल्यूडी विभाग व जल जीवन मिशन विभाग की लापरवाही के चलते सेमर मई व नदौलिया गांव में सड़क पर जल भराव व कीचड़ होने से ग्रामीणों को आवागमन में हो रही परेशानी

परिवहन विशेष न्यूज

**बदायूं:** सालारपुर ब्लॉक क्षेत्र के गांव नदौलिया व सेमर मई में मुख्य मार्ग पर जल भराव व कीचड़ के चलते राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि शिकायत के बाद भी समस्या का समाधान नहीं कराया जा रहा है। गंदगी व कीचड़ को लेकर कई बार दो पहिया वाहन चालक गिरकर चोटिल भी हो चुके हैं। इस दौरान ग्रामीणों ने प्रदर्शन करते हुए पीडब्ल्यूडी विभाग अधिकारी महेंद्र सिंह से समस्या निराकरण की गुहार लगाई है। सेमर मई गांव निवासी शाह आलम हाजी जी ने बताया कि गांव के मुख्य मार्ग पर जल जीवन मिशन द्वारा पाइप लाइन खोद कर डाली गई है तब से सड़क पर जल भराव से 12 से अधिक गांवों के लोग परेशान हैं जो कि जल जीवन मिशन वालों के द्वारा पाइपलाइन बिछाने के बाद रोड को रिपेयर नहीं किया गया है। नाली बंद होने व सड़क नीची होने के चलते जल भराव की समस्या बनी हुई है। बरसात के दिनों में मार्ग पर कई फीट पानी भर जाता है, जिसके चलते आवागमन बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। इस संबंध में बदायूं पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारी महेंद्र सिंह एवं मेड विवेक कुमार ने बताया कि गांव सेमर मई का रास्ता 200 मीटर व नदौलिया गांव का रास्ता 150 मीटर कार्य योजना में लिखा गया है जो की स्वीकृति मिलते ही जल्दी ही सड़क निर्माण कार्य

शुरू कर ग्रामीणों की समस्या का समाधान किया जाएगा।

इस संबंध में पूर्व ग्राम प्रधान मुनाफ अली ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग व जल जीवन मिशन विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीणों को आवागमन में समस्या हो रही है, पीडब्ल्यूडी विभाग ने जो रोड डाला था वह बैठ गया था, जल जीवन मिशन विभाग द्वारा जो पाइप लाइन खोद कर बिछाई गई थी उसको उसको रिपेयर ना किया गया।

इस संबंध में जल जीवन मिशन विभाग के जेई बालजीत सिंह से जानकारी लेना चाहा तो उन्होंने कॉल उठाना उचित नहीं समझा।

इस दौरान शिकायतकर्ता- तन्जीव अली ग्राम प्रधान, मुनाफ अली पूर्व प्रधान, शाह आलम हाजी जी, असलम अली, शान मोहम्मद, सोहिल, मोहम्मद जाहिर उर्फ बबलू नेता जी, मुनीश अली, सुरेश यादव ओमपाल सिंह यादव, धन सिंह यादव, सुनील यादव, नेम सिंह यादव, धनपाल सिंह, किशोर यादव, रंजीत यादव, महेश यादव, रवेन्द्र यादव, जसबीर पाल, राजवीर पाल, चरन सिंह यादव, जय सिंह यादव, कामिल गाजी, नबासे अली, महेंद्र सिंह, उस्मान अली, अपीसर अली, आबाद मिया, राशिद अली सहित आदि लोग मौजूद रहे।

# ज्ञान-वैराग्य और भक्ति की मूर्तिमान स्वरूप थीं ब्रह्मलीन साध्वी गोपीवाला मां

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** छटीकरा रोड़ स्थित श्रीकपिल कुटीर सांख्य योग आश्रम में प्रख्यात संत ब्रह्मलीन साध्वी गोपी वाला मां का त्रिदिवसीय तिरोभाव महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर संतों व भक्तों के द्वारा ब्रह्मलीन साध्वी गोपी वाला मां के चित्रपट का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया।साथ ही उनका पावन स्मरण किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में महामंडलेश्वर आदित्यानंद महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन साध्वी गोपीवाला मां ज्ञान-वैराग्य और भक्ति की मूर्तिमान स्वरूप थीं।वे परम तपस्वी व भगवद्प्राप्त संत थीं। महामंडलेश्वर साध्वी राधिका साधिका पुरी जटा वाली मां ने कहा कि हमारी सदगुरुदेव साध्वी गोपीवाला मां परम वीतरागी, भजनानंदी एवं निस्पृह संत थीं।वे एक ऐसी दिव्य महान विभूति थीं,जिनके दर्शन मात्र से जीव का कल्याण हो जाता था।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि गोपी वाला मां त्याग-भक्ति-वैराग्य की प्रतिमूर्ति थीं।उनकी ब्रज निष्ठा अभूतपूर्व थी।उन्हें ब्रज के संत,ब्रजवासी,लता-पताओं और यमुना महारानी से अति प्रेम था।ऐसी विभूतियों का अब निरन्तर अभाव होता जा रहा है।

प्रमुख समाजसेवी देवीसिंह कुंतल ने कहा कि साध्वी गोपीवाला मां को परम सिद्धि प्राप्त थी।वे अपने कमंडल के जल से अनेकों व्याधि से पीड़ित लोगों के तन पर छिड़क कर उनकी व्याधियों का हरण कर देती थीं।

प्रमुख भाजपा नेता रामदेव सिंह भगौर ने कहा कि कपिल कुटीर सांख्य योग आश्रम में मानव कल्याण के लिए यज्ञ के माध्यम से प्रतिदिन जन कल्याण व राष्ट्र कल्याण का कार्य किया जा रहा है।

महोत्सव में शुकाचार्य पीठाधीश्वर डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, स्वामी भुवनानन्द महाराज, भागवताचार्य साध्वी आशानन्द शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा, रामप्रकाश सक्सेना, पप्पू सरदार, पुरुषोत्तम गौतम, राजू शर्मा, पवन गौतम, साध्वी नमिता साधिका, राजकुमार शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया। महोत्सव के अंतर्गत महामंडलेश्वरों, श्रीमहंतों व महंतों आदि का सम्मान किया गया।साथ ही संत,ब्रजवासी,वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के कार्यक्रम भी संपन्न हुए।

# राष्ट्रीय पुत्र एवं पुत्री दिवस

11 अगस्त को राष्ट्रीय पुत्र-पुत्री दिवस माता-पिता और उनके बच्चों को एक साथ समय बिताने का एक बेहतरीन मौका देता है। इस दिन, अपने जीवन की खुशियों के साथ रहें।

**बेटे और बेटी दिवस**

==========

अपने बच्चों को बताएँ कि आप खुश हैं कि वे आपके जीवन का हिस्सा हैं। उनके दिन भर की गतिविधियों को सुनते हुए, पारिवारिक कहानियाँ साझा करें। उनकी आशाओं और सपनों के बारे में जानें। जानें कि उन्हें क्या प्रेरित करता है। उन्हें कुछ नया सिखाएँ, या हो सकता है कि वे आपको कुछ सिखा सकें। उनके साथ बिताए हर दिन का आनंद लें और जितना हो सके उतना अच्छा समय बिताएँ। बच्चों के साथ बिताया गया समय बहुत कम होता है। वे न सिर्फ़ तेज़ी से बड़े होते हैं, बल्कि उनकी रुचियाँ और ज़रूरतें भी बदलती हैं। चाहे हमें इसका एहसास हो या न हो, बेटे और बेटियाँ हमें आदर्श मानते हैं। वे हमारे अच्छे-बुरे व्यवहार का अनुकरण करते हैं। समय चाहे जितना भी बदल जाए, बच्चे नहीं बदलते। हम अपने माता-पिता की स्वीकृति और स्वीकार्यता की लालसा रखते हैं। हमारे बच्चे भी यही चाहते हैं। हर बच्चा अलग होता है। उनका व्यक्तित्व उनसे बिल्कुल अलग होता है। एक बच्चा किताबों का दीवाना होता है, तो दूसरा घर के हर इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को खराब कर देता है। लंबी यात्राओं में बातूनी हमें जगाए रखता है और रात में जागने वाला हमें तारों के नीचे की हर चीज़ के प्रति सजग रखता है। कोई भी दो बच्चे एक जैसे नहीं होते। ऐसा ही होना चाहिए। उनका और आपके परिवार में उनकी भूमिका का जश्न मनाएँ।

**पुत्र और पुत्री दिवस कैसे मनाएँ**

==========

आज अपने बच्चों के लिए कुछ ख़ास करें। अगर वे घर पर हैं, तो टहलने जाएँ या किसी नज़दीकी पार्क का आनंद लें। बड़े बच्चों को कार्ड भेजें या फ़ोन करें। उन्हें याद दिलाएँ कि वे आपके लिए कितने ख़ास हैं।

**राष्ट्रीय पुत्र एवं पुत्री दिवस का इतिहास**

==========

राष्ट्रीय दिवस कैलेंडर में 11 अगस्त को इस दिन के मनाए जाने का सबसे पहला रिकॉर्ड 1988 में पाया गया। इसका उल्लेख 12 अगस्त, 1988 के नानाइमो (ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा) डेली न्यूज लेख में मिलता है। हालांकि हम राष्ट्रीय पुत्र और पुत्री दिवस के निर्माता की पहचान करने में असमर्थ थे, लेकिन हमें इस नाम के साथ अन्य पहले के कार्यक्रम मिले। 20 अगस्त, 1944 को सेंट जोसेफ न्यूज़-प्रेस/गजट में प्रकाशित एक लेख के अनुसार, 1936 में जे. हेनरी ड्यूसेनबेरी ने पहली बार बेटों और बेटियों के दिन का विचार अपनाया। यह विचार उन्हें एक बच्चे द्वारा यह पूछते हुए सुनने के बाद आया कि ऐसा कोई अवसर क्यों नहीं होता। उनके प्रयासों से, यह दिन मिसौरी में शुरू हुआ और फैल गया। माता-पिता अपने बच्चों के प्रतीक स्वरूप एक फूलदान में एक फूल रखते थे और उसे घर के एक प्रमुख कमरे में रख देते थे। दिन भर, माता-पिता फूलों को निहारते हुए अपने बच्चों के बारे में सोचते रहते थे, खासकर उन बच्चों के बारे में जो अब घर में नहीं रहते थे। 1945 तक, यह उत्सव 22 राज्यों में अपने चरम पर पहुँच गया और इस आयोजन में विभिन्न संगठनों ने भाग लिया। बाद के वर्षों में, लायंस क्लब और महिला सहायक संगठनों जैसे संगठनों ने अपनी नगर पालिकाओं में 'बेटा-बेटी दिवस' मनाया। हालाँकि, ये आयोजन साल-दर-साल बदलते रहे। फिर, 1972 में, फ्लोरिडा के कांग्रेसी क्लाउड पेपर ने टेक्सास के डेल रियो की जॉर्जिया पॉल की ओर से बेटों और बेटियों के लिए एक दिवस की स्थापना हेतु एक अनुरोध प्रस्तुत किया। 28 अक्टूबर, 1972 के डेल रियो न्यूज़-हेराल्ड के अनुसार, अनुरोध में यह घोषणा की गई थी कि यह दिवस प्रतिवर्ष जनवरी के आखिरी रविवार को मनाया जाएगा। हालाँकि, न तो सदन और न ही सीनेट ने इस दिवस की घोषणा के लिए किसी विधेयक या संयुक्त प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए।

# कानपुर में प्यार बना मौत, किन्नर की भाई समेत हत्या : तीन के खिलाफ रिपोर्ट

सुनील बाजपेई

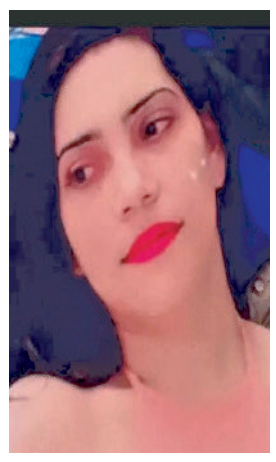

**कानपुर।** एक युवक से प्यार यहां किन्नर की मुहबोले भाई समेत हत्या का कारण बन गया। घटना में रिपोर्ट दर्ज करने के बाद पुलिस तीन लोगों की तलाश कर रही है ,जिसमें किन्नर काजल का प्रेमी भी शामिल बताया गया है।

इस घटना की जानकारी तब हुई जब 4 दिन से फोन नहीं उठाने पर उसके माता-पिता और बहन उसके किराए के आवास पर पहुंचे, जहां किन्नर का शव दीवान में टूंसा मिला, जबकि उसके भाई का शव जमीन पर पड़ा था।

इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। इस पर डीसीपी साउथ दीपेंद्र नाथ चौधरी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने मौके पर साक्ष्य जुटाए। पुलिस की शुरुआती जांच में पता चला है कि प्रेम-प्रसंग में घटना को अंजाम दिया गया।

शहर के किन्नरों में भी दहशत का कारण बना पूरा मामला हनुमंत विहार के खाड़ेपुर का है। यहां मैनपुरी के किशनी थाना क्षेत्र के धरमंगदपुर गांव की रहने वाली गुड्डी ने बताया कि 25 साल की बेटी काजल किन्नर है। मैंने अपने भाई के बेटे देव (12) को गोद लिया था। काजल कानपुर में रहती थी।

मौके पर पहुंची पुलिस को परिजनों ने बताया कि शिवानी उसकी गुरु है। एक महीने पहले ही काजल ने रिटायर्ड फौजी अभिमन्यु के मकान में किराए पर कमरा लिया, जिसके बाद देव को अपने पास पढ़ाने के लिए बुला यहां उसका एडमिशन कक्षा 6 में करवाया। मौके पर पहुंची पुलिस को काजल का आईफोन भी गायब मिला। पुलिस ने बताया परिजनों ने आलोक उर्फ गोलू शर्मा और हेमराज उर्फ अजय सविता पर दोनों की हत्या का आरोप लगाया है। जिस पर रिपोर्ट दर्जकर फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

# अमेरिका भारत टकराए-चीन भारत करीब आए-रूस ने ध्रुवीकरण के समीकरण बनाए- पश्चिमी विश्व के लिए भू- राजनीतिक भूचाल लाए

सुनिए बाबूजी! यह भारत है जो, अमेरिका-भारत डायरेक्ट टकराहट से अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की दिशा को प्रभावित कर सकने की ताकत रखता हैं- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर वैसे तो अमेरिका की अनेक देशों के साथ टकराहट, फिर उनके ऊपर आर्थिक सामायिक प्रतिबंधों को लगाना, वैश्विक वित्तीय संस्थाओं का मुंह मोड़ना, जैसे अनेक किस हम सुनते रहते हैं, जिसके कारण वे देश आर्थिक खस्ताहाली क़े शिकार हो जाते हैं पर परंतु वर्तमान भारत अमेरिका के हालातो को देखते हुए, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र, आज 45 वर्षों के लेखन कार्य के इतिहास में व शायद भारत-अमेरिका दोस्ती के इतिहास में पहली बार इतनी टकराहट देख रहा हूं, कि भारत पर 50 पेर्सेंट टैरिफ लगाना व इसके बढ़ाने की धमकी देना तथा फिर प्रतिबंधों की बारी भी आ सकती है, जिससे हमारे प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल व फार्मेसी इत्यादि क्षेत्रों में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जिसपर मेरा मानना है कि इस संभावित होने वाले प्रभाव पर रणनीतिक रूप से काम करना शुरू हो गया होगा? इसके साथ ही भारत क़ा अपनी रणनीति कूटनीति पर भी काम शुरू हो गया होगा। अभी पीएम की रूसी राष्ट्रपति से बात हुई, संभवत वे नवंबर दिसंबर में भारत दौरे पर आ सकते हैं। वही हमारे पीएम 28 से 30 अगस्त 2025 को जापान, फिर 31 अगस्त से 1 सितंबर 2025 को एससीओ सम्मिट में चीन जाएंगे, जिसमे चीनी विदेश मंत्रालय के अनुसार भारतीय पीएम के आने की उत्सुकता है, व संभावना है कि इस टैरिफ रूपी आपदा को अवसर के रूप में बदलने की रणनीति हो सकती है, जिसनें अमेरिका को भी सख़्तें में डाल दिया है? क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है कि जिस सोच क़े साथ ट्रंप ने भारत पर इतनी भारी मात्रा में टैरिफ लगाया है, वह सोच शायद उल्टी पड़ रही है? और हो सकता है कि बातचीत को हथियार बनाकर टैरिफ को हटा भी दिया जाए तो आश्चर्य वाली बात नहीं होगी !परंतु भारत तो अपनी तैयारी में लग गया है, अगर इस बार रूस चीन भारत ब्राजील ईरान इत्यादि देशों का ग्रुप बन गया तो, वैश्विक कूटनीति व भू-राजनीतिक समीकरण में एक नया मोड़ आ जाएगा जो पश्चिमी विश्व के लिए भू-राजनीतिक भूचाल ला सकताहै।इसलिए आज हम मीडिया में उपयोग जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यमसे चर्चा करेंगे, सुनिए बाबूजी! यह भारत है-अमेरिका भारत डायरेक्ट टकराहट अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की दिशा को प्रभावित कर सकता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफ का प्रभाव भू-राजनीतिक प्रभाव पर पढ़ने की करें तो, अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आर्थिक हथियारों का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब यह हथियार दुनियाँ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, यानी अमेरिका, चलाता है तो उसके प्रभाव वैश्विक होते हैं। हाल ही में अमेरिका ने भारत पर टैक्स लगाने का फैसला किया और साथ ही प्रतिबंध लगाने की संभावना के संकेत भी दिए। यह कदम न केवल भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव का कारण बन रहा है, बल्कि इसके पीछे एक और बड़ा खतरा छिपा है-भारत, चीन और रूस का संभावित ध्रुवीकरण। यह गठजोड़, यदि मजबूत हुआ, तो अमेरिका के लिए एक ऐसी भू-राजनीतिक चुनौती बन सकता है जो उसके दशकों से कायम आर्थिक और रणनीतिक प्रभुत्व को हिला देगी। अमेरिका और भारत के बीच हाल के समय में बढ़ता तनाव वैश्विक कूटनीति और भू- राजनीतिक समीकरणों में एक नए मोड़ की आहट देता है। ₹अमेरिका -भारत डायरेक्ट₹ मामले पर जो मतभेद उभर कर आए हैं, वे केवल द्विपक्षीय विवाद तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि यह पूरी अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन की दिशा को प्रभावित कर सकते हैं। इस मुद्दे ने जहां भारत और अमेरिका के बीच अविश्वास की रेखा को गहरा किया है, वहीं दूसरी ओर यह चीन के लिए अवसर का द्वार खोलता दिख रहा है। अगर भारत और चीन अपने पुराने मतभेदों को किनारे रखकर किसी साझा रणनीति पर आगे बढ़ते हैं, तो पश्चिमी वर्ल्ड की राजनीतिक-आर्थिक बुनियाद पर गहरा असर पड़ सकता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका टकराव को अमेरिका का सबसे बड़ा राजनीतिक दुष्परिणाम होने की करें तो, भारत पर लगाए गए अमेरिकी टैक्स का असर केवल व्यापारिक संतुलन तक सीमित नहीं रहेगा। यह एक ऐसा संदेश है जो अमेरिकी नीति-निर्माताओं की सोच को दर्शाता है-वे किसी भी देश के साथ अपने हितों के विरुद्ध जाने पर कठोर आर्थिक कदम उठा सकते हैं।लेकिनभारत जो पिछले कुछ वर्षों में न केवल वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने की स्थिति में आया है, बल्कि पश्चिमी देशों के लिए भी एक रणनीतिक साझेदार बनकर उभरा है, इस तरह के दबाव को आसानी से स्वीकार करने वाला नहीं है। भारत की आर्थिक नीतियों और रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर देने की प्रवृत्ति अमेरिका की उम्मीदों से मेल नहीं खाती, और यही टकराव की जड़ है।अमेरिका के इस कदम का सबसे बड़ा रणनीतिक दुष्परिणाम यह हो सकता है कि भारत और चीन-दोनों एशियाई दिग्गज, जिनके बीच पिछले वर्षों में सीमा विवाद और भू- राजनीतिक तनाव रहे हैं -आर्थिक और रणनीतिक मुद्दों पर एक साझा मंच पर आ सकते हैं। चीन पहले से ही अमेरिका के टैरिफ और प्रतिबंधों का सामना कर रहा है, और वह हर उस साझेदार की तलाश में है जो उसकी अमेरिका-विरोधी रणनीति को मजबूती दे सके। यदि भारत, अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए, अमेरिका के दबाव से निकलकर चीन के साथ कुछ क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाता है, तो यह अमेरिकी रणनीति के लिए बड़ा झटका होगा जिससे उबरने में उसे वक्त लगेगा।

साथियों बात अगर हम भारत रूस पहलू को नजरअंदाज नहीं करने की करें तो, रूस और भारत के ऐतिहासिक रूप से मजबूत संबंध हैं,चाहे वह रक्षा सौदे हों, ऊर्जा व्यापार हो या अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पारस्परिक समर्थन। यूक्रेन युद्ध के बाद रूस पहले से ही अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों का सामना कर रहा है, और उसने चीन के साथ अपना आर्थिक और रणनीतिक तालमेल बढ़ा लिया है। यदि भारत भी इस त्रिकोण में सक्रिय रूप से शामिल हो जाता है, तो भारत-चीन-रूस का यह ध्रुवीकरण न केवल एक मजबूत आर्थिक शक्ति बन सकता है, बल्कि एक वैकल्पिक वैश्विक शक्ति केंद्र के रूप में उभर सकता है, जो अमेरिकी नेतृत्व वाली पश्चिमी व्यवस्था को चुनौती देगा।इस संभावित गठजोड़ के आर्थिक प्रभाव गहरे होंगे। भारत, चीन और रूस मिलकर वैश्विक ऊर्जा संसाधनों, विनिर्माण क्षमता और तकनीकी विकास के बड़े हिस्से पर नियंत्रण रखते हैं। यदि ये तीनों देश आपसी व्यापार में अमेरिकी डॉलर के बजाय स्थानीय मुद्राओं या वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों का उपयोग बढ़ाते हैं, तो यह अमेरिकी डॉलर की वैश्विक वर्चस्व को कमजोर कर सकता है। अमेरिका की आर्थिक ताकत का एक बड़ा आधार उसकी मुद्रा की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता है, और इस पर चोट लगना उसके लिए सबसे बड़ी भू-आर्थिक चुनौती होगी।राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से भी यह ध्रुवीकरण खतरनाक हो सकता है। अमेरिका ने दशकों से यह सुनिश्चित किया है कि भारत और चीन के बीच विश्वास की कमी बनी रहे, ताकि एशिया में कोई संयुक्त शक्ति उसके हितों को चुनौती न दे सके। लेकिन अगर आर्थिक दबाव और व्यापारिक युद्ध भारत को अमेरिका से दूर ले जाते हैं, तो वह मजबूरी में ही सही, चीन और रूस के साथ कुछ क्षेत्रों में सहयोग का रास्ता चुन सकता है। यह सहयोग ऊर्जा सुरक्षा, सैन्य तकनीक, और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर समन्वित मतदान तक दृढ़ता से फैल सकता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिक़ा की मौजूदा विदेश नीति अक्सर अल्पकालिक रणनीतिक लक्ष्यों पर केंद्रित दिखाई देने की करें तो, दीर्घकालिक भू-राजनीतिक परिणामों का पर्याप्त आकलन नहीं किया जाता। भारत पर टैक्स और संभावित प्रतिबंध लगाने का निर्णय भी इसी श्रेणी में आता है। अमेरिका सोचता है कि आर्थिक दबाव डालकर वह भारत को अपने शर्तों पर व्यापार समझौते करने के लिए मजबूर कर सकता है, लेकिन वह यह भूल रहा है कि भारत अब एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो अपनी वैश्विक भूमिका और प्रतिष्ठा के प्रति बेहद सजग है, और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी स्वायत्त पहचान बनाए रखना चाहता है।भारत की विदेश नीति ₹मल्टी-अलाइनमेंट₹ यानी बहु-संबंधों की नीति पर आधारित है, जहां वह विभिन्न शक्तियों के साथ अलग-अलग मुद्दों पर साझेदारी करता है। यदि अमेरिका के साथ तनाव बढ़ता है, तो भारत के पास चीन और रूस के साथ सहयोग बढ़ाने का विकल्प हमेशा रहेगा। ऐसे में, भारत-चीन-रूस का एक सामरिक और आर्थिक ध्रुव बनना, भले ही यह पूर्ण गठबंधन न हो, लेकिन इतना पर्याप्त होगा कि अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए यह एक गंभीर चुनौती बन जाए।अंततः, अमेरिका को यह समझना होगा कि भारत पर टैक्स लगाना और प्रतिबंधों की धमकी देना केवल एक द्विपक्षीय विवाद नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी कड़ी हो सकती है जो वैश्विक शक्ति- संतुलन को बदल दे। भारत, चीन और रूस का संभावित ध्रुवीकरण एक नए शीत युद्ध जैसी स्थिति पैदा कर सकता है, जहां अमेरिका को न केवल सैन्य और कूटनीतिक मोर्चे पर, बल्कि आर्थिक और वित्तीय मोर्चे पर भी एक साथ कई विरोधियों का सामना करना पड़ेगा। यह वह स्थिति है जिससे बचने के लिए अमेरिका को अपने कदमों को बहुत सावधानी से तौलना होगा, क्योंकि आज की जुड़ी हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक गलती का असर सीमाओं से बहुत दूर तक फैल सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिका भारत टकराए-चीन भारत करीब आए-रूस ने ध्रुवीकरण के समीकरण बनाए-पश्चिमी विश्व के लिए भू- राजनीतिक भूचाल लाए, अमेरिका भारत के बीच बढ़ता तनाव, वैश्विक कूटनीति व भू-राजनीतिक समीकरणों में नए मोड की आहट देता है।सुनिए बाबूजी! यह भारत है, अमेरिका- भारत डायरेक्ट टकराहट, अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की दिशा को प्रभावित कर सकने की ताकत रखता हैं।

# हुंडई वरना के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद कितनी देनी होगी ईएमआई

कार वित्त योजना देश में हुंडई मोटर्स की ओर से Mid Size Sedan Car के तौर पर Hyundai Verna की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसके लिए दो लाख रुपये की Down Payment देने के बाद कितने रुपये महीने की EMI देनी होगी।

**नई दिल्ली।** भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों को Hyundai की ओर से ऑफर किया जाता है। अगर आप भी कंपनी की Mid Size Sedan Car के तौर पर ऑफर की जाने वाली Hyundai Verna के बेस वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं और दो लाख रुपये की डाउनपेमेंट करने के बाद गाड़ी को घर लाना चाहते हैं, तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी (Hyundai Verna Down Payment and EMI) होगी। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

**Hyundai Verna Price**

Hyundai की ओर से Verna के बेस वेरिएंट के तौर पर EX को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी के बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम (Hyundai Verna Price) कीमत 11.07 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 1.10 लाख रुपये आरटीओ और करीब 53 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा टीसीएस चार्ज के तौर पर 11074 रुपये देने होंगे। जिसके बाद Hyundai Verna on road price करीब 12.82 लाख रुपये के आस-पास हो जाती है।

**दो लाख Down Payment के बाद कितनी EMI**

अगर आप इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 10.82 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 10.82 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 17420 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

**कितनी महंगी पड़ेगी कार**

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 10.82 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 17420 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Hyundai Verna के लिए करीब 3.80 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 16.63 लाख रुपये हो जाएगी।

**किनसे होता है मुकाबला**

Hyundai की ओर से Verna को कंपनी Mid Size Sedan Car के तौर पर ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Skoda Slavia, Volkswagen Virtus, Honda City के साथ होता है।

## इस हफ्ते लॉन्च होगी नई बाइक येज़्दी रोडस्टर लॉन्च, महिंद्रा करेगी 15 अगस्त पर बड़ा धमाका

परिवहन विशेष न्यूज

आगामी लॉन्च अगस्त का अगला हफ्ता ऑटोमोबाइल जगत के लिए काफी खास रहेगा। इस हफ्ते में Yezdi की ओर से नई बाइक को लॉन्च किया जाएगा। वहीं Mahindra की ओर से भी इस हफ्ते में चार नई एसयूवी को लाने की तैयारी की जा रही है। दोनों निर्माताओं की ओर से किन वाहनों को भारत में लॉन्च किया जाएगा।

**नई दिल्ली।** भारत में कई वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। हर महीने कई नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जाता है। अगस्त के अगले हफ्ते में भी नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जाएगा। किस निर्माता की ओर से किस तारीख को कौन से सेगमेंट में किस तरह के वाहन को पेश और लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**लॉन्च होंगी कार और बाइक**

11 अगस्त से शुरू हो रहे हफ्ते में छह नए वाहनों को पेश और लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। जिनमें से एक दो पहिया वाहन सेगमेंट में होगी और बाकी पांच वाहनों को कार और एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाएगा।

**12 अगस्त को लॉन्च होगी Yezdi Roadster**

12 अगस्त को भारतीय बाजार में यज्दी की ओर से नई रोडस्टर बाइक को लॉन्च (new bike launch India) करने की तैयारी की जा रही है। 2025 Yezdi Roadster में नई एलईडी हेडलाइट, टेललाइट और इंडिकेटर्स के साथ एक नए रंग का विकल्प मिल सकता है। जैसा कि हाल ही में आई येज्दी की आई मोटरसाइकिल में देखने के लिए मिल चुका है, वैसे ही रोडस्टर में भी बिल्ड क्वालिटी में सुधार देखने को मिल सकता है।

**Mercedes Benz AMG CLE 53 Coupe**

मर्सिडीज की ओर से भी एएमजी सीएलई 53 कूपे को भारत में लॉन्च किया जाएगा। 12 अगस्त को इस गाड़ी को औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जाएगा। इसमें बेहद दमदार इंजन और फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है।

**15 अगस्त को होगा Mahindra करेगी धमाका**

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल महिंद्रा की ओर से 15 अगस्त को बड़ा धमाका किया जाएगा। इस दिन निर्माता की ओर से चार नई एसयूवी को पेश किया जाएगा। इनमें Mahindra Vision S, Vision SXT, Vision T और Vision X शामिल हैं। फिलहाल इन एसयूवी की कोई और जानकारी निर्माता की ओर से सार्वजनिक नहीं की गई है। लेकिन सोशल मीडिया पर लगातार नए टीजर अपलोड किए जा रहे हैं। जिनसे इन एसयूवी की मामूली झलक मिल रही है।

## सिट्रोएन एयरक्रॉस का नया अवतार जल्द होगा लॉन्च, टेस्टिंग के दौरान दिखी झलक, मिलेंगे दमदार फीचर्स

सिट्रोएन एयरक्रॉस फेसलिफ्ट सिट्रॉएन की ओर से भारत में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिट्रॉएन की एयरक्रॉस एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन को लॉन्च से पहले टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। इस एसयूवी में किस तरह के बदलाव किए जा सकते हैं। कब तक इसे लॉन्च किया जाएगा। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** भारतीय बाजार में सिट्रॉएन की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Citroen Aircross के फेसलिफ्ट को लाने (upcoming SUV India) की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही इस एसयूवी को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। इस दौरान एसयूवी की क्या जानकारी सामने आई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**जल्द लॉन्च होगी Citroen Aircross फेसलिफ्ट**

सिट्रॉएन की ओर से जल्द ही अपनी एसयूवी एयरक्रॉस के फेसलिफ्ट को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च (new car launch) से पहले इस एसयूवी की टेस्टिंग की जा रही है। जिस दौरान इसे हाल में देखा गया है।

**क्या मिली जानकारी**

लॉन्च से पहले टेस्टिंग के दौरान सिट्रॉएन एयरक्रॉस को चेन्नई में प्लांट के पास देखा गया है। जिसमें फ्रंट लोगो, रियर विंडो के साथ ही इंटीरियर को भी ढंका हुआ था। जिससे यह जानकारी मिल रही है कि इसमें नया डैशबोर्ड, नया इंटीरियर और लोगो में बदलाव के साथ लॉन्च किया जाएगा।

**इंजन में नहीं होगा बदलाव**

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी के फेसलिफ्ट वर्जन में सिर्फ फीचर्स, इंटीरियर में ही बदलाव किया जाएगा। इसके मूल डिजाइन और इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं होगा।

**कब होगी लॉन्च**

निर्माता की ओर से इसके लॉन्च को लेकर कोई औपचारिक जानकारी अभी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस एसयूवी को फेस्टिव सीजन तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। इसके साथ ही इसकी कीमत में भी मामूली बढ़ोतरी की जा सकती है। मौजूदा समय में इस एसयूवी को भारतीय बाजार में 8.62 लख रुपये की एक्स शोरूम कीमत से 14.60 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के बीच बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है।

**किनसे होगा मुकाबला**

सिट्रॉएन की ओर से एयरक्रॉस को पहले सी3 एयरक्रॉस के नाम से बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता था। लेकिन कुछ समय पहले इसके नाम कसे सी3 की जगह सिर्फ एयरक्रॉस किया गया। इस एसयूवी को भारत में मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। जिस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला हुंडई क्रेटा, किआ सेल्टॉस, होंडा एलीवेट, स्कोडा कुशाक, फॉक्सवैगन ताइगुन जैसी मिड साइज एसयूवी के साथ होता है।

## मारुति ग्रैंड विटारा का फैंटम ब्लैक एडिशन हुआ पेश, पैनोरमिक सनरूफ, वेंटिलेटिड सीट्स जैसे फीचर्स मिलेंगे

मारुति ग्रैंड विटारा फैंटम ब्लाक देश की प्रमुख वाहन निर्माता मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही अपनी एसयूवी ग्रैंड विटारा का नया एडिशन पेश किया है। इसमें किस तरह की खासियत दी गई हैं। कितना दमदार इंजन मिलता है। किस तरह के फीचर्स मिलते हैं। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से Grand Vitara के नए एडिशन PHANTOM BLAQ Edition को पेश कर दिया है। इस एडिशन में किस तरह की खासियत दी गई हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे पेश किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**पेश हुआ Maruti Grand Vitara का PHANTOM BLAQ Edition**

मारुति सुजुकी की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी के PHANTOM BLAQ Edition को भारतीय बाजार में पेश कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इस खास एडिशन को नेक्सा डीलरशिप के देश में 10 साल पूरे होने के मौके पर ऑफर किया गया है।

**क्या है खासियत**

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक PHANTOM BLAQ Edition को मैट ब्लैक रंग में ऑफर किया गया है। इसे अल्फा प्लस वेरिएंट में ऑफर (Grand Vitara new edition) किया गया है। जिसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं।

**कैसे हैं फीचर्स**

मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा के फैंटम ब्लैक एडिशन में मैट ब्लैक रंग के साथ वेंटिलेटिड सीट्स, शैंपेन गोल्ड एसेंट, पैनोरमिक सनरूफ, 22.86 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, रिमोट एक्सेस, कनेक्टिड कार फीचर्स, छह एयरबैग, ईएसपी, ईबीडी, एबीएस, हिल होल्ड जैसे कई फीचर्स दिए गए हैं।

**कितना दमदार इंजन**

निर्माता की ओर से इसमें 1.5 लीटर की क्षमता का इंजन दिया गया है। जिससे इसे 116 बीएचपी की पावर और 141 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें हाइब्रिड तकनीक को भी दिया गया है। इसके साथ ही इसमें सीवीटी ट्रांसमिशन को दिया गया है।

**अधिकारियों ने कही यह बात**

मारुति सुजुकी के मार्केटिंग और सेल्स के एसईओ पार्थो बैनर्जी ने कहा कि NEXA के एक दशक पूरे होने के अवसर पर, ग्रैंड विटारा फैंटम ब्लैक एडिशन ग्राहकों को विशेष रूप से तैयार किए गए इनोवेशन से प्रेरित करने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह लिमिटेड एडिशन विलासिता के सार को दर्शाता है, एक ऐसी SUV पेश करता है जो न केवल असाधारण प्रदर्शन करती है, बल्कि हमारे समझदार खरीदारों की परिष्कृत जीवनशैली के साथ भी पूरी तरह मेल खाती है।

## दमदार परफॉर्मेंस के साथ क्या मिलेगी माइलेज, डीजल ऑटोमैटिक खरीदने में कितना फायदा

किआ सिरोस समीक्षा वाहन निर्माता किआ की ओर से भारतीय बाजार में कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर सिरोस को ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। क्या इसके डीजल ऑटोमैटिक वेरिएंट को खरीदना आपके लिए फायदेमंद हो सकता है या फिर अन्य विकल्पों पर विचार करना चाहिए। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** देश में कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में सबसे बेहतरीन विकल्प ऑफर किए जाते हैं, इनमें से एक विकल्प किआ सिरोस भी है। इस एसयूवी को पेट्रोल के साथ ही डीजल और मैनुअल के साथ ही ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ भी ऑफर किया जाता है। हमने इसके डीजल ऑटोमैटिक वेरिएंट को 1500 किलोमीटर से ज्यादा चलाया। इंजन, फीचर्स, आराम और माइलेज के मामले में क्या इसे खरीदना आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है या फिर किसी अन्य विकल्प को चुनना बेहतर (Kia Syros Diesel Automatic Review After 1500 KM Drive) होगा। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं।

**नए डिजाइन के साथ आई Kia Syros**

किआ ने कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में किआ सिरोस को साल 2025 के शुरू में लॉन्च किया था। किआ की बाकी कारों के मुकाबले इसका डिजाइन 2.0 थीम पर रखा गया। जैसा किआ ने अपनी EV9 में दिया है। इसका लुक कई लोगों को अच्छा तो कुछ को थोड़ा कम पसंद आ सकता है। लेकिन यह टॉल बॉय डिजाइन के साथ आती है, जिससे ज्यादा हाइट वाले लोगों को भी इसमें बैठने में परेशानी नहीं होती।

**कैसे हैं फीचर्स**

किआ की सिरोस में भी काफी बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, रूफ रेल, फ्लश डोर हैंडल, बॉडी क्लैडिंग को तो एक्सटीरियर में दिया गया है। वहीं इंटीरियर में भी इस एसयूवी में 30 इंच की ट्रिनिटी स्क्रीन मिलती है, जिसमें 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम और 12.3 इंच का ही डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलता है। बाकी इसमें एक छोटी स्क्रीन दी जाती है जिसमें एसी कंट्रोल मिलते हैं। इसके अलावा एसयूवी में पैनोरमिक सनरूफ, ड्राइविंग मोड्स, वायरलेस चार्जर, फ्रंट आर्म रेस्ट, एयर प्यूरीफायर जैसे कई फीचर्स मिलते हैं। लेकिन रात के समय हेडलाइट से मिलने वाली रोशनी को थोड़ा बेहतर किया जा सकता है।

किआ की सिरोस को हमने गर्मी के मौसम में चलाया तो आगे के साथ ही पीछे की सीटों पर भी इसमें वेंटिलेटिड सीट्स और रियर एसी वेंट्स दिए गए हैं जो ऐसे मौसम में सभी को काफी ज्यादा आराम देती हैं। इसके अलावा इसकी रियर सीट को रिक्लाइन और स्लाइड दोनों तरह से एडजस्ट किया जा सकता है। जिससे पीछे बैठने पर इतना लेग स्पेस मिल जाता है जितना इस सेगमेंट की किसी और एसयूवी में नहीं मिलता। इसके अलावा इसमें बड़ी विंडो और पैनोरमिक रूफ के कारण यह अंदर से ज्यादा खुली और बड़ी लगती है।

**कितना दमदार इंजन**

किआ सिरोस में पेट्रोल इंजन भी मिलता है। लेकिन हमने इसके डीजल ऑटोमैटिक वेरिएंट को करीब 1500 किलोमीटर चलाया। इसके 1.5 लीटर टर्बो डीजल इंजन से 116 पीएस की पावर और 250 न्यूटन मीटर का टॉर्क जेनरेट करता है जिससे गाड़ी में पावर की कमी नहीं महसूस होती। वहीं इसका टॉर्क कनवर्टर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ इसे चलाने में ड्राइवर को किसी भी तरह की कोशिश नहीं करनी पड़ती। शहर हो या फिर हाइवे इसे चलाने में थकान तो जैसे होती ही नहीं है। लेकिन तेज एक्सीलेरेट करने पर इंजन की आवाज केबिन तक आती है।

**कितनी है माइलेज**

हमने इस एसयूवी को दिल्ली से जोधपुर के बीच एक्सप्रेस वे, हाइवे पर चलाया। साथ में दिल्ली और जोधपुर में भी इसे शहर के ट्रैफिक में चलाने का मौका मिला। सिरोस में पूरे बूट स्पेस का उपयोग हमने किया और करीब 1500 किलोमीटर से ज्यादा के दौरान एसी भी बंद नहीं हुआ। इस दौरान इस गाड़ी ने हमें करीब 16 किलोमीटर प्रति लीटर तक की औसत माइलेज दी। जो शहर में थोड़ी कम 13-14 के आसपास हो सकती है और हाइवे पर 16 के आसपास या उससे ज्यादा भी हो सकती है। यह आपके चलाने, गाड़ी में कितने लोग सफर कर रहे हैं और सामान रखने पर भी निर्भर करता है। हमें तो हाइवे पर 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड पर चलाते हुए सिरोस के मीटर पर 20 किलोमीटर प्रति लीटर तक की माइलेज भी दिखाई दी।

**समीक्षा**

अगर आप अपने लिए ऐसी कॉम्पैक्ट एसयूवी की तलाश कर रहे हैं जो सिर्फ दिखाई देने में ही कॉम्पैक्ट न लगे बल्कि उसमें बेहतरीन फीचर्स, अच्छी माइलेज और सेगमेंट में सबसे रियर सीट पर सबसे ज्यादा जगह मिले तो फिर किआ की सिरोस के डीजल ऑटोमैटिक वर्जन को खरीदा जा सकता है। वहीं अगर आपको डीजल की जगह पेट्रोल या सीएनजी इंजन के साथ कम फीचर्स वाली किसी गाड़ी को खरीदना है तो फिर आप दूसरे विकल्पों पर विचार कर सकते हैं।

# स्वतंत्रता के बाद से खेल में देश की उल्लेखनीय यात्रा

विजय गर्ग

1947 में अपनी स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने खेल सुधारों की एक उल्लेखनीय यात्रा शुरू की है, जो एक समृद्ध खेल विरासत के साथ एक राष्ट्र से विकसित हुई है, लेकिन सीमित बुनियादी ढांचे और समर्थन, प्रतिभा का पोषण करने और वैश्विक सफलता प्राप्त करने के लिए एक केंद्रित और व्यवस्थित दृष्टिकोण के साथ। इस यात्रा को नीतिगत पहलों, संस्थागत परिवर्तनों और जमीनी स्तर पर विकास और कुलीन प्रदर्शन पर बढ़ते जोर की विशेषता है। प्रारंभिक वर्षः कम्पास के बिना एक राष्ट्र प्रतिस्पर्धा (1947-1980) आज़ादी के बाद के शुरुआती दशकों में भारत में खेल बड़े पैमाने पर अव्यवस्थित थे. जबकि भारतीय पुरुष हॉकी टीम वैश्विक मंच पर एक प्रमुख शक्ति थी, 1948 और 1952 ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीता, और पहलवान खाशाबा जाधव ने 1952 में भारत का पहला व्यक्तिगत ओलंपिक पदक हासिल किया, एक व्यापक राष्ट्रीय खेल नीति अनुपस्थित थी।

1954: अखिल भारतीय खेल परिषद (एआईसीएस): सरकार ने खेल मामलों पर सलाह देने, संघों का समर्थन करने और कुलीन एथलीटों के लिए धन प्रदान करने के लिए एआईसीएस की स्थापना की। हालांकि इसका असर सीमित ही रहा.

1961: नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स ( एन एस एन आई एस): पटियाला में स्थापित, एन एस एन आई एस को वैज्ञानिक आधार पर खेल विकसित करने और विभिन्न विषयों में ट्रेन कोच बनाने के लिए बनाया गया था। टर्निंग प्वाइंटः 1982 एशियाई खेल और पॉलिसी फ्रेमवर्क का जन्म नई दिल्ली में 1982 के एशियाई खेलों की मेजबानी एक महत्वपूर्ण क्षण था। इसने न केवल राष्ट्रीय जागरूकता और उन्नत बुनियादी ढांचे को बढ़ावा दिया, बल्कि सरकार को एक समर्पित खेल विभाग बनाने के लिए उत्प्रेरित किया। इससे खेल विकास के लिए अधिक संरचित दृष्टिकोण हुआ।

1984: राष्ट्रीय खेल नीति (एनएसपी): बुनियादी ढांचे में सुधार, सामूहिक भागीदारी को बढ़ावा देने और अभिजात वर्ग के खेलों में मानकों को बढ़ाने के उद्देश्य से भारत की पहली आधिकारिक खेल नीति। इसने शिक्षा के साथ खेल को एकीकृत करने के महत्व पर भी जोर दिया।

** 1986: भारतीय खेल प्राधिकरण (एस ऐआई): नई नीति को लागू करने के लिए स्थापित, एस ऐआई एथलीट विकास कार्यक्रमों और खेल बुनियादी ढांचे के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार प्राथमिक निकाय बन गया। पोस्ट उदारीकरण युग और नई मिलेनियम (1990s-2010) 1991 के आर्थिक उदारीकरण, केबल टेलीविजन के उदय के साथ मिलकर, विशेष रूप से क्रिकेट के लिए खेल परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया। खेल के व्यावसायीकरण के कारण जनहित और निजी निवेश में वृद्धि हुई। हालांकि, अन्य खेलों में प्रदर्शन मामूली रहा।

2000: युवा मामलों और खेल मंत्रालय : खेल विभाग को एक पूर्ण मंत्रालय में पदोन्नत किया गया था, जो इस क्षेत्र के लिए अधिक से अधिक सरकारी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन कर रहा था।

2001: संशोधित राष्ट्रीय खेल नीतिः इस नई नीति ने सामूहिक भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

2008: अभिनव बिंद्रा का ओलंपिक गोल्डः बीजिंग ओलंपिक में शूटर का ऐतिहासिक स्वर्ण पदक एक स्मारकीय उपलब्धि थी, जो भारत के लिए पहला व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण बन गया और एथलीटों की एक नई पीढ़ी को प्रेरित किया।

2011: राष्ट्रीय खेल विकास संहिता (एन एसडीसी): यह कोड राष्ट्रीय खेल संघों (एन एस एफ) में अधिक विनियमन और व्यावसायिकता लाने के लिए पेश किया गया था, जो शासन, एंटी-डोपिंग और लैंगिक समानता जैसे मुद्दों को संबोधित करता है। आधुनिक युगः व्यवस्थित सुधार और ग्रासरूट पुश (2010-वर्तमान) पिछले दशक में सरकारी योजनाओं और निजी क्षेत्र की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ एक अधिक केंद्रित और परिणाम उन्मुख दृष्टिकोण देखा गया है। इससे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत के प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

2014: लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना ( टीओपीएस): ओलंपिक और अन्य प्रमुख कार्यक्रमों में पदक जीतने की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए कोचिंग, पोषण और उन्नत प्रशिक्षण सुविधाओं सहित व्यवस्थित समर्थन के साथ कुलीन एथलीटों को प्रदान करने के लिए यह प्रमुख कार्यक्रम शुरू किया गया था।

2017: खेलो इंडियाः इस कार्यक्रम ने जमीनी विकास की दिशा में एक बड़ी पारी को चिह्नित किया। इसका उद्देश्य देश भर में युवा प्रतिभाओं की पहचान करना, उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान करना और स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर एक मजबूत खेल संस्कृति का निर्माण करना था।

2019: फिट इंडिया मूवमेंटः एक स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई, इस पहल ने शारीरिक गतिविधि और फिटनेस को सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्य के रूप में प्रोत्साहित किया।

2020 टोक्यो ओलंपिकः टोक्यो ओलंपिक में भारत के प्रदर्शन, जिसमें नीरज चोपड़ा द्वारा भाला में एक ऐतिहासिक स्वर्ण सहित सात पदक थे, ने इन हालिया सुधारों और कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को मान्य किया।

2025: खेलो भारत नीतिः नई राष्ट्रीय खेल नीति का उद्देश्य भारत की ओलंपिक आकांक्षाओं के साथ संरेखित करना है, सामाजिक समावेश, सामूहिक भागीदारी और शिक्षा के साथ खेल के एकीकरण पर ध्यान केंद्रित करना है। मुख्य व्यक्तित्व जिन्होंने यात्रा को आकार दिया भारतीय खेलों की उल्लेखनीय यात्रा अपने एथलीटों और नेताओं के योगदान को स्वीकार किए बिना अधूरी होगी। खाशाबा जाधव और मिल्खा सिंह की अग्रणी उपलब्धियों से लेकर कपिल देव की 1983 क्रिकेट विश्व कप टीम, प्रकाश पादुकोण और विश्वनाथन आनंद की प्रतिष्ठित जीत तक, इन व्यक्तियों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया है। मैरी कॉम की हालिया सफलताएं, पी.वी. सिंधु, और नीरज चोपड़ा समर्थन के नए पारिस्थितिकी तंत्र और वैश्विक मंच पर भारतीय खेलों की क्षमता के लिए एक वसीयतनामा हैं। संक्षेप में, स्वतंत्रता के बाद से देश में खेलों की यात्रा एक धीमी लेकिन स्थिर चढ़ाई रही है। जबकि प्रारंभिक वर्षों को एक सामंजस्यपूर्ण रणनीति की कमी से चिह्नित किया गया था, पिछले कुछ दशकों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है। एक संरचित नीतिगत ढांचे, निवेश में वृद्धि और जमीनी स्तर और कुलीन विकास पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने के साथ, भारत अब एक दुर्जेय खेल राष्ट्र बनने की राह पर है।

# अगर सरकारी स्कूल फ्री हैं तो हम अपने बच्चों को वहां क्यों नहीं भेजते?

विजय गर्ग

एक बच्चे को सरकारी स्कूल में भेजने का निर्णय, भले ही यह मुफ़्त हो, कई माता-पिता के लिए एक जटिल है और विभिन्न कारकों से प्रभावित है। जबकि सामर्थ्य एक प्रमुख लाभ है, माता-पिता अक्सर इसे शिक्षा की गुणवत्ता और समग्र स्कूल वातावरण के बारे में अन्य चिंताओं के खिलाफ तौलते हैं।

खराब गुणवत्ता और पुराने बुनियादी ढांचे के कारण अक्सर मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा की अनदेखी की जाती है कक्षा 5 में केवल 25.9% सरकारी स्कूल के छात्र कक्षा 2-स्तरीय पाठ पढ़ सकते हैं माता-पिता निजी स्कूली शिक्षा को बेहतर नौकरी की संभावनाओं और अंग्रेजी प्रवाह के साथ जोड़ते हैं मुफ्त या न्यूनतम शुल्क के बावजूद, भारत में पब्लिक स्कूल छात्रों को आकर्षित करने के लिए संघर्ष करते हैं। यहां माता-पिता निजी स्कूलों में आते रहते हैं और डेटा क्या कहता है। भारत में सरकारी स्कूल मुफ्त शिक्षा, मध्याह्न भोजन और यहां तक कि छात्रवृत्ति भी प्रदान करते हैं। फिर भी, कई माता-पिता, विशेष रूप से मध्यम आय वाले परिवारों के लिए अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में भेजने का विचार भी विचार नहीं है। यहां कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं कि माता-पिता अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में न भेजने का विकल्प क्यों चुन सकते हैं:

शिक्षा की व्यापक गुणवत्ताः कई माता-पिता मानते हैं कि निजी स्कूल शिक्षा की उच्च गुणवत्ता प्रदान करते हैं। यह विभिन्न कारकों के कारण हो सकता है, जिसमें बेहतर प्रशिक्षित शिक्षक, अधिक कठोर पाठ्यक्रम और अकादमिक उत्कृष्टता पर अधिक ध्यान केंद्रित करना शामिल है। उन्हें डर हो सकता है कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता उपपार है और वे अपने बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं या भविष्य के करियर के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं करेंगे।

संसाधनों और बुनियादी ढांचे की कमीः सरकारी स्कूलों को कभी-कभी अपर्याप्त सुविधाओं के रूप में देखा जाता है। इसमें पुराने या खराब बनाए गए क्लासरूम, कंप्यूटर और लैब जैसी आधुनिक तकनीक की कमी और अतिरिक्त गतिविधियों के लिए सीमित संसाधन शामिल हो सकते हैं। इसके विपरीत, निजी स्कूल अक्सर आधुनिक बुनियादी ढांचे, अच्छी तरह से सुसज्जित सुविधाओं और खेल, संगीत और कला जैसे कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला का दावा करते हैं।

# भाषाई विविधता का सौंदर्य

विजय गर्ग

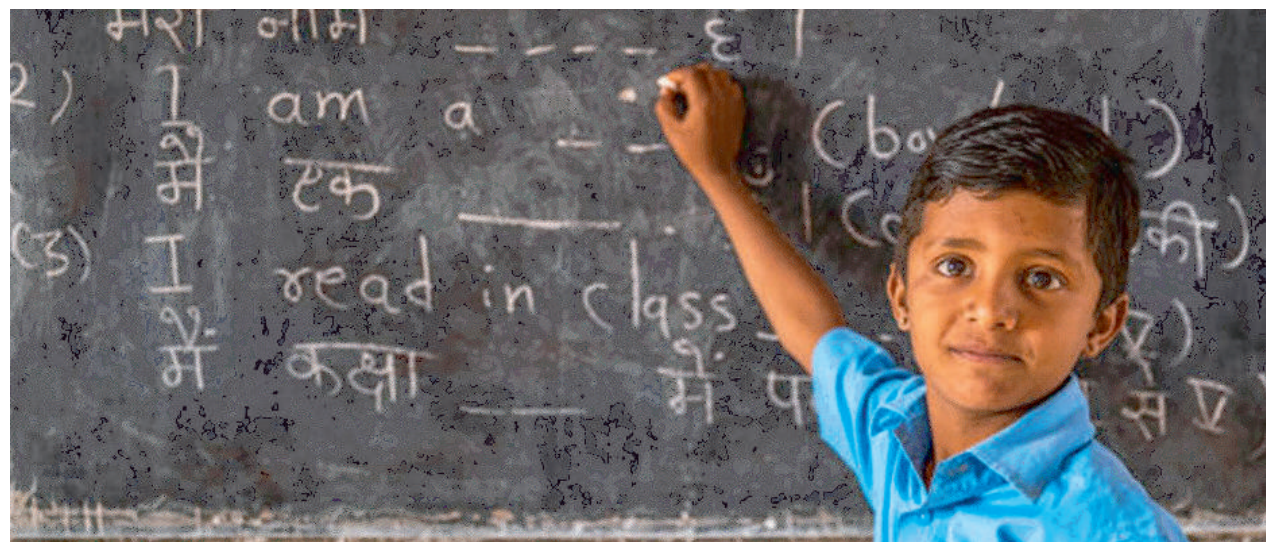


भारत को विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। यहां सांस्कृतिक वैविध्य का अनूठापन है।

देश में संस्कृति के कई पहलू जैसे खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन और बोली-भाषा में भिन्नता के स्वरूप का सौंदर्य देखने को मिलता है। भाषा किसी संस्कृति की संवाहिका होती है और यह संस्कृति के सौंदर्य को निखारती है। किसी एक भाषा को जानना वहां की पूरी संस्कृति से परिचय करना होता है। हाल के दिनों में महाराष्ट्र में भाषाई विवाद को तूल दिया गया, जिसके बाद कई तरह के सवाल उठे। अभी भी बाजार में, ट्रेन और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर इस तरह के विवाद देखने को लगातार मिल रहे हैं। इससे पहले बंगलुरु जैसे शहर में भी स्थानीय भाषा को लेकर विवाद हो चुके हैं, जहां बहुत बड़ी आबादी वहां की मूल निवासी नहीं है। राजनीति से प्रेरित होकर तमिलनाडु सदैव हिंदी का विरोध करता रहा है। ऐसे में भाषाएं अगर एक- दूसरे की विरोधी होने लगेंगी तो वैविध्य में जो सौंदर्य रहा है, जिस वजह से भारत को विविधताओं का का अनुपम देश कहा जाता है, उस छवि को नुकसान होगा और सांस्कृतिक रूप से हम कमजोर होंगे। इसके पीछे कई कारण हैं, जिन पर चर्चा करना आवश्यक गया है।

बहुधा ऐसे विवाद राजनीति से प्रेरित होते हैं। महाराष्ट्र में हाल में जो हुआ, उसे राजनीति के लिए भाषा के कंधे का इस्तेमाल कर और उसे अस्मिता से जोड़कर सामान्य लोगों को दिग्भ्रमित करने के प्रयास के तौर पर देखा जा सकता है। लोगों को धमकाने और मारपीट करने वाले विशेष राजनीतिक दल के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। जाहिर है कि वे सत्ता के केंद्र में नहीं करते हुए दिखना उनकी जरूरत है। सरकार जब तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को पढ़ाने के लिए कह रही है तो किसी भी कारण उसका विरोध करना मानो उनका नैतिक दायित्व बन जाता है। महाराष्ट्र में पहली से पांचवीं कक्षा तक हिंदी भाषा को मराठी और अंग्रेजी बाद तीसरी भाषा के रूप में अनिवार्य रूप से पढ़ाए जाने को लेकर यह विवाद शुरू हुआ और अब यह पूरी तरह से राजनीतिक हो चुका है। सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाते हुए अपनी अधिसूचना में हिंदी को तीसरी भाषा के रूप अनिवार्य कर दिया था। हालांकि, विवाद के बाद अनिवार्य शब्द को हटा लिया गया।

मराठी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पहली से पांचवीं कक्षा तक के लिए हिंदी को तीसरी भाषा के में पढ़ाया जाएगा। यहां एक अच्छी लिए बात यह रही कि अगर विद्यार्थी हिंदी अतिरिक्त किसी अन्य भारतीय भाषा को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ना चाहते हैं, तो उन्हें इसकी अनुमति दी जाएगी, बशर्ते ऐसे विद्यार्थियों की संख्या बीस से कम न हो। हिंदी की अनिवार्यता को लेकर अन्य अस्मिताएं जागृत हो जाती हैं, लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व को लेकर इस तरह के विवाद प्रायः नहीं देखने को मिलते इसके पीछे एक कारण तो देश की राजनीति का बड़ा हिस्सा हिंदी क्षेत्र का है, इसलिए राजनीतिक रूप से खतरा हिंदी क्षेत्र से लगता । जबकि अंग्रेजी भारतीय भाषा न होने के कारण अस्मिता संबंधी कोई प्रश्न इससे जुड़ नहीं पाता और यही कारण है कि अंग्रेजी इस मामले में सुरक्षित रहती है।

क्षेत्रीय भाषाओं को लेकर यह मुद्दा भावनाओं से भी जुड़ जाता है, इसलिए सामान्य भोले-भाले लोगों को जब यह बात कह कर प्रभावित किया जाता है कि आप अपने ही क्षेत्र में धीरे-धीरे भाषाई अल्पसंख्यक हो जाएंगे, तो उनका डर स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। डर का अपना मनोविज्ञान होता है, जो बहुत तेजी से कार्य करता है। साथ ही उनके अंदर यह भाव भी भरा जाता है कि दूसरी भाषा के लोग आपके क्षेत्र के संसाधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं और आपकी नौकरियों पर अधिकार जमा रहे हैं। यह सब तब हो रहा है, जब संविधान पूरे देश में निर्बाध रूप से घूमने, रहने और रोजगार पाने आदि का अधिकार देता है।

इस विवाद का दूसरा पहलू भी महत्त्वपूर्ण है, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। जब त्रिभाषा सूत्र को व्यवहार में लाया जा रहा था तो उत्तर भारत में हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त लगभग सभी जगहों पर विद्यार्थी तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ रहे थे। यह विद्यालयों में आम व्यवहार रूप में अपनाया गया और पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृत पढ़ी जाती रही। इस बात पर भी गौर करना जरूरी है कि जिन दक्षिण भारतीय लोगों द्वारा हिंदी का विरोध दर्ज कराया जाता है, उनकी भाषा को उत्तर भारतीयों द्वारा कभी सीखने का गंभीर प्रयास नहीं किया गया। यह एक प्रमुख कारण रहा, जिस वजह से हिंदी क्षेत्र ने अपना भरोसा कायम नहीं किया और जब भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की बहस चली, तो सदैव वहां से तीव्र प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय लोग एक-दूसरे की संस्कृति से कम ही परिचित रहे।

इतिहास में अगर देखा जाए तो आजादी से पूर्व हिंदी से इतर क्षेत्रों के बड़े नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में समर्थन दिया। सबसे पहला नाम महात्मा गांधी का है। इसके अलावा बंगाल में केशव चंद्र सेन, दक्षिण में मोदुरी सत्यनारायण, महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक और वीर र ने भी हिंदी की ही वकालत की। यही एक भाषा थी, जो सबको जोड़ सकती थी, लेकिन आजादी मिलने के बाद इसे भुला दिया गया और हिंदी की राष्ट्रभाषा की मांग की स्थिति कमजोर होती चली गई। अगर वर्ष 2011 1 को देखें तो 43 फीसद लोगों की प्राथमिक भाषा हिंदी सावरकर की जनगणना की है, लेकिन राष्ट्रभाषा वाला पहलू अब राजनीति से प्रेरित हो गया है। इस बार की जनगणना जो होने वाली है, उसमें इसकी संभावना। थोड़ी सकती है, क्योंकि हिंदी क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। यों भाषा का कार्य जोड़ने का है, लेकिन इसे सही दिशा नहीं दी जाए तो यही भाषा तोड़ने का भी कार्य कर सकती है। जैसा अभी हाल के विवादों में देखने को भी मिल रहा है। एक जिम्मेदार नागरिक के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा के साथ-साथ दूसरे की भाषा का सम्मान करें। सहअस्तित्व का भाव हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा और इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है। अपनी भाषा से हम अपनी संस्कृति का परिचय प्राप्त करते हैं. हैं, तो दूसरी भाषा से दूसरी संस्कृति का यह क्रम हमें देश की अन्य समृद्ध संस्कृतियों से परिचय का अवसर देता है। इससे खुद को और बेहतर बनाने का मार्ग भी खुलता है।

भाषा के नाम पर अगर इस तरह के विवाद आगे बढ़ते जाएंगे तो वैविध्य का सौंदर्य धीरे-धीरे नष्ट होता जाएगा जिस विविधता की वजह से भारत दुनिया भर में जाना जाता है, वह साख खत्म हो जाएगी। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया तो वैसे भी विविधता को नष्ट कर सब कुछ एक तरह का कर देने में कोई कसर नहीं छोड़ रही। ऐसा न हो कि विविधता में एकता महज एक खोखला नारा बनकर रह जाए, इसलिए हम सभी को उदारमन से एक-दूसरे की भाषा का सम्मान करना चाहिए। साथ ही यह कोशिश करनी चाहिए कि अपनी भाषा के अतिरिक्त एक और अन्य भारतीय भाषा अवश्य सीखी जाए।

# पेड़ लगाना पर्यावरणीय गुण के अंतिम कार्य की तरह लगता है

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन अब दूर का पूर्वानुमान नहीं है; यह उन तरीकों से दिखाई देने लगा है जिन्हें हम सभी महसूस कर सकते हैं। ग्रीष्मकाल कठोर होता है, सर्दियाँ कम अनुमानित होती हैं, और प्राकृतिक आपदाएँ अधिक बार होती हैं। इससे चिंतित, कई लोग अपना काम करने की कोशिश कर रहे हैं: पेड़ लगाना, कचरे को कम करने के लिए पुराने कपड़े पहनना और यहां तक कि ऊर्जा बचाने की उम्मीद में पुराने ईमेल को हटाना। इन दिनों, किसी को यह कहना असामान्य नहीं है कि वे ग्रह की मदद करने के लिए थोड़े कदम के रूप में सोमवार को मीटलेस हो गए हैं। लोग इसके बारे में पोस्ट करते हैं, इसके बारे में बात करते हैं, और सही काम करने की एक शांत भावना महसूस करते हैं। लेकिन अगर हम एक पल के लिए रुकते हैं, तो एक सौम्य प्रश्न सतह पर आना शुरू हो जाता है: क्या यह वास्तव में पृथ्वी की मदद कर रहा है, या यह ज्यादातर हमें अपने बारे में बेहतर महसूस करने में मदद कर रहा है? आज, हमारे पास इस बढ़ती प्रवृत्ति के लिए एक शब्द भी है जो ग्रह की मदद करने के लिए बहुत कम करते हुए पारिस्थितिक रूप से गुणी दिखाई देता है। इसे ग्रीनवाशिंग कहा जाता है।

**ग्रीनवाशिंग का सच**

ग्रीनवाशिंग को समझने के लिए, शब्द पर ही विचार करें। सफेदी की तरह, जो उन्हें साफ किए बिना दाग को कवर करता है, या ब्रेनवॉशिंग, जो वास्तविकता को भ्रम के साथ बदल देता है, ग्रीनवाशिंग तब होता है जब पर्यावरण के अनुकूल दिखने के लिए कुछ बनाया जाता है, भले ही यह पर्यावरण के लिए बहुत कम या कोई वास्तविक लाभ नहीं लाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दशकों से, हमें बताया गया है कि पर्यावरण खतरे में है। यह संदेश घरों, स्कूलों और यहां तक कि बच्चों की पाठ्यपुस्तकों तक पहुंच गया है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोग, और यहां तक कि कंपनियां, यह देखने के लिए एक शांत दबाव महसूस करती हैं कि वे ग्रह की परवाह करते हैं, चाहे वे वास्तव में करें या नहीं। वे छोटे, प्रतीकात्मक कार्य करते हैं और उन्हें अपनी चिंता के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं। लेकिन जब इस तरह के कृत्य खोखले होते हैं, तो इरादा प्रदर्शन बन जाता है, समाधान नहीं। आज उत्पादों पर छपे लेबल ₹सीएफसी-फ्रीः को लें। कभी ओजोन परत के लिए हानिकारक सीएफसी पर दशकों पहले प्रतिबंध लगा दिया गया था।

उनकी अनुपस्थिति पर प्रकाश डालना अब नवाचार नहीं है; यह अनुपालन है। फिर भी, यह इको-चेतना के रूप में परेड है। या प्लास्टिक के बजाय कागज में लिपटे मांस पर विचार करें और ₹पर्यावरण के अनुकूलः ब्रांडेड पैकेजिंग भले ही बदल गई हो, लेकिन मांस सबसे पर्यावरणीय रूप से हानिकारक उत्पादों में से एक है। एक मामूली ट्वीक, और उत्पाद को टिकाऊ के रूप में पारित किया जाता है। कुछ कंपनियां अपने कार्यालय अपशिष्ट रीसाइक्लिंग को भी बढ़ावा देती हैं, जबकि उनके मुख्य संचालन बड़े पैमाने पर ग्रह को नुकसान पहुंचाते रहते हैं। ये वास्तविक समाधान नहीं हैं; वे वास्तव में बहुत कुछ बदले बिना जिम्मेदार दिखने के तरीके अधिक पसंद करते हैं।

**पेड़ों का इको भ्रम**

कई लोगों के लिए, एक पेड़ लगाना पर्यावरणीय गुण के अंतिम कार्य की तरह लगता है। लेकिन यह वास्तव में कितना बदलता है? मान लीजिए कि पेड़ जीवित रहता है, मजबूत होता है, और 20 साल या उससे अधिक जीवन जीता है। उस समय, यह लगभग 400 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर सकता है। प्रभावशाली लगता है, जब तक आप यह नहीं मानते कि औसत मध्यम वर्ग का भारतीय हर साल 5,000 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करता है। उसी दो दशकों में, यह 100,000 किलोग्राम है। यहां तक कि सौ पेड़ लगाने से भी पैमाने की भरपाई नहीं होती है, न कि जब हमारे दैनिक जीवन को उन प्रणालियों द्वारा संचालित किया जाता है जो उन जंगलों को नष्ट कर देते हैं जिन्हें हम बदलने की कोशिश कर रहे हैं। और इनमें से कई लगाए गए पेड़ों को कृत्रिम सिंचाई की आवश्यकता होती है, जो बदले में अधिक उत्सर्जन पैदा करता है। इसलिए जब हम अपने पौधे को नर्स करते हैं, तो जैव विविधता और जलवायु स्थिरता से भरपूर विशाल आत्मनिर्भर जंगलों को काट दिया जाता है।

हमें खुद पेड़ों को काटने की जरूरत नहीं है; हमारे जीने का तरीका यह सुनिश्चित करता है कि ऐसा होता है। जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को अधिक खेत की मांग करते हुए भोजन, आश्रय और कपड़े की आवश्यकता होती है। खेत अंततः जंगलों से आते हैं। जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे खपत होती है, खासकर मांस की। कुछ लोग महसूस करते हैं कि दुनिया में लगभग 70 प्रतिशत अनाज वध के लिए उठाए गए जानवरों को खिलाने के लिए उगाया जाता है। और उस अनाज को उगाने के लिए और अधिक जंगलों को साफ किया जाता है। आप बड़े पैमाने पर संसाधनों के निष्कर्षण पर निर्मित जीवन नहीं जी सकते हैं और इसे एक पौधा के साथ रद्द कर सकते हैं।

**कम करना सबसे ज्यादा हम कर सकते हैं**

यदि यह हमारे जीने का तरीका है जो विनाश को बढ़ावा देता है, तो शायद सबसे जरूरी कदम यह है कि हम और अधिक न करें, बल्कि जिस तरह से हम करते हैं उसे जीना बंद करें। नए समाधान नहीं जोड़ने के लिए, लेकिन वापस लेने के लिए। यहां तक कि विज्ञान भी हमें इस दिशा में इंगित करता है। ऊष्मप्रवैगिकी में, एन्ट्रापी नामक एक सिद्धांत होता है, जो हमें बताता है कि किसी भी प्रणाली में विकार बढ़ जाता है। जब हम कार्य करते हैं तो हम प्रदूषित करते हैं, और जब हम उस कार्य को पूर्ववत करने का प्रयास करते हैं तो हम फिर से प्रदूषित करते हैं। इसलिए, एकमात्र वास्तविक समाधान यह है कि प्रकृति को फिर से सांस लेने की अनुमति दें।

**हमें कहां रुकने की जरूरत है?**

यह समझने के लिए कि हमें क्यों रुकना चाहिए, हमें इस संकट को देखने की जरूरत है कि यह वास्तव में क्या है: अंतहीन उत्पादन और अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि से प्रेरित जीवन। ये अमूर्त विचार नहीं हैं; वे सीधे बढ़ते कार्बन स्तर को ईंधन देते हैं। जितना अधिक हम उत्पादन और उपभोग करते हैं, उतना ही अधिक नुकसान होता है। फिर भी, हम अतिरिक्त महिमा जारी रखते हैं। दस बच्चों के साथ एक घर और बढ़ती हुई संपत्ति को ₹धन्यः के रूप में देखा जाता है, हालांकि यह पहले से ही फैला हुआ ग्रह है। और जो लोग ओवरप्रोडक्शन से लाभ उठाते हैं, वे हमारी इच्छाओं को आकार देते हैं। वे मीडिया और होर्डिंग के मालिक हैं। सबसे पहले, वे हमें एक सपना बेचते हैं। फिर, वे हमें इसका पीछा करने के लिए उत्पाद बेचते हैं। हम न केवल पैसा बल्कि अपने दिमाग को सौंपते हैं।

**बहुत देर होने से पहले वापस मुड़ना**

जैसा कि संतों ने लंबे समय से कहा है, आप एक कांटे के पेड़ के बीज नहीं बो सकते हैं और मीठे फल की उम्मीद कर सकते हैं। यह संकट भी इस बात का परिणाम है कि हमने लंबे समय से प्रशंसा करने, अनुसरण करने और जश्न मनाने के लिए क्या चुना है: जो सबसे अधिक उपभोग करते हैं। जब तक हम ज्ञान के लिए धन और सफलता के लिए अतिरिक्त गलती करते हैं, तब तक पृथ्वी कीमत चुकाती रहेगी। हम में से अधिकांश सबसे बड़े उत्सर्जक नहीं हो सकते हैं, लेकिन हमने उन लोगों को अनुमति दी है जो हमारी आकांक्षाओं को आकार देते हैं। हमने सिर्फ उनके उत्पाद नहीं खरीदे, हमने उनके जीवन के तरीके में खरीदारी की। वह शांत समर्पण हमारा असली अपराध है। जब तक हम उन्हें मूर्तिपूजा करना बंद नहीं करते, जब तक कि हम उन कहानियों से बाहर नहीं निकलते, जो उन्होंने हमें बेची हैं, तब तक हमारी छोटी हरी हरकतें बहुत कम महसूस करती रहेंगी। पृथ्वी को एक और लगाए गए पेड़ या कागज के भूसे की आवश्यकता नहीं है; यह हमें रोकने और पूछने की जरूरत है: क्या मैं वास्तव में जागता हूं कि मैं कैसे रहता हूं, या सिर्फ उन विकल्पों से दिलासा देता हूं जो सही लगते हैं लेकिन नुकसान पहुंचाते हैं?

# खुदीराम की मौत से पहले की प्रसन्नता और निर्भीकता ने अंग्रेजी शासन को झकझोर दिया था' (11 अगस्त खुदीराम बोस के शहादत दिवस पर विशेष)

सुनील कुमार महला

भारत की स्वतंत्रता के लिए अपनी पूरी जिंदगी समर्पित करने वाले, बहुत ही बेबाक, अदम्य साहसी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीर नायक, भारत के सबसे कम उम्र के क्रांतिकारियों में से एक, तथा बंगाल प्रेसीडेंसी( वर्तमान में पश्चिम बंगाल) के एक भारतीय राष्ट्रवादी खुदीराम बोस को 1908 में एक ब्रिटिश मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या के प्रयास के आरोप में मुज्जफरपुर की एक जेल में फांसी दे दी गई थी। पाठकों को बताता चलूं कि आप भारत माता के वह वीर सपूत थे, जिनको मात्र 18 साल, 8 महीने और 8 दिन की बहुत ही छोटी सी उम्र में ही अंग्रेजों द्वारा फांसी दे दी गई थी। पाठकों को बताता चलूं कि कुछ इतिहासकार आपको देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाला सबसे कम उम्र का क्रांतिकारी देशभक्त मानते हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि आपका जन्म बंगाल में मिदनापुर के हबीबपुर गांव में 3 दिसंबर 1889 को त्रैलोक्यनाथ बोस के यहां हुआ था। आपकी माताजी का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी था। आपके, आपका नाम 'खुदीराम' नाम पड़ने की यदि हम यहां पर बात करें तो, आपके जन्म से पहले आपके दो भाइयों की बीमारी की चलते मृत्यु हो जाने के कारण आपके डरे हुए माता-पिता ने अपने तीसरे बेटे की जान बचाने के लिए एक टोटका अपनाया था, जिसमें बड़ी बहन ने चावल के बदले आपको( खुदीराम को) खरीद लिया। वैसे भी बंगाल में चावल को 'खुदी' कहा जाता था, यही वजह रही कि आपका नाम खुदीराम पड़ गया। आप धोती पहनते थे। जब आप बहुत छोटे थे, तभी आपके माता-पिता का निधन हो गया था और आपकी बड़ी बहन ने आपका लालन-पालन किया था। मैट्रिक की परीक्षा से पहले ही 9 वीं कक्षा के बाद ही आपने स्कूल छोड़ दिया था। कहते हैं कि स्कूल के दिनों से ही आप अंग्रेजों के खिलाफ विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने लग गए थे और अनेक जलसों, जुलूसों में शामिल होकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ नारे लगाते थे। आप 'रिवॉल्यूशनरी पार्टी' के सदस्य बने और 'वंदे मातरम्' पर्चे बांटने में भी आपने एक बड़ी भूमिका निभाई। उल्लेखनीय है कि 1906 में मिदनापुर में एक मेले का आयोजन किया गया था।उस समय सत्येंद्रनाथ बोस ने 'वन्दे मातरम्' शीर्षक से अंग्रेज़ी शासन का विरोध करते हुए एक पर्चा छपवाया था और खुदीराम बोस को मेले में इस पर्चे के वितरण की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। यहां यह भी गौरतलब है कि वर्ष 1905 में बंगाल का विभाजन होने के बाद खुदीराम बोस ने सत्येंद्रनाथ बोस के नेतृत्व में अपने क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत की थी।उपलब्ध जानकारी के अनुसार 1905 में बंगाल विभाजन( 19 जुलाई, 1905 को लॉर्ड कर्ज़न द्वारा विभाजन) के विरोध में चलाए गए आंदोलन में आपने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। कहते हैं कि उस समय बंगाल ही नहीं पूरे भारत के लोगों के मन में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आक्रोश भड़क उठा था और हर जगह विरोध मार्च, विदेशी सामान के बहिष्कार और अख़बारों में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ अख़बारों में जैसे लेखों की एक तरह से बाढ़ सी आ गई थी। जानकारी के अनुसार उसी ज़माने में स्वामी विवेकानंद के भाई भूपेंद्रनाथ दत्त ने 'जुगाँतर' अख़बार में एक लेख लिखा, जिसे सरकार ने राजद्रोह माना। कलकत्ता प्रेसिडेंसी के मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफ़ोर्ड ने न सिर्फ़ प्रेस को ज़ब्त करने का आदेश दिया, बल्कि भूपेंद्रनाथ दत्त को ये लेख लिखने के आरोप में एक साल की कैद की सज़ा सुनाई। इस फ़ैसले ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विद्रोह में आग में घी का काम किया। 28 फरवरी 1906 को आप( खुदीराम बोस) गिरफ्तार कर लिए गए, लेकिन आप कैद से भाग निकले और लगभग 2 महीने बाद आपको अप्रैल में फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में, 16 मई 1906 को आपको जेल से रिहा कर दिया गया। अपने साथी प्रफुल्लचंद चाकी के साथ मिलकर आपने तत्कालीन सेशन जज किंग्सफोर्ड से बदला लेने की योजना बनाई थी, क्यों कि आप भारतीयों पर किंग्सफोर्ड द्वारा किए जा रहे अत्याचारों, क्रूरता ,बेरहमी और सख्ती से ख़फ़ा थे। पाठकों को बताता चलूं कि आप( खुदीराम बोस) इतने साहसी और हिम्मती थे कि आप मुकुंदापुरा (बिहार) से लेकर मुजफ्फरपुर तक बम पहुँचाने के लिए झोले में बम लेकर कई किलोमीटर( लगभग 40 किलोमीटर तक) पैदल चले थे, ताकि अंग्रेज़ों की नज़र से बच सकें। छह दिसंबर 1907 को आपने नारायगढ़ रेलवे स्टेशन पर बंगाल के गवर्नर की विशेष ट्रेन पर हमला किया, परंतु गवर्नर बच गया। सन-1908 में आपने दो अंग्रेज अधिकारियों वाट्सन और पैम्फायल्ट फुलर पर बम से हमला किया, लेकिन वे भी बच निकले।30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर में सेशन जज की गाड़ी पर आपने व चाकी ने बम फेंक दिया, लेकिन उस समय गाड़ी में जज किंग्सफोर्ड की जगह उसकी परिचित दो यूरोपीय महिला कैनेडी और उसकी बेटी सवार थी। किंग्सफोर्ड के धोखे में दोनों महिलाएं मारी गई, जिसका आपको और आपके साथी प्रफुल्ल चंद चाकी को बेहद अफसोस हुआ। हालाँकि, महात्मा गांधी ने हिंसा की निंदा की और दो निर्दोष महिलाओं की मौत पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा, 'भारतीय लोग इन तरीकों से अपनी आज़ादी नहीं जीत पाएँगे।' बाल गंगाधर तिलक ने अपने अखबार केसरी में दोनों क्रांतिकारियों का बचाव किया और तत्काल स्वराज की माँग की। इसके बाद ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने राजद्रोह के आरोप में तिलक को भी तुरंत गिरफ्तार कर लिया। आपके व आपके साथी द्वारा धोखे में कैनेडी और उसकी बेटी के मारे जाने के बाद, अंग्रेज पुलिस आपके पीछे लगी थी और वैनी रेलवे स्टेशन पर आपको घेर लिया गया। अपने को पुलिस से घिरा देख आपके साथी प्रफुल्लचंद चाकी ने खुद को गोली मारकर अपनी शहादत दे दी, जबकि आप पकड़े गए।आप पर दो महिलाओं की हत्या का मुकदमा चलाया गया। पाठकों को बताता चलूं कि आपने ( खुदीराम ने) अपनी गिरफ्तारी के बाद साफ तौर पर कहा कि आपने किंग्सफोर्ड को सजा देने के लिए बम फेंका था। इतना ही नहीं,जज कॉर्नडॉफ की अदालत सुनवाई के दौरान जब आपसे ( खुदीराम से) यह सवाल किया गया कि क्या आप( खुदीराम बोस) फांसी की सजा का मतलब जानते हो? तो आपके वकील द्वारा आपके कम उम्र का हवाला देने के बाद भी आपने जज से यह बात कही थी कि वह ( खुदीराम बोस) जज( कॉर्नडॉफ) को भी बम बनाना सिखा सकते हैं, यह वास्तव में आपकी बेबाकी और आपके साहस को दर्शाता है। उनके बारे में

ब्रिटिश अखबार 'द इंग्लिशमैन' ने लिखा—खुदीराम की मौत से पहले की प्रसन्नता और निर्भीकता ने हमें भी झकझोर दिया है।' बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि आपको 11 अगस्त 1908 को अंग्रेजी सरकार द्वारा फांसी की सजा सुनाई गई।आपकी शहादत के बाद बड़े स्तर पर धोती पहनने का चलन चल पड़ा था। पाठकों को बताता चलूं कि बंगाल के कई बुनकर आज भी खुदीराम लिखी धोतियां बनाकर तैयार करते हैं। अंत में यही कहूंगा कि आप भारत माता के एक वीर सपूत थे और आपने अपने छोटे से जीवन से यह साबित कर दिया कि देश सेवा के लिए आयु मायने नहीं रखती है, और राष्ट्र के लिए समर्पण की कोई भी सीमा या हद नहीं होती है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम को एक नवीन ऊर्जा प्रदान करने वाले अदम्य साहसी, कर्मनिष्ठ और सच्चे देशभक्त खुदीराम बोस को बारंबार नमन और विनम्र श्रद्धांजलि।

# (ट्रांसफर का इंतज़ार: 9 साल, 9 बहाने)

*हरियाणा में टीचर ट्रांसफर: सरकारी सिस्टम का अमर रोग*

हरियाणा में शिक्षक ट्रांसफर: वादा, बहाना और थकान

जब एक शिक्षक रोज़ 150 किलोमीटर सफर करता है, तो वह सिर्फ सड़क नहीं नापता—वह अपनी उम्र, अपने रिश्ते और अपने सपनों को भी नापता है।₹ हरियाणा की ट्रांसफर व्यवस्था वैसी ही है जैसे किसी घर में पुराना अलार्म घड़ी—जो साल में एक-दो बार सही बज जाती है, बाकी समय बस टिक-टिक करती रहती है। फर्क बस इतना है कि यहां गलती से भी अलार्म बज जाए, तो सरकार चौंककर कहती है—"अरे! यह तो अपने आप हो गया, अगली बार ध्यान रखेंगे कि जल्दी न हो।"

*-डॉ. सत्यवान सौरभ*

हरियाणा में शिक्षक ट्रांसफर एक ऐसी बीमारी बन चुका है, जिसका कोई इलाज सरकार के पास नहीं, और शायद खोजने की कोशिश भी नहीं। यह बीमारी केवल प्रशासनिक फाइलों में नहीं, बल्कि हजारों शिक्षकों के दिलों, दिमाग और घरों में पसरी हुई है। बीते नौ साल से इसका लक्षण एक ही है—वादा, तारीख, बहाना, फिर नई तारीख, और फिर एक और बहाना। सरकारें आती-जाती रहीं, चेहरों पर बदलाव होता रहा, पर इस बीमारी की आदत नहीं बदली।

सरकार के लिए यह सिर्फ एक प्रक्रिया है—कंप्यूटर के एमआईएस पोर्टल पर एक क्लिक, किसी फाइल को एक टेबल से दूसरी टेबल पर रखना। लेकिन एक शिक्षक के लिए ट्रांसफर का मतलब है—हर दिन 80-150 किलोमीटर का सफर खत्म होना, बीमार माता-पिता के पास लौटना, बच्चों की हंसी सुनना, या बीमार जीवनसाथी का हाथ पकड़ना। यह उसकी जीवन की दिशा तय कर सकता है, लेकिन सरकारी दृष्टि में यह बस एक "पेंडिंग केस" है, जो किसी दिन निपटा दिया जाएगा।

इस बीमारी का इलाज ढूंढने की जगह सरकार ने बहानों की एक स्थायी दुकान खोल रखी है। कभी एमआईएस पोर्टल में गड़बड़ी, कभी डेटा में विसंगति, कभी प्रक्रिया स्थगित, कभी चुनाव आचार संहिता, कभी मिड-सेशन का बहाना, तो कभी मॉडल संस्कृति स्कूलों के टेस्ट—और फिर उन्हें भूल जाना। बहानों की यह लिस्ट इतनी लंबी हो चुकी है कि अब कोई नया बहाना खोजने की भी जरूरत नहीं पड़ती—पुराने बहाने ही नए पैक में पेश कर दिए जाते हैं, जैसे पुराने अनाज में नया लेबल चिपका देना।

पिछले दिसंबर में नई सरकार आई तो शिक्षकों में उम्मीद की लौ जली। कहा गया—₹कुछ हफ्तों में ट्रांसफर हो जाएंगे।₹ शिक्षकों ने राहत की सांस ली। मार्च आया—₹थोड़ा इंतज़ार करें₹। मई—₹अब जल्दी करेंगे₹। जून, जुलाई, अगस्त—हर बार नया वादा, वही बहाना। नई सरकार ने पुराने बहाने ही नए पैकेजिंग में बेच दिए। बस डायलॉग बदल गए, नीयत वही रही।

शायद सरकार के अफसर मानते हैं कि रोज़ 80–150 किलोमीटर का सफर करने वाले शिक्षक किसी "फिटनेस मिशन" का हिस्सा हैं। सुबह 5 बजे घर से निकलना, बीएलओ ड्यूटी, पीपीपी अपडेट, मिड-डे मील का हिसाब, एक साथ तीन कक्षाओं को पढ़ाना—सरकार की नज़र में यह "वर्कआउट" है। यह अलग बात है कि इस वर्कआउट में शिक्षक की कमर और घुटने पहले जवाब दे देते हैं, फिर मन और आत्मा।

घर अब रविवार का ठिकाना बन चुका है। बच्चों की हंसी, माँ की दवाई, घर की छोटी-बड़ी जिम्मेदारियां—सब सिर्फ "सोच" में रह जाती हैं। जब शिक्षक खुद अपने बच्चों से दूर रहकर दूसरों के बच्चों को पढ़ाता है, तो यह त्याग है या मजबूरी? सरकार इसे त्याग कहकर अपनी पीठ थपथपा लेती है, लेकिन यह सच में किसी का दिल तोड़ने वाला मजबूरी का जीवन है।

संवेदनशीलता किस मंत्रालय के अधीन आती है, शायद किसी को याद नहीं। सरकारी फाइलों में ट्रांसफर बस एक डेटा कॉलम का बदलाव है, लेकिन असल में यह किसी इंसान की मानसिक शांति, पारिवारिक स्थिरता और पेशेवर प्रदर्शन का आधार है। लेकिन इन बातों का कोई कॉलम एमआईएस पोर्टल पर नहीं होता, इसलिए इनकी कोई अहमियत भी नहीं।

सरकारी जवाब हमेशा तय होता है—₹जल्दी होंगे, सिस्टम पर काम चल रहा है।₹ यह वही ₹जल्दी₹ है जिसमें 9 महीने में बच्चा पैदा हो जाता है, पर ट्रांसफर का फाइल पोर्टल से बाहर नहीं निकलता। सच तो यह है कि ट्रांसफर का बटन तभी दबता है, जब राजनीति को उसका फायदा हो। चुनाव नज़दीक आएं या किसी खास वोट बैंक को खुश करना हो, तभी प्रक्रिया अचानक तेज़ हो जाती है। बाकी समय, ₹तकनीकी कारणों₹ के ताले में शिक्षक की जिंदगी कैद रहती है।

यह समझना होगा कि शिक्षक मशीन नहीं है। उसके पास भी भावनाएँ हैं, थकावट है, परिवार है, सपने हैं। जब सरकार उसकी परेशानियों को ₹व्यक्तिगत₹ कहकर टाल देती है, तो वह केवल हतोत्साहित नहीं होता—वह धीरे-धीरे टूटने लगता है। और एक टूटा हुआ शिक्षक सिर्फ अपना मनोबल नहीं खोता, बल्कि आने वाली पीढ़ी के सपनों को भी कमजोर कर देता है।

ट्रांसफर कोई "फेवर" नहीं, बल्कि अधिकार है। इसे एक पारदर्शी, समयबद्ध और संवेदनशील प्रक्रिया में किया जाना चाहिए। परिवार, स्वास्थ्य और सामाजिक परिस्थितियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तकनीकी गड़बड़ियों और बहानों की यह पुरानी आदत खत्म होनी चाहिए।

हरियाणा की ट्रांसफर व्यवस्था उस पुराने हैंडपंप जैसी है, जो कभी पानी देता है, कभी नहीं। जब पानी आता है, लोग कहते हैं—₹देखो, काम कर रहा है।₹ और जब नहीं आता, तो कहते हैं—₹पाइपलाइन ठीक हो रही है, इंतज़ार करो।₹ सवाल है—कब तक शिक्षक अपनी जिंदगी इस सूखी पाइपलाइन के भरोसे गुज़ारेंगे?

ट्रांसफर में देरी कोई तकनीकी गलती नहीं—यह संवेदनशीलता की कमी है। जब तक सरकार यह नहीं समझेगी कि शिक्षक भी इंसान है, तब तक यह रोग अमर रहेगा। नई सरकारें पुराने इलाज को नए नाम से बेचती रहेंगी, और मरीज—यानि शिक्षक—दिन-ब-दिन कमजोर होता जाएगा।

शिक्षक का पद सम्मानित है, लेकिन यह सम्मान सिर्फ मंच पर भाषणों में नहीं, उनके जीवन में भी दिखना चाहिए। जब शिक्षक घर लौटकर अपने बच्चों के साथ खाना खा सके, बीमार माता-पिता की सेवा कर सके, या जीवनसाथी का हाथ पकड़कर मुश्किल वक्त में खड़ा रह सके, तभी शिक्षा का असली मूल्य बनेगा। वरना, हम बस आंकड़ों में "शिक्षक संतुष्ट" लिखते रहेंगे, और हकीकत में वे भीतर से खाली होते जाएंगे।

सरकार को अब सिर्फ नीति नहीं, नीयत भी बदलनी होगी। सिस्टम को यह मानना होगा कि शिक्षक कोई संसाधन नहीं, बल्कि समाज की आत्मा हैं। और जब आत्मा को रोज़-रोज़ थकाकर, तोड़कर, दूर रखकर जिंदा रखने की कोशिश की जाती है, तो न समाज बचता है, न शिक्षा।

# शहादत दिवस, 11 अगस्त 1908 : फांसी के फंदे को चूमकर शहीद हो गए खुदीराम बोस

कुमार कृष्णन

आज की तारीख़ में आम तौर पर उन्नीस साल से कम उम्र के किसी युवक के भीतर देश और लोगों की तकलीफों, और जरुरतों की समझ कम ही होती है लेकिन खुदीराम बोस ने जिस उम्र में इन तकलीफों के खात्मे के ख़िलाफ आवाज बुलंद की, वह मिसाल है जिसका वर्णन इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है।

इससे ज्यादा हैरान करने वाली बात और क्या हो सकती है कि जिस उम्र में कोई बच्चा खेलने-कूदने और पढ़ने में खुद को झोंक देता है, उस उम्र में खुदीराम बोस यह समझते थे कि देश का गुलाम होना क्या होता है और कैसे या किस रास्ते से देश को इस हालत से बाहर लाया जा सकता है। इसे कम उम्र का उत्साह कहा जा सकता है लेकिन खुदीराम बोस का वह उत्साह आज भारत में ब्रिटिश राज के ख़िलाफ आंदोलन के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है तो इसका मतलब यह है कि वह केवल उत्साह नहीं था बल्कि गुलामी थोपने वाली किसी सत्ता की जड़ें हिला देने वाली भूमिका थी। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि महज उन्नीस साल से भी कम उम्र में उसी हौसले की वजह से खुदीराम बोस को फांसी की सजा दे दी गई लेकिन यहीं से शुरू हुए सफर ने ब्रिटिश राज के ख़िलाफ क्रांतिकारी आंदोलन की ऐसी नींव रखी कि आख़िर कार अंग्रेजों को इस देश पर जमे अपने कब्जे को छोड़ कर जाना ही पड़ा।

बंगाल के मिदनापुर जिले के हबीबपुर गांव में त्रैलोक्य नाथ बोस के घर 3 दिसंबर 1889 को खुदीराम बोस का जन्म हुआ था लेकिन बहुत ही कम उम्र में उनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया। माता-पिता के निधन के बाद उनकी बड़ी बहन ने मां-पिता की भूमिका निभाई और खुदीराम का लालन-पालन किया था। इतना तय है कि उनके पलने-बढ़ने के दौरान ही उनमें प्रतिरोध की चेतना भी विकसित हो रही थी। दिलचस्प बात यह है कि खुदीराम ने अपनी स्कूली जिंदगी में ही राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। तब वे प्रतिरोध जुलूसों में शामिल होकर ब्रिटिश सत्ता के साम्राज्यवाद के ख़िलाफ नारे लगाते थे, अपने उत्साह से सबको चकित कर देते थे। यही वजह है कि किशोरावस्था में ही खुदीराम बोस ने अपने भीतर के हौसले को उड़ान देने के लिए सत्येन बोस को खोज लिया और उनके नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध मैदान में कूद पड़े थे।

तब 1905 में बंगाल विभाजन के बाद उथल-पुथल का दौर चल रहा था। उनकी दीवानगी का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उन्होंने नौवीं कक्षा की पढ़ाई भी बीच में ही छोड़ दी और अंग्रेजों के ख़िलाफ मैदान में कूद पड़े। तब रिवोल्यूशनरी पार्टी अपना अभियान जोर-शोर से चला रही थी और खुदीराम को भी एक ठौर चाहिए था जहां से यह लड़ाई ठोस तरीके से लड़ी जाए। खुदीराम बोस ने इस को कभी अपने पास फटकने नहीं दिया, 28 फरवरी 1906 को वे सोनार बांग्ला नाम का एक इश्तिहार बांटते हुए पकड़े गए लेकिन उसके बाद वह पुलिस को चकमा देकर भाग निकले। 16 मई 1906 को पुलिस ने उन्हें दोबारा गिरफ्तार कर लिया लेकिन इस बार उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। इसके पीछे वजह शायद यह रही होगी कि इतनी कम उम्र का बच्चा किसी बहकावे में आकर ऐसा कर रहा होगा लेकिन यह ब्रिटिश पुलिस के आकलन की चूक थी। खुदीराम इस उम्र में भी जानते थे कि उन्हें क्या करना है और क्यों करना है। अंग्रेजी सत्ता के ख़िलाफ उनका जुनून बढ़ता गया और 6 दिसंबर 1907 को बंगाल के नारायणगढ़ रेलवे स्टेशन पर आंदोलनकारियों के जिस छोटे से समूह ने बम विस्फोट की घटना को अंजाम दिया, उसमें खुदीराम प्रमुख थे। इतिहास में दर्ज है कि तब कलकत्ता में किंग्सफोर्ड चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट को बहुत ही सख्त और बेरहम अधिकारी के तौर पर जाना जाता था। वह ब्रिटिश राज के ख़िलाफ खड़े होने वाले लोगों पर बहुत जुल्म ढाता था। उसके यातना देने के तरीके बेहद बर्बर थे जो आख़िरकार किसी क्रांतिकारी की जान लेने पर ही ख़त्म होते थे। बंगाल विभाजन के बाद उभरे जनाक्रोश के दौरान लाखों लोग सड़कों पर उतर गए और तब बहुत सारे भारतीयों को मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड ने क्रूर सजाएं सुनाईं। इसके बदले ब्रिटिश हुकूमत ने उसकी पदोन्नति कर दी और मुजफ्फरपुर जिले में सत्र न्यायाधीश बना दिया। उसके अत्याचारों से तंग जनता के बीच काफी आक्रोश फैल गया था।

# बाल मन में राष्ट्रीय चेतना जागरण

79वें स्वतंत्रता दिवस पर भारत की एकता, अखण्डता को अक्षुण रखने के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीरों, पूरे विश्व में भारत की प्रतिष्ठा को बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए दिन-रात एक करने वाले सभी वैज्ञानिकों, शिक्षकों, सांस्कृतिक राजदूत साहित्यकारों को श्रद्धा से नमन करना कर्मकांड नहीं अपितु हम सब का कर्तव्य है। स्वाभाविक रूप से संपूर्ण राष्ट्र अपने इस कर्तव्य का पालन करेगा। इस अवसर पर देश की भावी पीढ़ी के बाल मन में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के अभियान को गति देना आवश्यक है। प्रत्येक बालक को अपनी मातृभूमि और श्रेष्ठ सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। दुनिया भर के मनोवैज्ञानिक एक स्वर में बताते हैं कि श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करने का 'सही समय' बचपन ही हो सकता है। केवल भारत ही नहीं, दुनिया का हर विवेकशील राष्ट्र अपने भावी कर्णधारों को स्कूली शिक्षा के साथ राष्ट्रभक्ति के गुणों से भी समृद्ध करने का प्रयास करता है। जापान का वह प्रसंग सर्वविदित है जब स्वामी रामतीर्थ वहां के एक विद्यालय में गए। स्वामी जी ने एक विद्यार्थी से पूछा, 'बच्चे, तुम किस धर्म को मानते हो? छात्र का उत्तर था, 'बौद्ध धर्म।' स्वामी जी ने फिर पूछा, 'बुद्ध के विषय में तुम्हारे क्या विचार हैं?' विद्यार्थी ने उत्तर दिया, 'हर रिश्ते नाते में प्रथम बुद्ध हमारे भगवान हैं।' इतना कह कर उसने अपने देश की प्रथा के अनुसार भगवान बुद्ध को सम्मान के साथ प्रणाम किया। अनेक प्रश्नों के अंत में स्वामी जी ने पूछा, 'बेटा, अगर किसी दूसरे देश से जापान को जीतने के लिए एक भारी सेना आए और उसके सेनापति बुद्ध हों तो उस समय तुम क्या करोगे?' इतना सुनते ही छात्र का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। अपनी लाल-लाल आंखों से स्वामी रामतीर्थ को घूरते हुए उसने जोश से कहा, 'तब मैं अपनी तलवार से बुद्ध का सिर काट दूंगा।'

समाज और राष्ट्र के भावी स्वरूप की पृष्ठभूमि तैयार करने में श्रेष्ठ बाल साहित्य और शैक्षिक पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकार ने शिक्षा नीति में अनेक महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं लेकिन स्कूली पाठ्यक्रम में देश प्रेम और संस्कृतिके प्रति जागृत करने वाली सामग्री का अभाव दिखाई देता है। बदलते परिवेश में समाज- परिवार भी अपने बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार और विचार रूपी खाद प्रदान करने के प्रति बहुत सजग नहीं है। इसी कारण परिस्थितियां हमारे बच्चों को मोबाइल, इंटरनेट गेम आदि की ओर धकेल रही हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि परिवारों में साहित्य और संस्कृति से संबंधित साहित्य का पठन-पाठन लगभग बंद हो गया है। ऐसे में हमारे बच्चे भी बाल साहित्य की पत्रिकाओं से दूर गेम डाउनलोड करने अथवा यू-ट्यूब पर वह सब देख-सुन रहे हैं जो इस आयु में उनसे दूर होना चाहिए था। ऐसा नहीं है कि इन परिस्थितियों और उनके विस्फोटक परिणाम की जानकारी न हो। परंतु न जाने क्यों अभिभावक, शिक्षक, समाज, सरकार सब लगभग मौन हैं। कटु सत्य तो यह कि कुछ पत्रिकाओं को छोड़ अधिकांश साहित्यकार भी देश प्रेम और संस्कृति से संबंधित सरस रचनाएं लिखना भूल दिखावटी प्रेम और तथाकथित आधुनिकता के रंग में रंगा भ्रमित है। ऐसे में जापान जैसी भावना हमारे छात्र में भला कैसे संभव है? उसके लिए तो अपने स्कूली पाठ्यक्रम से बाल-साहित्य, लोक-व्यवहार, खेलों, गीतों, फिल्मों, टीवी चैनलों पर प्रसारित किये जा रहे कार्यक्रमों को राष्ट्रीय चेतना से समृद्ध करना होगा। राष्ट्रीय चेतना के विकास में बाधक उपसंस्कृति को हतोत्साहित करना होगा। ज्ञातव्य है कि महात्मा गांधी भी बच्चों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के प्रबल पक्षधर थे इसलिए उन्होंने बच्चों के लिए धार्मिक संदेशों व शिक्षा पर आधारित बाल पोथी और नीति धर्म नामक पुस्तकें तैयार की। आश्चर्य है कि हम पश्चिम की तरफ भाग रहे हैं लेकिन पश्चिम भारत के श्रेष्ठ गुणों को धारण करने की दिशा में अग्रसर है। एक विद्यार्थी के रूप में मुझे विश्व के अनेक देशों में जाने का अवसर मिला। लगभग हर देश में मुझे सम्मान से भारतीय (इण्डियन) के रूप में पहचान 'नमस्ते इण्डिया' सुनने को मिला। विश्व फैशन नगरी मिलान (इटली) के अनुभव ने गौरवांवित होने का अवसर प्रदान किया। सात समुद्र पार, अपने देश की सीमाओं से हजारों मील दूर एक अनजान व्यक्ति के मुख से भारत का गौरव गान सुनना रोमांचित करने वाला क्षण था। वह हमारे भारत की माटी, हमारे पूर्वज ऋषियों और उनके द्वारा विकसित संस्कृति का अभिषेक था।

*विनोद बब्बर*

# भारत अमेरिका टैरिफ वार

शिवानन्द मिश्रा

कहते हैं बाज़ जब शिकार करता है तो सबसे पहले ऊँचाई पर चढ़ता है, फिर बिना आहट के झपट्टा मारता है। आज भारत ठीक उसी मोड़ पर खड़ा है। अमेरिका ने भारत से होने वाले आयात पर टैरिफ को 25% से बढ़ाकर 50% कर दिया है। कुछ लोग कह रहे हैं कि प्रधानमंत्री जी को तुरंत बात करनी चाहिए, अमेरिका से दो टूक कह देना चाहिए कि ये हमें मंज़ूर नहीं पर समझदारी इसी में है कि इस वक्त हम चुप रहें लेकिन हाथ पर हाथ धर कर नहीं बल्कि मन ही मन तैयारी करते हुए।

कोरोना जैसे संकट ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया लेकिन भारत उस समय भी घबराया नहीं। जहाँ एक ओर अमेरिका में लोग सड़कों पर ऑक्सीजन के लिए तड़प रहे थे, वहीं भारत गाँव की पगडंडियों से लेकर महानगरों की गलियों तक जीवन के लिए लड़ रहा था और लड़ कर जीता भी। हमने टीके बनाए, दवाइयाँ बाँटी, यहाँ तक कि दूसरों की मदद भी की।

अब जब अमेरिका ने टैरिफ बढ़ाए हैं तो क्या हमें नहीं घबराना चाहिए क्योंकि यह पहला और आखिरी झटका नहीं है। हो सकता है कल ये टैरिफ 150% तक बढ़ जाएँ। हमने सीखा है रोटी तब पकती है जब आँच तेज़ हो।

भारत को अब मुँह से नहीं, हाथों से जवाब देना है।

जो चीज़ें बाहर से आती हैं, उन्हें यहीं बनाना सीखना चाहिए। देश के गाँव-गाँव में हुनर बिखरा पड़ा है। बस उसे दिशा देने की ज़रूरत है। आज भी लोहार की भट्टी में वह आग है जो मशीन को टक्कर दे सकती है, अगर उसे अवसर मिले।

अगर अमेरिका अपना दरवाज़ा बंद करता है तो अफ्रीका, रूस, दक्षिण एशिया और अरब देशों के साथ व्यापारिक रिश्ते मज़बूत करना चाहिए। बाज़ार एक नहीं, कई होते हैं पर आँख सिर्फ उसी पर टिकती है जहाँ आदत पड़ जाए।

जनता को जागरूक बनना होगा। हम हर विदेशी चीज़ के पीछे दौड़ने वाले लोग नहीं रहे। अब हम समझ चुके हैं कि 'मेड इन इंडिया' सिर्फ शब्द नहीं, एक ज़रूरत है, आत्मसम्मान की ज़रूरत।

सरकार को चाहिए कि वह छोटे कारीगरों को, खेत के किसानों को और छोटे उद्यमियों को ऐसी छत दे जहां वो धूप-बारिश में भी कुछ बना सकें जो बाहर भेजा जा सके।

सबसे बड़ा संकट बाहर से नहीं, भीतर से आता है। जब घर की दीवारें खुद कमजोर हो जाएँ तो बाहर की आंधी क्या कर लेगी लेकिन जब भीतर ही दरारें हों, एकता की नींव हिलने लगे, तब सबसे बड़ा डर वहीं से होता है।

आज देश के भीतर कुछ ऐसे स्वर सुनाई देते हैं जो विदेशी ताक़तों को न्योता देते हैं। जब एक घर का बेटा ही पड़ोसी से कहे कि 'आओ, हमारे घर में आग लगाओ' तो किसे दोष दिया जाए?

हमें सतर्क रहना है लेकिन उत्तेजित नहीं।

हमें जागरूक रहना है लेकिन आक्रामक नहीं।

क्योंकि राष्ट्र की रक्षा सिर्फ सरहद पर नहीं होती। गाँव के किसान, शहर के मजदूर, और पढ़ने वाले छात्र के भीतर भी होती है।

इस समय प्रधानमंत्री जी को कोई जवाब नहीं देना चाहिए बल्कि उन्हें वही करना चाहिए जो एक धैर्यवान पिता करता है जब कोई पड़ोसी ऊँची आवाज़ में बोलता है. वह अपना काम दोगुनी मेहनत से करता है ताकि उसका घर पहले से मज़बूत हो जाए।

बात तब होनी चाहिए जब बोलने का मतलब हो और आज नहीं तो कल वह दिन आएगा। जब भारत बोलेगा भी और दुनिया सुनेगी भी।

देश की रक्षा बंदूक से ही नहीं, चरित्र से भी होती है। नारे से नहीं, निर्माण से होती है और सबसे बढ़कर आत्मनिर्भरता से होती है। आज भारत को सिर झुकाकर बात नहीं करनी है लेकिन सिर उठाकर चलने की तैयारी ज़रूर करनी है।

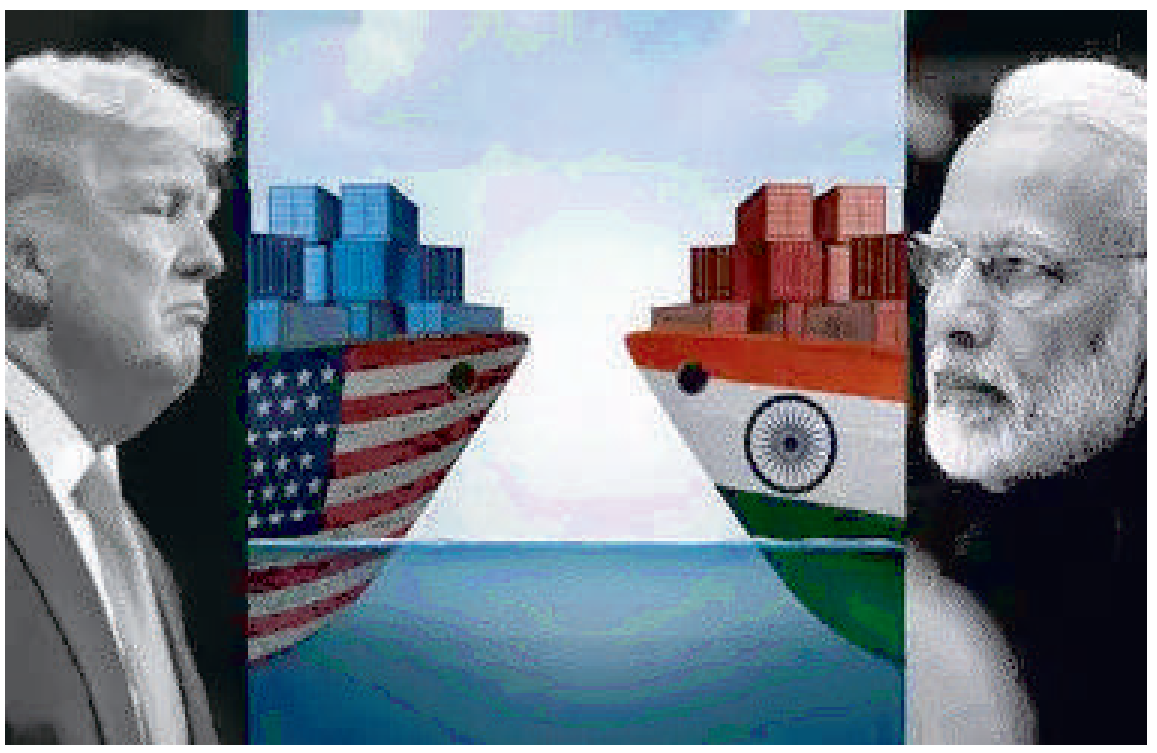

# जैव विविधता और इंसान की सांसों में ज़हर घोल रहे कबूतर

हरीश शिवनानी

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में गत सप्ताह पुलिस में एक अनूठा मामला दर्ज किया गया है जो संभवतः देश का पहला ऐसा मामला होगा। मुंबई में एक व्यक्ति के विरुद्ध कबूतरों को दाना डालने के आरोप में एफआईआर दर्ज की गई और 142 लोगों पर 68,700 रुपए का जुर्माना लगाया गया। मामला बृहतमुम्बई म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन (बीएमसी) से लेकर उच्च न्यायालय तक पहुंच कर देश भर में चर्चित हो गया। बीएमसी ने कबूतरों को मानव-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताते हुए शहर के कबूतरखानों को बंद करने और खुले चौक वाले स्थानों पर तिरपाल लगाने के आदेश दिए हैं।

इससे देश के पक्षी प्रेमियों, धार्मिक-सामाजिक संगठनों में इस बात को लेकर रोष और विरोध शुरू हो गया है। इसके साथ ही जीवविज्ञानियों और चिकित्सकों में कबूतरों को लेकर बहस छिड़ गई है कि क्या कबूतर जैसा सौम्य, शांत जैसा दिखने वाला पक्षी भी मनुष्य के लिए घातक हो सकता है ? ज़वाब है हाँ, कबूतर न केवल मानव -स्वास्थ्य बल्कि पारिस्थितिकी और जैव विविधता के लिए भी घातक साबित हो रहा है।

पिछले कुछ दशकों में कबूतरों की अनियंत्रित बढ़ती आबादी चिंता का विषय बन गई है। इससे न केवल अन्य छोटे पक्षियों की संख्या पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है बल्कि स्थानीय जैव विविधता में भी भारी अंतर आ रहा है। कबूतर कई प्रकार के वायरस का भी संवहन करते हैं जो अस्थमा व साँस की बीमारियों से प्रभावित लोगों के लिए काफी ख़तरनाक, ज़हरीले साबित हो रहे हैं। एक मादा कबूतर वर्ष भर में 48 बच्चों को जन्म दे सकती है और एक कबूतर एक वर्ष में औसतन 12 किलोग्राम बीट उत्सर्जित करता है जो अत्यधिक अम्लीय तथा ज़हरीली होती है। सूखने के बाद यह हवा में धूल के साथ मिलकर आसानी से प्रसारित होती है। भारत के हर गांव,कस्बे,शहर में अनेक जगहों पर रोजाना खूब दाना डाला जाता है। अब यह परंपरा घातक हो सकती है।

अमेरिका के जैव विज्ञानी और पक्षी विशेषज्ञ रॉबर्ट ए. पियर्स की शोध रिपोर्ट है कि कबूतरों के पंखों की फड़फड़ाहट व इनकी बीट में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवाणु और कीटाणु, कवक, खांसी, जुकाम, अस्थमा और फेफड़ों में संक्रमण सहित अनेक बीमारियों के कारण बन सकते हैं। शोध में कबूतर के बीट व पंखों में 20 से अधिक पैथोजेनिक बैक्टीरिया और फंगस पाए गए। कबूतरों की बीट लंबे समय तक जमा रहने दी जाए, तो हिस्टोप्लास्मोसिस रोग उत्पन्न कर सकती है, जो मानव श्वसन तंत्र को गम्भीर रूप से प्रभावित करता है।

कबूतर प्रत्यक्ष रूप से स्वयं ही बीमारी नहीं फैलाते बल्कि वे अन्य पक्षियों में बीमारी के बैक्टीरिया संचारित कर उनके माध्यम से भी इंसानों में प्रसारित करते हैं। मसलन, एक बीमारी है-सिटाकोसिस। यह रोग कबूतरों से विभिन्न पक्षियों की कई अलग-अलग प्रजातियों को प्रभावित कर सकता है। संचरण करते करते संक्रमित पक्षी श्वसन स्रावों और मल के माध्यम से बैक्टीरिया छोड़ते हैं। जब ये स्राव और मल सूख जाते हैं, तो धूल बनकर हवा में फैल जाती है और साँस के ज़रिए मानव श्वसन तंत्र में प्रवेश कर जाती है। यह श्वसन रोग पक्षियों द्वारा छोड़े गए क्लैमाइडिया सिटासी बैक्टीरिया से होता है। इसे 'तोता बुखार' भी कहा जाता है। पिछले 7-8 वर्षों में ऐसी बीमारियों के

मामले पांच गुना बढ़ चुके हैं। पक्षियों के अलावा कबूतरों के बाहरी परजीवियों में घुन, पिस्सू, किलनी और कीड़े शामिल हैं जो परोक्ष रूप में घातक बीमारियों के संचरण में सहायक बनते हैं। जीव-पक्षियों,खेतों के लिए भी ख़तरनाक

मानव-स्वास्थ्य के अलावा कबूतर पारिस्थितिकी और जैव विविधता के लिए ख़तरनाक साबित हो रहे हैं। कबूतर बड़ी मात्रा में बीज और अन्य खाद्य संसाधनों का उपभोग करते हैं, जो अन्य पक्षियों और छोटे जीवों के लिए भोजन की कमी का कारण बनता है। वे घोंसले बनाने की जगह के लिए भी अन्य स्थानीय पक्षियों (जैसे गौरैया, मैना आदि) के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं और छोटे पक्षियों जैसे गोरैया, तोते व अन्य पक्षियों का भोजन भी चट कर जाते हैं; जिससे इन अन्य पक्षियों की संख्या में बेहद कमी आई है, छोटी चिड़िया ( गौरेया), जो कीटों का भक्षण करके कृषि में सहायक होती थी, आज विलुप्त प्रायः है तथा कबूतरों के बचे दाने से आकर्षित होकर चूहों की संख्या में वृद्धि भी कृषि के लिए हानिकारक साबित हो रही है। जलाशयों के निकट इनकी उपस्थिति, पंखों से गंदगी, बीट निष्कासन छोटी मछलियों व अन्य जलीय जीवों के लिए भी ज़हरीली साबित होती है। उनकी अम्लीय बीट मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित लेती है। यह पौधों की वृद्धि को भी नुकसान पहुंचाती है।

यह समस्या भारत की ही नहीं, पूरे विश्व की है। ऑस्ट्रिया के वियना में कबूतरों को दाना डालने पर 36 यूरो जुर्माना लगता है। स्पेन के कई शहरों में ओविस्टोप नामक ड्रग का प्रयोग इनके दाने में मिलाकर किया जाता है जो एक प्रकार का गर्भ निरोधक है। सैन फ्रांसिस्को के अलावा लन्दन के मशहूर ट्राफलगर स्क्वायर पर कबूतरों को दाना डालने पर प्रतिबन्ध है। इटली के वेनिस शहर में सेंट मार्क स्क्वायर पर दाना बेचने वालों पर कठोर जुर्माने का प्रावधान है।ऑस्ट्रेलिया, अमरीका, न्यूजीलैंड, कनाडा, जर्मनी जैसे देशों के महानगरों में इन्हें पालना प्रतिबंधित है। भारत में भी इस प्रकार के नियमों की सख्त आवश्यकता है ताकि समय रहते घातक बीमारियों तथा अन्य पक्षियों की संख्या में आ रही गिरावट को रोककर जैव विविधता का संतुलन बनाया जा सके।

## एक दशक और एक वर्ष : संस्था अग्रमंच इन्दौर की गौरवशाली यात्रा

संस्था अग्रमंच का अग्रवाल समाज हेतु समर्पण का प्रतिफल है

की ग्यारह साल पहले 'चल अकेला' की तर्ज पर निकले आशीष गोयल, और उनकी टीम का सकारात्मक प्रभाव से आज लोग जुड़ते गए और कारवां बढ़ता गया।

शहर की अग्रणी संस्थाओं में शुमार है "संस्था अग्रमंच" जो अग्रवाल समाज की अग्रणी "संस्था अग्रमंच" बन गई है। इसकी स्थापना आज से ग्यारह वर्ष पहले आशीष गोयल (फिल्म) द्वारा अपने पिता स्वर्गीय श्री ओ.पी. गोयल (वरिष्ठ समाजसेवी, फिल्म वितरक) की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से की गई थी।

"संस्था अग्रमंच" ने अपनी स्थापना के पश्चात से यानि ग्यारह साल में कई समाजसेवी गतिविधियां, सांस्कृतिक गतिविधियां एवं धार्मिक आयोजन किये जिन्हे समाज ही नही वरन शहर भर के लोगों ने खूब सराहना ।

ऐसे तो संस्थापक आशीष गोयल (फ़िल्म) "संस्था अग्रमंच" की स्थापना के उद्देश्य में शत-प्रतिशत सफल रहे, संस्था द्वारा पूरे वर्षभर शहर में समाज सेवा की गतिविधियां आयोजित की जाती है जिसमें विशेष रूप से लॉकडाउन में समाज के लगभग 5000 परिवारों को राशन किट का वितरण, ऑक्सिजन कंस्ट्रेटर मशीन, मास्क, सेनेटाईजर का वितरण, बच्चों को शैक्षणिक सामग्री वितरण, पौधा वितरण, पौधा रोपण, बाल आश्रम में बच्चों की सेवा, वृद्धाश्रम में सेवा के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में बच्चों का रैम्प-शो, कपत्स रैम्प शो, बालीवुड कलाकारों की उपस्थिति में प्रतियोगिताऐं , राखी मेला का आयोजन, दिवाली मेला के साथ ही लॉकडाउन में बच्चों एवं बड़ों के लिये ऑनलाईन प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं धार्मिक आयोजनों में रानी सती दादी मंगल पाठ, तुलसी विवाह, फाग उत्सव, गणगौर उत्सव, गणगौर बाना, हरियाली तीज उत्सव, रक्षाबंधन उत्सव, नवरात्र में गरबा उत्सव, नवरात्र में बिजासन तक भव्य तांगा यात्रा सहित अनेक ऐसे कार्यक्रम किये है। महाराजा अग्रसेन जी का दुग्धाभिषेक , दिपावली पर अग्रसेन प्रतिमा स्थल पर 5 दिवसीय दीप प्रज्वलन एवं विद्युत सजाकर महाराजा अग्रसेन एवं कुलदेवी महालक्ष्मी जी की आरती, कन्या पूजन, गौ सेवा, अंधा आश्रम में सेवा आदि आयोजन की शुरुआत शहर में "संस्था अग्रमंच" द्वारा की गई है।

संस्था अग्रमंच पर वरिष्ठ समाज सेवी गिरीश जी अग्रवाल (भास्कर समूह),विनोद जी अग्रवाल (अग्रवाल ग्रुप),टीकम जी गर्ग, पवन जी सिंघानिया (गोयरा), विष्णु जी बिंदल (स्वास्तिक कौल) अविनाश जी (ओयस्टर), नितिन जी अग्रवाल (पार्थ) प्रवेश जी अग्रवाल, प्रेमचंद जी गोयल, महेश जी मित्तल ,शैलेश जी गर्ग, राजेश जी बंसल, जगदीश जी गोयल (बाबा श्री), कुलभूषण जी मित्तल , अरविंद जी बागड़ी, नंदकिशोर जी कंदोई, नितिन जी अग्रवाल (अपेक्स), आशीष जी अग्रवाल (बृजवासी), मनीष जी मित्तल( मोरनी), नारायण जी अग्रवाल (420), दुर्गेश जी अग्रवाल( नाथ कंस्ट्रक्शन), राजेश रामबाबू जी अग्रवाल, निर्मल रामरतन जी अग्रवाल, आदि सभी का आशीर्वाद रहा है।

"संस्था अग्रमंच" द्वारा अपनी स्थापना के ग्यारह वर्ष में हजारो छोटे-बड़े यादगार आयोजन किये जो शहर भर में चर्चा का केन्द्र रहे। "संस्था अग्रमंच" द्वारा लॉकडाउन में जो ऑनलाईन प्रतियोगिताऐं, मंगल पाठ के आयोजन किये वे उनको शहर ने सराहा, आशीष गोयल द्वारा ही अग्रसेन जयंती के अवसर पर शहर में निकलने वाली यात्रा में पहली बार महाराजा अग्रसेन जी का "एक रुपये - एक ईंट" का संदेश देती हुई आकर्षक झांकी भी निकाली जिसमें सर्जिकल स्ट्राईक के जवानों की विजय को भी दर्शाया गया था जो आकर्षण का केन्द्र रही।

प्रतिवर्ष अग्रसेन जयंती महोत्सव पर संस्था अग्रमंच द्वारा अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का वहन करते हुए समाज के प्रतिभावान बच्चों एवं युवाओं को सदा ही मंच प्रदान किया है ताकि उनकी प्रतिभा उभर कर आए और वह आगे बढ़े। इसी कड़ी में महाराजा अग्रसेन के 5149 जयंती महोत्सव में 7 सितंबर 2025 रविवार को संस्था द्वारा रविंद्र नाटयग्रह में कार्यक्रम *एक पहल सनातन की ओर* का आयोजन किया जा रहा है जिसमें बच्चों के लिए नन्हे सनातनी एवं विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा आप सभी उक्त कार्यक्रम में सादर आमंत्रित है ।

*प्रेषक लेखक - संस्था अग्रमंच इन्दौर संस्थापक आशीष गोयल इन्दौर*

## दर्द में क्या बंदा रोए भी नहीं !

सुशील कुमार 'नवीन'

हरियाणवीं में एक प्रसिद्ध कहावत है 'जिसकै लागै, वोह-ए जाणै...अर्थ है कि चोट का वास्तविक दर्द उसी को होता है,जिसे चोट लगी हो। दूसरों के पास तो सांत्वना के मलहम के अतिरिक्त कुछ नहीं होता है। उपदेशक बन दूसरों को दर्द सहन करने की हिम्मत बंधाना बड़ा सहज है और वही चोट का दर्द खुद पर बन आए तो सांत्वना का मलहम दर्द को और बढ़ा जाता है। इसलिए दर्द का भाव जितना निकले, उसे निकलने देना चाहिए। दर्द को नासूर नहीं बनने देना चाहिए।

कांग्रेस के युवराज भी लगभग आजकल दर्द की ऐसी ही स्थिति से गुजर रहे हैं। बंदे ने मेहनत करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी हुई है। पर परिणाम वही ढाक के तीन पात। मई 2014 से शुरू हुआ वनवास लगातार खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा। हर रात के बाद नई सुबह वाला मुहावरा भी रोजाना इस रात की सुबह नहीं कहकर और चिढ़ाकर निकल जाता है। फिर भी राजनीति की हांडी कब शिखर चढ़ जाए, उम्मीद तो बनाकर रखनी ही पड़ेगी। इसी संकल्प को शिरोधार्य कर बंदा सिर पर अमृत का लेप लगाकर सत्ता की चौखट को उखाड़ने का प्रयास जारी रखे हुए है। छह माह की कड़ी मशक्कत के बाद बंदे ने वोट की चोरी नामक नये जिन्न का अवतरण किया। कुछ चर्चा-परिचर्चा ,राजनीतिक गहमागहमी बनती। महीने-दो महीने राजनैतिक गलियारे में हंसी-ठठ्ठे चलते। देश की जनता का बातों का चटखारा लगाने का अवसर मिलता,इससे पहले ही चुनाव आयोग बाबा लट्ठ उठाकर फिर बैठ गया। कह दिया या तो शपथ पत्र दो, या फिर देश की जनता से माफी मांगो। ये अच्छी बात नहीं है। इसकी कड़े शब्दों में निंदा जरूरी है। निंदा क्या ? चुनाव आयोग का बायकॉट कर देने का सार्वभौमिक फैसला अब तक हो जाना चाहिए था। क्या सुप्त शक्तियों के कुंभकर्णी निद्रा जागरण का समय नहीं हो पाया है ?

मेरा तो यही मानना है कि चुनाव आयोग को ऐसा नहीं करना चाहिए। इतनी शीघ्रता से तो कतई नहीं। ये हिंदुस्तान है। यहां हर किसी को भावों को प्रकट करने की आजादी है। आप इसे स्वीकारो चाहे न स्वीकारो।

आप बंदे की मेहनत देखिए। कागज की एक फाइल को सर्च करने में दिमाग झन्ना जाता है और बंदे ने न जाने कितनी फाइलें चैक की होंगी। खुद उनके अनुसार कागजों की बड़ी फाइल थी। एक फोटो को लाखों

फोटो के सामने कंपेयर किया है। हर एक नाम को चैक किया है। एक सीट की सच्चाई निकालने के लिए छह महीने लगे। ग्राउंड लेवल की मेहनत को इस तरह नकारा नहीं जा सकता।

संज्ञा से सर्वनाम तक, उपमेय से उपमान तक, मान से अपमान तक, अर्श से फर्श तक, सुलभ से दुर्लभ तक, आह्वान से विसर्जन तक, भूगोल से खगोल तक सबको इस बात का पूरा दर्द है। दर्द हो भी क्यों न हो 2014 के बाद क्या आयोग बाबा ने बंदे को ऐसा कोई मौका दिया है कि जिससे वो खुलकर हंस सके, जश्न मना सके। क्या बंदे का मन नहीं करता कि वो भी अपने घर के बाहर लड़ी वाले पटाखे छोड़े, गुलाल उड़ाए, जलेबी बंटवाए। दूर तलक तक महक बिखेरता सौ किलो के हार में सौ लोगों के साथ फोटो खिंचवाए।

और सुनें ! सत्ता का दर्द और सभी दर्द से भारी होता है। अभाव में नौजवान को बुजुर्ग बनते देर नहीं लगती। कई तो इसी दर्द को लिए समय से पहले सटक जाते हैं। जिनका भाग्योदय हो जाता है वो बुजुर्ग नौजवान हो जाते हैं। बुढ़ापा सीधे पच्चीस-तीस साल आगे सरक जाता है। और आप चाहते हैं कि बंदा दर्द में भी चुपचाप बैठा रहे, न रोए न चिल्लाए। ऐसा कदापि नहीं हो सकता। इसलिए भावों को लगातार बहने दें। और यदि आपको डर है कि भावों की गंगा आपको लपेटे में न लेले तो मंत्र का जाप करें कि ...है तो मुमकिन है। इस मंत्र के सुबह शाम जाप करने से कोई भी विपरीत शक्ति प्रभाव नहीं दिखा आएगी। सुभाषितावलि का यह श्लोक और भी संभल देगा -

उदेति सविता ताम्रः, ताम्र एवास्तमेति च ।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च, महतामेकरूपता ।।

(सूर्य लाल वर्ण का ही उदित होता है और लाल वर्ण का ही अस्त होता है। सम्पत्ति और विपत्ति इन दोनों परिस्थितियों में महान-पुरुष एक जैसे रहते हैं।)

## स्वास्थ्य कार्यकर्ता परीक्षा सर्वाधिक कुपोषित जिला पश्चिम सिंहभूम में कल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

**चाईबासा,** भारत का सर्वाधिक कुपोषित जिलों में से एक तथा राज्य में अब्बल पश्चिमी सिंहभूम में स्वास्थ विभाग के अंतर्गत बहुउद्देशीय कार्य कर्ता परीक्षा का आयोजन सह वित्त पोषण अब डी एम एफ टी फंड से होने जा रहा है । इस बाबत पश्चिमी सिंहभूम जिला दंडाधिकारी -सह- उपायुक्त चंदन कुमार के निर्देशन में जिला अंतर्गत स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने हेतु जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट( DMFT ) निधि से बहुद्देशीय कार्यकर्ता( पुरुष ) के पद पर भर्ती हेतु आवेदकों से प्राप्त ऑनलाईन आवेदन का स्क्रूटनी कर मेधा क्रमांक अनुसार शॉर्टलिस्ट तैयार किया गया है, जो जिला के आधिकारिक वेवसाईट www.chaibasa.nic.in पर अपलोड भी है। संबंधित शॉर्टलिस्टेड नामित आवेदकों को प्रशासन ने सूचना दी है कि, परीक्षा

की तिथि 11 अगस्त 2025 को अपराह्न 03:00 बजे से टाटा कॉलेज, चाईबासा में होगी ।

अभ्यार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश भी दी गयी है । जिसमें शॉर्ट लिस्ट जिला के आधिकारिक वेवसाईट www.chaibasa.nic.in पर अभ्यर्थी अपना नाम एवं विवरण ध्यानपूर्वक देखेंगे ।परीक्षा निर्धारित तिथि 11.08.2025 को अपराह्न 03:00 बजे से निर्धारित परीक्षा केन्द्र टाटा कॉलेज, चाईबासा में आयोजित होगी। सभी अभ्यर्थियों को आवेदन संख्या तथा वैध पहचान पत्र ( आधार कार्ड/वोटर आईडी/पैन कार्ड/ड्राईविंग लाईसेंस आदि ) की मूल प्रति ( Original ) तथा एक पासपोर्ट साईज फोटो लाना अनिवार्य होगा। प्रवेश पत्र ( Admit Card ) परीक्षा तिथि को परीक्षा केन्द्र पर प्राप्त किया जा सकेगा।

किसी भी अभ्यर्थी के परीक्षा केन्द्र पर समय से पूर्व रिर्पोटिंग किए बिना प्रवेश पत्र नहीं दिया जायेगा ।सभी अभ्यर्थी परीक्षा प्रारंभ होने के समय से कम से कम दो घंटे पूर्व परीक्षा केन्द्र पर अनिवार्य रूप से उपस्थित होंगे तथा निर्धारित स्थान पर एक घंटा पूर्व बैठना सुनिश्चित करेंगे। अपराह्न 02:30 बजे के बाद अभ्यर्थी को परीक्षा केन्द्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा एवं इनके आवेदन पर कोई विचार नहीं किया जायेगा ।अभ्यर्थी परीक्षा कक्ष में बैग/मोबाईल/केलकुलेटर/स्मार्ट घड़ी/कैमरा/टैब/लैपटॉप आदि कोई भी उपकरण लेकर प्रवेश नहीं करेंगे ।

## बलात्कार के प्रयास के मामले की पूछताछ करने गए वार्ड पार्षद के पति के साथ पुलिस थाने में दुर्व्यवहार

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

**भुवनेश्वरः** मुख्यमंत्री से लेकर डीजीपी तक, सभी वरिष्ठ अधिकारी थाने जाने वाले सभी लोगों को अच्छा व्यवहार करने की सलाह दे रहे हैं।

लेकिन बालीपटना के थाना प्रभारी सूर्यांशु शेखर पाढ़ी को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।

आरोप है कि बलात्कार के प्रयास के एक मामले की जाँच करने गए एक वार्ड पार्षद के पति के साथ आईआईसी ने बेरहमी से दुर्व्यवहार किया और उन्हें कक्ष से बाहर निकाल दिया।

थाने में दुर्व्यवहार का शिकार हुए वार्ड पार्षद के पति को डीसीपी के पास ले जाया गया है।

इस घटना को लेकर बालीपटना इलाके में तीखी प्रतिक्रिया हुई है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि यह थाना बिचौलियों और माफियाओं का अड्डा है। पिछले महीने की 27 तारीख को धनहारा इलाके की एक विकलांग युवती कुशाभद्रा नदी के किनारे बकरियाँ चरा रही थी। एक नेत्रहीन युवक ने उसे अकेला पाकर उसके साथ बलात्कार का प्रयास किया। इस संबंध में बालीपटना थाने में शिकायत दर्ज कराई गई। लेकिन पुलिस ने केवल मामला दर्ज कर हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। मामले की जांच आगे न बढ़ने पर 30 तारीख की शाम को पीड़िता की मां, वार्डन और रिश्तेदार थाने पहुंचे। वार्डन के पति समीर चौधरी भी उनके साथ गए। जांच की प्रभारी महिला एसआई की मौजूदगी में आईआईसी श्री पाढ़ी

ने अपने चैंबर में मामले पर चर्चा की, लेकिन अचानक आईआईसी श्री पाढ़ी ने गुस्से में वार्डन के पति समीर को गालियां दीं और चैंबर छोड़ने की धमकी दी। आईआईसी द्वारा दुर्व्यवहार की ऐसी घटना सामने आने के बाद स्थानीय लोग भड़क गए।

स्थानीय लोगों का कहना है कि यह अकेली घटना नहीं है। थाने में दुर्व्यवहार का शिकार हुए वार्ड सदस्य के पति और पीड़िता की मां और दादा ने भी मीडिया में अपनी बात रखी है। देखना यह है कि सरकार कब कार्रवाई करती है।

## पूर्वी सिंहभूम जिले के सरकारी स्कूलों की छात्राएं करेंगी अंतरिक्ष अनुसंधान श्रीहरि कोटा का शैक्षणिक भ्रमण

रांची से फ्लाइट पकड़कर हुई रवाना, उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने दी शुभकामनाएं

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

**सरायकेला।** हेमंत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना में एक नया अध्याय कल जूडने जा रहा है, जब पूर्वी सिंहभूम के सरकारी स्कूलों के बच्चों के शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत 28 छात्राएं 10-11 अगस्त को रांची से फ्लाइट पकड़कर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC SHAR), श्रीहरिकोटा में पहुंचेगी । इस दल में पीएम श्री कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, अश्राम आवासीय विद्यालय, झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय, सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस एवं अन्य सरकारी विद्यालयों की छात्राएं शामिल हैं। चयनित छात्राओं की सूची पूर्व में इसरो प्रशासन को प्रेषित की जा चुकी है। छात्राओं के दल के साथ कार्यपालक दण्डाधिकारी मृत्युंजय कुमार एवं अन्य इंस्ट्रक्टर की एक टीम भेजी गई है।

समाहरणालय परिसर से छात्राओं को रवाना करते हुए उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने सभी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह एक्सपोज़र विजिट विशेष रूप से ग्रामीण एवं वंचित समुदायों से आने वाली छात्राओं के लिए आयोजित की जा रही है, जिससे वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए अवसरों और संभावनाओं से रूबरू हो सकें। इस भ्रमण के दौरान छात्राएं इसरो के विभिन्न तकनीकी एवं अनुसंधान संबंधी कार्यों की जानकारी प्राप्त करेंगी, जिससे उन्हें अंतरिक्ष विज्ञान, रॉकेट प्रक्षेपण एवं उपग्रह प्रौद्योगिकी का प्रत्यक्ष अनुभव मिलेगा।

उपायुक्त ने उम्मीद जताई कि यह यात्रा छात्राओं के लिए जीवनभर का यादगार अनुभव होगी और उनके भविष्य निर्माण में प्रेरणादायक भूमिका निभाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023